THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

संघी मो... भार...
बोगूवाला.

श्री वर्द्धमानाय नमः ॥

॥ श्री आवश्यक सूत्र ॥

॥ प्रथम भाग ॥

(श्रावक प्रतिक्रमण)

हिंदी पदार्थ और भावार्थ कर्त्ता,
जैन मुनिश्री उपाध्याय आत्मारामजी (पंजावी)

प्रकाशक,
श्रीमान् लाला मुन्शीराम जिलेदार (कयनाल).
मिष्टर कशोरीलाल गार बी.एस.सी. (गलासगो)
स्टेट इंजनीयर, रयास्त फ़रीदकोट (पंजाव).

श्री महावीरनिर्वाणाब्द २४४१ ॥ ई स. १९१५ ॥

प्रथमावृत्ति. प्रत १०००.

अहमदाबाद

यह पुस्तक टकशालमें धी युनियन प्रिन्टींग प्रेस कंपनी लीमीटेडमें
मोतीलाल सामळदासने छापा.

FORE WORD.

This treatise has been very kindly written by Upadhyaya Shree Atma Ramji, to meet the long-felt want of the Jain community for having a well-compiled Hindi *Avashyaka Sutra* (Jain prayer book), at the request of S. S. Jain Sabha, Punjab. The contents will assure the Jain public of its superiority in true and idiomatic Hindi translation to such other publications. The reader will admire the true sense of the well considered commentary where ever required. The S. S. Jain Sabha Punjab, some time ago, resolved to get it published for the use of the Jain public and sent the manuscript to Ajmer for consultation. It was by that time that Lala Munshi Ram Zilladar and Mr. Kishori Lal Garr B. Sc. State Engineer, Faridkot, undertook to get it published at their own expenses out of deep love for Jain religion. The S. S. Jain Sabha Punjab is very much indebted to the author, Upadhyaya Shree Atma Ramji as well as to the publishers. This publication will do immense good to the community as regards its daily prayers (नित्यकर्म) and I am sure that the reader will be benefitted by its perusal. The book is to some extent new in its style etc, and is worth reading as well as committing to memory for those who hold a religious bent of mind. S. S. Jain Sabha is also thankful to Lala Munshi Lal M. A., Government Pensioner, Lahore, for the labour of love he took in rendering this book into pure Hindi.

KASUR.
Dist. Lahore

PERMANAND B. A.
Pleader, Chief Court,—**Punjab.**

Opinion of Shriman Lala Munshi Lal Ji, M. A.

Government Pensioner, Lahore

I have gone through the Hindi of the book named Avashyaka Sutra, written by Jain Muni Shri Upadhyaya Atma Ram Ji. The book is, indeed, a very useful one for the Sadhus and the Shrawakas. It lays down rules for the performance of daily worship and puts stress on the fact that our contemplation of the Supreme soul should be pure and uncontaminated and that we should lead a life of virtue and truth and be compassionate to all creatures. Such books are really worthy of being read and patronised by the general public.

MUNSHI LAL M. A.,
Government Pensioner,
LAHORE

अर्हम्.

लेखककी प्रस्तावना ॥

प्रिय महोदयवर ! आत्मोन्नतिके लिये नित्य क्रिया करनी आवश्यकीय है—क्योंकि इसके द्वारा जीव अपनी उच्च पदवीके योग्य हो जाता है;—सो प्राणी मात्रके हितके लिये श्री अर्हन् देवने धर्मक्रिया वर्णन की हैं, जिनके धारण करनेसे इस लोक और परलोकमें जीव सुदर फलको अनुभव करता है। अपितु अंगसूत्र व उपांग सूत्र, च्छेद सूत्र, मूल सूत्र, कालिक सूत्र, उत्कालिक सूत्र इत्यादि सूत्रोंसे व्यतिरिक्त श्री भगवान् वर्द्धमान स्वामीने आवश्यक क्रियाओंको प्रतिपादन करनेवाला आवश्यक सूत्र रचा है जिसमें साधु साध्वी श्रावक श्राविकाओंके नित्य कर्मका सुदर प्रकारसे वर्णन किया गया है, जिसके षट् अध्याय है—जैसेकि—सामायिक १, चतुर्विंशति स्तव २, वदना ३, प्रतिक्रमण ४, कायोत्सर्ग ५, प्रत्याख्यान ६, यही षट् आवश्यक अवश्य करणीय है जिनका फल श्री उत्तराध्ययन सूत्रके २९ वें अध्यायमें निम्न प्रकारसे लिखा है—

तथा च पाठः ॥

सामाइएणं भंते जीवे किं जणयइ सामाइएणं सावज्ज जोगं विरइं जणयइ ॥ उ० सू० अ० २९ सू० ८ ॥

अर्थ—हे भगवन् ! सामायिक करनेसे जीव क्या फल उत्पन्न करता है ? हे गौतम ! सामायिकके करनेसे जीव सावद्य (पापके) योगोंकी निवृत्ति करता है, क्योंकि समतारूप (सामायिक)के करनेसे पापके योगोंकी निवृत्ति होती है। फिर आत्मा सम्वरमें प्रवेश करके पापकर्मोंके बधनसे छूट जाता है ॥ यह प्रथम आवश्यकका फल वर्णन किया ॥

अथ द्वितीय आवश्यक विषय ॥

चउवीसत्थएणं भंते जीवे किं जणयइ। चउवीसत्थएणं दंसण विसोहिं जणयइ ॥ उ० सू० अ० २९ सू० ९॥

अर्थ—हे भगवन्! चतुर्विंशति स्तव (लोगस्स उज्जोयगरे) के पठन करनेसे जीव क्या फल उत्पन्न करता है? हे गौतम! चतुर्विंशति स्तवका पाठ करनेसे जीव सम्यक्त्वकी विशुद्धि करता है क्योंकि—चतुर्विंशति तीर्थंकरोकी स्तुति करनेसे जीव शुद्ध श्रद्धायुक्त हो जाता है॥

अथ वंदना आवश्यक विषय॥

वंदणएणं भंत्ते जीवे किं जणयइ वंदणएणं नीया गोयं कम्मं खवेइ उच्चा गोयं कम्मं णिबंधइ सोहग्गं चणं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ दाहिण भावं चणं जणयइ॥ उ० सू० अ० २९ सू० १०॥

अर्थ—वंदना करनेसे हे भगवन्! जीवको क्या लाभ होता है? वंदना करनेसे हे गौतम! आत्मा ऐसे कर्मोंका नाश कर देता है जिनसे नीच घरानेमें जन्म हो, और ऐसे कर्मोंको उपार्जन करता है जिनसे ऊच्च घरानेमें जन्म हो, फिर लोग उससे प्रीति करने लगते है और इसका परिणाम यह होता है कि वह अधिकारी वा माननीय पुरुष समझा जाता है, और सब लोग उसकी भलाई चाहते हैं तथा उसके अनुकूल हो जाते है॥

अथ *प्रतिक्रमण आवश्यक विषय॥

पडिक्कमणेणं भंत्ते जीवे किं जणयइ पडिक्कम-

---

* स्थानांग सूत्रके पंचम स्थानके द्वितीय उद्देशमें आस्त्रवके पंच द्वार लिखे हैं जैसेकि—मिथ्यात्व १, अविरति २, प्रमाद ३, कषाय ४, योग ५। और पंच सम्वरके द्वार हैं जैसेकि—सम्यक्त्व १, विरति २, अप्रमाद ३, अकषाय ४, और अयोग ५॥ इनको धारण करना और पहिले पांचोंको दूर करना इसका नाम भी प्रतिक्रमण है। तथा ठाणांगजीके पंचम स्थानमें पांच प्रकारसे प्रतिक्रमण और भी वर्णन किया है॥ यथा—पंचविहे पडिक्कमणे प० तं० आसवदार पडिक्कमणे १, मिच्छत्त पडिक्कमणे २, कसाय पडिक्कमणे ३, जोग पडिक्कमणे ४, भाव पडिक्कमणे ५, तथा षष्ठम स्थाने, छव्विहे पडिक्कमणे पं० तं० उच्चार पडिक्कमणे १, पासवण पडिक्कमणे २, इत्तरिते ३, आवकहिते ४, जंकिं-

णेणं वयच्छिद्दाइं पिहेइ पिहिय वयच्छिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबल चरित्ते अट्ठसु पवयण मायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ ॥

उ० सू० अ० २९ सू० ११ ॥

अर्थ—प्रतिक्रमणके करनेसे हे भगवन्! जीव क्या फल उपार्जन करता है? प्रतिक्रमणके करनेसे हे गौतम! जीव व्रतोंके छिद्रोंको ढांप देता है। फिर वह जीव निरास्रवी हो जाता है और उसका चारित्र भी निर्दोष हो जाता है॥ वह अष्ट प्रवचन दया मातासे भी युक्त हो जाता है अर्थात् ५ समिति ३ गुप्ति करके युक्त हो जाता है, और संयमके योगोंमें तत्पर हो जाता है, फिर संयमको बड़ी सावधानीसे पालन करता है॥

अथ कायोत्सर्ग आवश्यक विषय ॥

काउसग्गेणं भंत्ते जीवे किं जणयइ काउसग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ विसुद्ध पायच्छित्तेय जीवे निव्वुयहियए ओहरिय भरुव्व भारवहे पसत्थज्झाणो वगए सुहं सुहेणं विहरइ ॥

उ० सू० अ० २९ सू० १२ ॥

चिमिच्छा ५, सोमणतित्ते ६, अर्थात् आस्रवद्वारोंसे निवृत्ति १, मिथ्यात्व और कषाय योग अशुभ भावोंसे भी निवृत्ति करना उसका नाम भी प्रतिक्रमण है। तथा षट् प्रकारसे भी प्रतिक्रमण वर्णन किया गया है जैसेकि–विष्टा मूत्रके पश्चात् ईरिया वहियादिको पढकर लोगस्सका ध्यान किया जाता है वह भी प्रतिक्रमण है और जो देवसी राईसीको प्रतिक्रमण किया जाता है वह भी प्रतिक्रमण है यावत् जीव पर्य्यन्त महाव्रतरूप प्रतिक्रमण वा अनशन व्रतको धारण करना वह भी पापसे निवृत्ति रूप प्रतिक्रमण है। मिथ्याचरणसे पीछे हटना वह भी प्रतिक्रमण है और जो शयन करनेके पीछे ध्यानादिक क्रिया की जाती है उसका नाम भी प्रतिक्रमण है॥

अर्थ—कायोत्सर्ग (ध्यान) के करनेसे हे भगवन्! जीवको क्या फल होता है? हे गौतम! कायोत्सर्गके करनेसे भूतकाल और वर्तमान कालके अतिचारोंकी §शुद्धि होती है, फिर अतिचारोंकी शुद्धि होनेपर जीव स्वस्थ चित्तवाला हो जाता है, जैसेकि—भारवाहक ‡भारको उतारकर स्वस्थ चित्त हो जाता है, अतः फिर वह सुदर ध्यानयुक्त होकर सुखपूर्वक विचरता है ॥

अथ प्रत्याख्यान आवश्यक विषय ॥

पच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ पच्चक्खाणेणं आसव दाराइं निरुंभइ पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ इच्छानिरोहंगएयणं जीवे सव्व दव्वेसु विणीय तण्हे सीयलभूए विहरइ ॥ उ० सू० अ० २९ सू० १३॥

अर्थ—प्रत्याख्यान करनेसे हे भगवन्! जीवको क्या लाभ होता है? हे गौतम! प्रत्याख्यानके करनेसे जीव आस्रवके मार्गोंको ढाप देता है और इच्छाका निरोध कर देता है। फिर जब इच्छाका निरोध हो गया तब सर्व द्रव्योंसे उस जीवकी निवृत्ति हो जाती है अपितु निवृत्ति होनेपर फिर वह जीव शान्तिरूप होकर विचरता है ॥

सो यह † षट् आवश्यक अवश्य करणीय है क्योंकि इनके करनेसे आत्मा अपने निज स्वभावमे प्रवेश करने लग जाता है। पुनः श्री अनुयोग द्वारजी सूत्रमें आवश्यक सूत्रके चार निक्षेप किए है जैसेकि—नामावश्यक १

---

§ योगाभ्यास भी इसका एक अंश है ॥

‡ सूत्रकर्ताने सर्व जीवोंको सुगम रूप उदाहरणोंसे प्रतिबोधित किया है जैसेकि—इस स्थानपर भारवाहकका उदाहरण ॥

† जो प्रतिक्रमणमें लघुव्रत गुर्जर भाषामें लिखे गये हैं वे इस देशके प्रथानुसार हैं किन्तु जो पंद्रह व्रतोंके अतिचार हैं उनसे भी ध्यान किया जा सक्ता है ॥

स्थापनावश्यक २ द्रव्यावश्यक ३ भावावश्यक ४ । सो भावावश्यक उभय (दोनों) काल अवश्य ही करणीय है किन्तु शोकसे लिखना पड़ता है कि अनेक विपत्तियोंके कारण सूत्रज्ञान अल्प हो गया, फिर मतभिन्नताके कारण बहुधा आवश्यक सूत्रमें अनेक गच्छधारियोंने अपनी २ आम्नायानुकूल अनेक प्रकारके पाठ संग्रह कर दिए, किसीने संस्कृतमें, किसीने प्राकृतमें और किसीने गुर्जर भाषामें। फल इसका यह हुआ कि—गच्छ २ का आवश्यक सूत्र बन गया, और कतिपय जनोंने तो इसकी वृद्धि करनेका ही ध्यान रक्खा कि—आवश्यक सूत्रकी श्लोक सख्या अतीव हो। सो इसका परिणाम भी यही निकला कि लोगोंने दोनों समय आवश्यक सूत्र (पडिक्कमणा) करना ही छोड़ दिया, क्योंकि—यह स्वाभाविक ही बात है कि नित्यकर्मका पाठ अल्प हुआ करता है जिसको बालसे वृद्ध पर्य्यन्त सुखपूर्वक पठन कर सके। इस लिए यह आवश्यक सूत्र दोनों समय सुखपूर्वक पठन हो सक्ता है और इसके पठन करनेसे अपने करणीय कार्योंका पूर्ण बोध हो जाता है। और इसको करते समय चार वस्तुओंका ध्यान अवश्य ही कर लेना चाहिए, जैसेकि—द्रव्य शुद्ध १, जो आवश्यक करनेके साधन योग्य हैं जैसे कि—आसन, रजोहरण, रजोहरणी, मुखपत्ति, अन्य वस्त्रादि शुद्ध होने चाहिए ॥ क्षेत्र शुद्ध २, स्थान भी शुद्ध होना चाहिये जैसेकि—जिस स्थानमें असमाधि होवे वहांपर आवश्यक भी शुद्ध नहीं हो सकेगा, इस लिए शुद्ध स्थानकी भी आवश्यकता है॥ काल शुद्ध ३, जो आवश्यक करनेका समय है वह उल्लंघन न करना चाहिये॥ भावशुद्ध ४, अन्तःकरणसे पडिक्कमणा करना चाहिए जैसे कि श्री अनुयोग द्वारजी सूत्रमें भावावश्यक विषय निम्न प्रकारसे लिखा है—

तथा च पाठः ॥

सेकिंतं लोगोत्तरिअं भावावस्सयं जणं समणे वा समणी वा सावयो वा साविआ वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवस्सिते तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तद-

प्पिअकरणे तम्भावणा भाविते अणत्थ कथ्थइ मण अकुव्वमाणे उवउत्ते जिण वयण धम्माणु रागरत्ते तम्मण्णे उभयोकाले आवस्सयं करेति सेत्तं लोगोत्त-रियं भावावस्सयं सेत्तं नोआगमतो भावावस्सयं सेत्तं भावावस्सयं। इमे एगट्ठिआ णाणा घोसा णाणा वंज णाणा मधेज्ञा भवंति तंजहा आवस्सयं अवस्स क-रणियं धुव निग्गहो विसोहीय अज्झयणं छक्कवग्गो नाओ आराहणमग्गो ॥ १ ॥ समणेणं सावएणय अ-वस्स कायव्वं हवति जम्हा अंतो अहो निसस्सय तम्हा आवस्सय नाम ॥ सेत्तं आवस्सयं ॥

अथ—शिष्यने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! लोकोत्तर भावावश्यक कौनसा है? तब गुरुने उत्तर दिया कि भो शिष्य! जो साधु, साध्वी, श्रा-वक, श्राविका, एकाग्र चित्तसे एकाग्र मनसे एकाग्र अध्यवसायोंसे अर्थका उपयोग करते हुए, और आवश्यकमे पूर्ण प्रीति रखते हुए उसीकी पूर्ण भावना करते हुए अन्य कही भी मनको न करते हुए उपयोगपूर्वक जिन वचन और धर्ममें रंगे हुए जो दोनों समय आवश्यक करते है उसे लोगो-त्तर नोआगम भावावश्यक कहते है ॥ और आवश्यक सूत्रका एक ही अर्थ है किन्तु नाना प्रकारके उदात्तादि घोष है और नाना प्रकारके ही इसके व्यंजन है और यह अवश्य करणीय है, ध्रुव है, निग्रह करनेवाला है, न्याय पूर्वक है, आराधक होनेका मार्ग है, और रात्रिदिवसके अतरमें दोनों काल साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओंको अवश्य करणीय है, इस लिये ही इसका नाम आवश्यक है। सो इस आवश्यक सूत्रके दो भाग है। द्वितीय भागमें साधु साध्वीके षट् आवश्यक और इस प्रथम भागमें श्रावक श्राविकाओंके अवश्य करणीय षट् अध्याय लिखे गए हैं। और श्री श्री श्री पूज्य १००८ श्री अमरसिंहजी महाराजकी आम्नायानुसार है, क्योंकि—श्री श्री श्री आ-

प्रकार कहने लगे—कौन है मृत्युकी इच्छा करनेवाला और हीन लक्षणोंका धनी, जिसने मुझ शयन किये हुएके चरणकमलोंका स्पर्श किया है! इस प्रकार शैलक ऋषिके भयानक वचन सुनकर पंथकजी भयको प्राप्त हुए और विनयपूर्वक दोनों हाथ जोड़कर निम्न प्रकारसे विज्ञप्ति करने लगे कि—हे भगवन्! मैं पंथक नामक साधु प्रतिक्रमण कर रहा हूं, मैंने देवसि सम्बन्धि पडिक्कमणा कर लिया है और चातुर्मासी सम्बन्धि प्रतिक्रमणकी क्षमावना करके आपको वंदना कर रहा हूं, इसी लिए ही मैंने आपके चरणकमलोंका स्पर्श किया है, अतः हे भगवन्! मेरे अपराधको क्षमा कीजिये, आप क्षमा करने योग्य हैं, मैं फिर ऐसा अपराध नहीं करूंगा ॥ इस प्रकारके शीतल वचनों करके शैलक ऋषिजीको शान्त किया ॥ तात्पर्य यह है कि नित्यम् प्रति प्रतिक्रमण करनेकी प्रथा न होने पर भी दो प्रतिक्रमण किए जाते थे। जब प्रतिक्रमण अवश्य करनेकी प्रथा है तब तो चातुर्मासी और सम्वत्सरीको दो प्रतिक्रमण अवश्य ही करने सूत्रोंसे सिद्ध है तथा यही आम्नाय श्री पूज्य* अमरसिंहजी महाराजकी है, और पंचम आवश्यक अर्थात् पक्षीको १२ लोगस्स उज्जोयगरेका ध्यान, चातुर्मासीको २०, और सम्वत्सरीको ४० लोगस्सका ध्यान करना, क्योंकि यह कथन पंच व्यवहारानुकूल है और चातुर्मासी वा सम्वत्सरीको प्रथम देवसी प्रतिक्रमण फिर चातुर्मासी वा सम्वत्सरी प्रतिक्रमण करने चाहियें ॥

इस लिए ही मैंने श्रीश्रीश्री १००८ परमपूज्य आचार्यवर्य श्री सोहनलालजी महाराजकी आज्ञासे तथा श्रीश्रीश्री १००८ गणावच्छेदक वा स्थविर पदविभूषित श्री स्वामी गणपतिरायजी महाराजकी आज्ञासे षड़ावश्यकका हिंदी भाषायुक्त अर्थ लिखा है। आशा है भव्य जन विधिपूर्वक आवश्यक सूत्रके पठनपाठनसे अपने अमूल्य मानुष जन्मको सफल करेंगे ॥

उपाध्याय जैन मुनि आत्माराम ॥

---

* श्री पूज्य अमरसिंहजी महाराजका नाम वर्तमानकालमें विख्यात होनेसे ही पुनः २ लिखा गया है ॥

आवश्यक करनेकी विधि ॥

सुंदर स्थानमें पवित्रतापूर्वक एक आसनपर स्थिति करके श्री सीमंदर स्वामीजीको वंदना करके या वर्तमानमें अपने गुरुओंको वंदना नमस्कार, तिक्खुत्तोके पाठसे तीन वार करके फिर, चौवीसत्था करनेकी आज्ञा लेकर निम्न लिखित पाठ पढे ॥ अरिहंतो महदेवो, फिर, इच्छाकारेण, फिर, तस्सोत्तरीका पाठ पढके एक लोगस्सका ध्यान करे, फिर नमो अरिहंताण कहके ध्यान पारे, फिर एक चउविसत्था उदात्त स्वरसे पढ़े, फिर वामा जानु ऊंचा करके दाहिण जानु भूमिपर रखकर दो नमोत्थुण के पाठ पढ़े—प्रथम सिद्धोंका द्वितीय अरिहंतोंका, फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वंदना करके प्रतिक्रमण करनेकी आज्ञा लेकर प्रथम—आवस्सही इच्छाकारेण, यह पाठ पढे, फिर नवकार मंत्र, फिर, करेमि भत्ते सामाइय, फिर, इच्छामि ठामि का पाठ, फिर, तस्सोत्तरी करनेका पाठ, फिर, ध्यान करे। ध्यानमें ९९ वे अतिचार ओर इच्छामि आलोइय पर्यन्त ध्यान करे। ध्यानमें—जो मे देवसि (राईसि) अइयारकउ चिंतवुं—ऐसे कहे, फिर नमो अरिहंताण कहके ध्यान पूर्ण करे। फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वदना करके लोगस्स उज्जोयगरेका पाठ पढ़े। फिर वदना करके इच्छामि खमासमणोका पाठ दो वार पढ़े। फिर तिक्खुतोके पाठसे चतुर्थ आवश्यककी आज्ञा लेकर वही सर्व अतिचार §पढे। फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वदना करके श्रावक सूत्र पठन करे। फिर दो वार इच्छामि खमासमणोका पाठ पढके यथाशक्ति पंचपदोंको वंदना नमस्कार करके फिर अनंत चौवीसीका पाठ पढ़े। फिर सर्व जीवोंको खमावना करके आवस्सही इच्छाकारेण, नमोकार मत्र, करेमि भत्तेका पाठ, इच्छामि ठामि काउस्सग्ग, फिर तस्सोत्तरीका पाठ पठन करके कायोत्सर्ग

---

§ किन्तु सर्व पाठोंके अंतमें जो मे देवसि अइयारकउ तस्स मिच्छामि दुक्कड, ऐसे कहे ॥

करे। नित्यम् ‡प्रति ४ लोगस्सका ध्यान करे, फिर नमो अरिहंताणं पढ़कर एक लोगस्स उज्जोयगरेका पाठ और दो वार इच्छामि खमासमणोका पाठ पढ़कर, फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वंदना नमस्कार करके यथाशक्ति प्रत्याख्यान करे। यदि गुरु प्रत्याख्यान करवाएं तो वोसिरामि आप कह लेवे। फिर पूर्व विधिपूर्वक दो नमोत्थुणंके पाठको पढ़े और समय धर्म ध्यानमें व्यतीत करे। जब सामायिक पूर्ण हो गइ ज्ञात करे तब "इच्छाकारेण" इत्यादि सूत्र पढके "तस्सोत्तरी करणेणं" के पाठको पठन करे। ततूपश्चात् एक "लोगस्स उज्जोयगरे"का ध्यान करे, फिर "नमो अरिहंताणं" ऐसे कहके ध्यान पार करे। एक लोगस्स उज्जोयगरेके पाठको उच्च स्वरसे पढ़े। फिर प्राग्वत् दो नमोत्थुणं पढ़के नवमा सामायिक व्रत इस सूत्रको पढे। एतावन् मात्र सूत्रोंके पठन करनेसे सामायिककी आचना हो जाती है। फिर चतुर्दश नियम धारण करे जिनके करनेसे महान् कर्मोंका आस्रव निरोध होता हे, सो सर्वथा आस्रवका निरोध हो जानेपर जीव मोक्षाधिकारी बन जाते हैं॥

॥ इति विधि समाप्त ॥

---

‡ पक्षिको १२, चातुर्मासिको २०, सम्वत्सरीको ४० का ध्यान करना चाहिये॥

॥ णमोत्थुणं समणस्स भगवतो महावीरस्सणं ॥

श्रावक प्रतिक्रमण ।

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥१॥

हिंदी पदार्थ—(तिक्खुत्तो) तीन वार (आयाहिणं) गुरु महाराजजीकी दक्षिण ओरसे लेकर (पयाहिण) प्रदक्षिणा (करेमि) करता हूं (वदामि) स्तुति करता हू (नमसामि) नमस्कार करता हूं (सक्कारेमि) सत्कार देता हू (सम्माणेमि) सन्मान देता हू। गुरुदेव कैसे है (कल्लाणं) कल्याणकारी (मंगल) मगलकारी (देवयं) धर्मदेव (चेइय)§ ज्ञानवत, यह चारो ही नाम गुरु महाराजके है, सो मै (पज्जुवासामि) ऐसे गुरु महाराजकी मन वचन काया करके सेवा करता हूं और (मत्थएण) मस्तक करके (वदामि) वदना करता हू ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें यह वर्णन है कि गुरु महाराजके दक्षिण पासेसे लेकर तीन प्रदक्षिणा करके नमस्कार करे और गुरु महाराजको सन्मानादि भली प्रकारसे देवे, मस्तक नमाकर वंदना करे, किन्तु (तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं) यह दो सूत्र वदनाके विधि विधान कर्त्ता है, अपितु (करेमि) जो कि संस्कृत भाषामें 'करोमि' शब्द उत्तम पुरुषका एक वचन है, वहांसे ही वदना करनेका मूल सूत्र जानना। और इस सूत्रके द्वारा गुरु

§ चिति सज्ञाने धातुसे तद्धितका ष्य प्रत्यय लगकर चैत्य शब्द बनता है और प्राकृतमें चेइय ऐसे रूप होता है किन्तु चेइय शब्द द्वितीयाका एक वचन ही है ॥

महाराजकी तीन वार वंदना करके चतुर्विंशति स्तवकी आज्ञा लेकर सम्यक्त्वके विशुद्ध्यर्थें निम्न लिखित सूत्र पढ़े ॥

अथ मूल सूत्रम् ॥

अरिहंतो महदेवो जावज्जीवाय सुसाहु सुगुरुणं जिणपण्णत्तं तत्तं एसम्मत्तं मे गहियं पंचेंदिय संवरणो तह नवविह वंभचेर गुत्तिधरो चउव्विह कसायमुक्को इय अट्ठारस्स गुणेहिं संयुत्तो पंचमहव्वय जुत्तो पंचविह आयार पालण समत्थो पंच समिओ त्तिगुत्तो छत्तीस्स गुणो गुरु होइ सो गुरु मज्झं ॥१॥

हिंदी पदार्थ—(अरिहतो) अर्ह् पूजाया धातुसे जो शतृ प्रत्ययान्त होकर अर्हत् शब्द बनना है, तिसका नाम प्राकृत भाषामें अरिहत है। यथा अर्ह् ऐसा धातु है फिर (सञ्छड्वत्स्यैल्लृटोशाऽनितौ) शाकटायन व्याकरणके इस सूत्रसे अर्ह् पूजाया धातुको शतृ प्रत्यय हो गया। फिर शकार ऋकारकी इत्संज्ञा करके पुनः (यस्येतसंज्ञा तस्य लोपः) अर्थात् लोप करके अर्हत् ऐसे रूप बन गया। फिर (शत्रानशः)प्राकृत व्याकरणके इस सूत्रसे शतृ प्रत्ययके तकारको न्त आदेश हो गया तब अर्हन्त ऐसे हुआ। फिर (उच्चार्हति) प्राकृत व्याकरणके इस सूत्रसे अरिहंत अरुहंत अरहंत ऐसे तीन रूप सिद्ध हुए। अपितु यह शब्द प्राकृत भाषामें अजंत हो गया। फिर (अत सेर्डो) इस सूत्रसे (अरिहनो) यह रूप हुआ सो अरिहंत (†मह) मेरे (देवो) देव है (जावज्जीवाय) यावत्काल मेरी आयु है, फिर तावत्काल ही (सुसाहु) सुसाधु जो हैं सो (सुगुरुणं) मेरे गुरु हैं (जिणपण्णत्तं) जिनेन्द्र देवका प्रतिपादन किया हुआ जो (तत्त) तत्त्व है सोई

---

† मे मइ मम मह मह मज्झ अम्ह अम्हं ङसा ॥ प्रा० अ० ८ पा० ३ सू० ११३॥ अस्मदोङसा पष्ठ्येक वचनेन सहितस्य एतेन वादेशा भवति ॥

मरा धर्म है (ए सम्मत्तं) यही सम्यक्त्व (मे) मेरे (गहिय) गृहीत है अर्थात् देव गुरु धर्मकी जो पूर्ण निष्टा है सो मेरा सम्यक्त्व है। और गुरु मेरे वह है जो (पचिंदिय सवरणो) पाच इंद्रिय यथा श्रोत्र, घ्राण, चक्षु, रस, स्पर्श, इनको जो वश करनेवाले है (तह) तथा (नवविह) नवविधिके (बभचेर गुत्तिधरो) ब्रह्मचर्यकी गुप्तिके धरनेवाले जैसे कि जिस स्थानमें स्त्री पशु नपुसकका निवास होवे ऐसे स्थानको छोड देवे मूषक बिलाव (मार्जार) का दृष्टान्त १, स्त्रीका व्याख्यान न करे नींबूका दृष्टान्त २, स्त्रीसे संघट्टा भी (स्पर्श भी) न करे उष्ण भूमिकामें घृतका दृष्टान्त ३, स्त्रीके सागोपागको भी न देखे नेत्रोंके रोगीको सूर्य्यको हेतु ४, पूर्व क्रीडाकी स्मृति न करे तक्रवा सुदर अनिष्ट वार्ताओका दृष्टान्त ५, स्त्रीके समीपकी वस्तीको भी छोड़ देवे जैसे वादल गरजते हुए समय मयूरके नृत्य करनेका दृष्टान्त ६. प्रणित आहारको भी न आसेवन करे जीर्ण वस्त्रका दृष्टान्त ७, फिर अतीव आहार भी न करे स्वल्प भाजनमें बहुत वस्तुका दृष्टान्त ८, शरीरका भी शृंगार न करे मलीन वस्त्रमें रत्नका दृष्टान्त ९, सो जो गुरु उक्त विधिसे ब्रह्मचर्य पालनेवाले हैं और (चउविह कसायमुक्को) चतुर्विधिकी कषायोंसे भी मुक्त हैं जैसे क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ (इय अट्ठारस्स गुणेहिं सयुत्तो) इन १८ गुणों करके जो संयुक्त है, फिर (पंच महव्वय जुत्तो) पांच महाव्रतों करके सयुक्त है जैसेकि—अहिंसा १ सत्य २ दत्त ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ इनको पालनेवाले, फिर (पंचविह) पाच विधिके (आयारपालण समत्थो) आचार पालणम समर्थ हैं जैसेकि ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वलवीर्याचार ५ फिर (पंच समिओ) पाच समित करके भी युक्त हैं जैसेकि (इर्या समित) विना देखे न चलना (भाषा समित) विना विचारे न बोलना (एषणा समित) निर्दोषाहार लेना (आयार भडमत्त निक्खेवणा समित) विना यत्न वस्तुका न रखना न उठाना (उच्चार पासवण खेल सिंघाण जल्ल मल परिठावणिया

समित) पूरीष, मूत्र, थूंक, श्लेष्म, स्वेद, मलादि जो गेरने योग्य वस्तु हैं उनको विना यत्न न गेरना, फिर (त्तिगुत्तो) त्रिगुप्त जैसेकि मन, वचन, काया सो जो ३६ (छत्तीस गुणो होई सो गुरु मज्झ) गुणों करके युक्त है वे ही मेरे गुरु हैं॥

भावार्थ—इस सूत्रमें यह वर्णन है कि देव गुरु धर्मका पूर्ण स्वरूप ज्ञात करके फिर समग्र प्रकारसे देव गुरु धर्मोपरि निश्चय करना यही सम्यक्त्व है और वही धर्म सत्य है जो सत्य पदार्थोंका सम्यक् प्रकारसे उपदेश है। पुनः अहिंसा सत्य परोपकार ब्रह्मचर्य क्षमा दया दान तप भाव मृदुता ऋजुभाव इत्यादि पदार्थोंका पूर्ण नीतिसे वर्णन करनेवाला है॥ देव वही है जो राग द्वेषादि अंतरंग शत्रुओंसे मुक्त होकर सर्वज्ञ वा सर्वदर्शी हैं। गुरुका स्वरूप मूल सूत्रके पदार्थमें किंचित् मात्र लिख चुका हूं जैसेकि—अहिंसा, सत्य, दत्त, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, इनको धारण करनेवाले, मन, वचन, कायाको वश करनेवाले, क्रोध मान माया लोभको त्यागनेवाले, ज्ञान दर्शन चरित्रके पालनेवाले, पाच इन्द्रियोंको दमन करनेवाले, वैराग्य मुद्रा सौम्य प्रवृत्ति इत्यादि गुण करके जो युक्त है वही गुरु है। सो देव गुरु धर्म्मका पूर्ण विधिसे आराधन होना चाहिये॥

इस सूत्रको पढ़के फिर श्रावक निम्न लिखित सूत्रको पठन करे।

अथ मूल सूत्रम्॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसा उत्तिंग पणग दग मट्टीमक्कड़ा संताणा संक्कमणे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया व-

त्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किला-
मिया उद्दविया ठाणा उठाणं संकामिया जीवियाउ ववरोविया जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥

हिंदी पदार्थ—(इच्छाकारेण) आपकी इच्छापूर्वक (संदिसह) वा आपकी आज्ञानुसार (भगवन्) हे महा भाग्यवान् (इरियावहिय) जो चलनेके समय हिंसादि क्रिया हूई है सो उस क्रियासे मै (पडिक्कमामि) पीछे हटता हू अर्थात् हिंसादि क्रियाओंसे निवृत्ति करता हू। तब गुरु कहने लगे (पडिक्कमह) हे शिष्य! सावद्य क्रियाओंसे शीघ्र ही पीछे हटो। तब शिष्यने कहा (इच्छ) आपकी आज्ञा मुझे स्वीकार है और मै भी यही (इच्छामि) इच्छा करता हू। यह सर्व सूत्र सामायिक कर्त्ताके विनयके ही सूचक है किन्तु आलोचनाके निम्न लिखित सूत्र है—(इरिया वहियाए) मार्गमें चलते समय जो मेरेसे विना उपयोग (विराहणाए) विराधना हुई हो अर्थात् विना उपयोग चलते समय किसी भी जीवकी विराधना यदि हुई हो तो मै उस विराधनासे (पडिक्कमिउ) निवृत्ति करता हू क्योंकि विराधना (गमणागमणे) आने जानेसे ही होती है सो यदि गमनागमनसे (पाणक्कमणे) प्राणी उपरि आक्रमण हो गया हो, इसी प्रकार (बीयक्कमणे) बीजोपरि (हरियक्कमणे) हरिउपरि (उसा) ओसोपरि (उत्तिंग) कीड़ियोके भवनोपरि (पणग) पांच प्रकारको§ वनस्पति (दग) पाणी (मट्टी) वा सचित मृत्तिका उपरि (मक्कडा) कोई जीव विशेष (सताणा) वा जालोपरि (संक्कमणे) आक्रमण हुआ हो (जे) जो (मे) मेरेसे (जीवा) जीवोंका उक्त विधिसे नाश हुआ हो जैसे कि—(एगिंदिया) एकेन्द्रिय जीव पृथिवी पाणी अग्नि वायु वनस्पति (बेइंदिया) द्विइंद्रियं जीव जैसे गड़ो-

§ पांच वर्णकी सूक्ष्म वनस्पति होती है जैसे कि निगोदादि, सो पांच वर्ण निम्न प्रकारसे हैं:—कृष्ण १ पीत २ रक्त ३ हरित् ४ श्वेत ५॥

लादि (तेइंदिया) त्रिइंद्रिय जीव जैसे कुंथुवा, जूं , लीखादि (चउरिंदिया) चतुरिंद्रिय जीव जैसे मत्सरादि (पचिंदिया) पंचेद्रिय जीव जैसोकि—जलचर, स्थलचर, खेचर, सर्व जातिके पचेंद्रिय इत्यादि जीवोंकी विराधनाके कारण शास्त्र वर्णन करते हैं जैसे कि—(अभिहया) सन्मुख आते हुए जीव विना उपयोग पीड़ित हुए हों (वत्तिया) रज उनोपरि आच्छादन हो गई हो (लेसिया) भूमिकामें मसले गए हों (संघट्टिया) परस्पर सघट्टित हुए हों (परियाविया) परितापना उन जीवोंको हुई हो (किलामिया) वा किलामना (उद्दविया) अथवा उपद्रव उन जीवोको किया हो वा (ठाणा उठाणं) एक स्थानसे (संकामिआ) दूसरे स्थानोपरि सक्रमण किया हो वा (जीविआउ) जावकी जो आयु है (ववरोविया) उससे व्यवरोपित हुए हों अर्थात् वह जीव मृत्यु हो गये हों (जो) जो (मे) मैं ने (देवसि) दिन सम्बन्धि (अइयार) अतिचार (कओ) किया है (तस्स) उस अतिचाररूप (मिच्छा मि दुक्कड) पापसे मैं पीछे हटता हू ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें प्रथम तो सामायिक कर्ताका विनय धर्म सिद्ध किया है, फिर सामायिक करनेवाला जीव यह विचार करता है कि मैं ने जो सामायिक करनेके लिए गमनागमन किया है, यदि उक्त क्रिया करते हुए कोई भी जीव मेरे विना उपयोग दु खित हुआ हो या रक्षा करते २ मेरेसे मृत्युको प्राप्त हो गया हो और मैं ने उसको किसी प्रकारकी पीड़ा दी हो तो मैं उस पापका पश्चात्ताप करता हू, क्योंकि मैं पाप कर्मको मिथ्या रूप मानता हू ॥ सो श्रावक उक्त सूत्रको पढ़के फिर कायोत्सर्गकी शुद्धिके वास्ते निम्न लिखित सूत्र पढ़े ॥

अथ मूल सूत्रम् ॥

तस्स उत्तरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं विसोहि करणेणं विसल्ली करणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्टाय ठामि काउसग्गं अन्नत्थ उससिएणं निस-

स्सिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वाय-निसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंग संचा-लेहिं सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गं जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ३ ॥

हिंदी पदार्थ—(तस्स) पुनः आत्माकी शुद्धि अर्थे (उत्तरी कर-णेण) प्रधान जो कृत हे उसको उत्तरीकरण कहते हैं, फिर (पायच्छित्त करणेण) पापोके दूर करनेके वास्ते तथा (विसोहि करणेण) आत्माको विशुद्ध करनेके लिए पुन' (त्रिसल्ली करणेणं) शल्योंके दूर करने वास्ते और (पावाण) पापकर्मोंके (निग्घायणट्ठाय) नाश करनेके वास्ते (ठामि) एक स्थानोपरि (काउसग्ग) पापकर्मोंके दूर करनेके वास्ते कायोत्सर्ग करता हू, किन्तु (अन्नत्थ) इतना विशेष जो आगे कहे जाते हैं इनके विना कायाको हिलाऊगा नहीं अपितु यह भी आगार स्ववशके नहीं हैं जैसेकि—(उस-स्सिएणं) ऊंचे श्वासके आने पर अथवा (निसस्सिएण) नीचे श्वासके होने पर वा (खासिएणं) खासीके होने पर, इसी प्रकार (छीएण) छींक (जंभा-इएण) जभाई [अवासी] (उड्डुएणं) डकार (वायनिसग्गेण) अधो वायु-के निकलने पर (भमलिए) चक्रके आने पर (पित्तमुच्छाए) पित्तके उच्छ-लने पर (सुहुमेहिं) सूक्ष्म (अंग सचालेहिं) अंगके सचालन होनेपर (सुहु-मेहिं) सूक्ष्म (खेल संचालेहिं) श्लेष्मणके सचालन होनेपर (सुहुमेहिं) सूक्ष्म (दिट्ठि सचालेहिं) दृष्टिके चलने पर (एवमाइएहिं) इत्यादि अन्य कई आ-गारों [प्रतिज्ञाओं] करके यदि मेरा शरीर ध्यानावस्थामें कपायमान हो जावे तो मेरा ध्यान (अभग्गो) भग न होगा (अविराहिओ) विराधित न होगा

किन्तु इन प्रतिज्ञाओं करके (हुज्ज) होवे (मे) मेरा (काउसग्गं) कायोत्सर्ग। सो कायोत्सर्गके कालका परिमाण निम्न प्रकारसे है जैसेकि- (जाव) यावत् काल मे (अरिहंताणं) श्री अरिहंतों (भगवंताण) भगवंतोंको (नमोक्कारेणं) नमस्कार न करूं तावत्काल पर्य्यन्त (कायं) कायाको (ठाणेणं) एक स्थानमें रक्खूंगा, पुन· (मोणेणं) मौन वृत्तिमें तथा (ज्झाणेणं) एकाग्र ध्यानवृत्तिमें (अप्पाणं) अपनी कायाको वा अपनी आत्मासे पापकर्मको (वोसिरामि) [व्युत्सृजामि] छोडता हूं ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें यह विधान है कि-पापकर्मके नाश करनेके वास्ते ध्यान करे और जो प्रतिज्ञाएं सूत्रमें वर्णन की गई हैं उनके विना ध्यानमें कायाको संचालन न करे। पुनः ध्यानका नियम यावत् काल नमो अरिहंताण ऐसा पाठ न पढ़े तावत् काल ध्यान ही रक्खे। यह सर्व उक्त सूत्रमें आत्माकी विशुद्धिके लिए ध्यानविधि प्रतिपादित की गई है अपितु ध्यानमें निम्न लिखित सूत्र पढे ॥

अथ मूल सूत्रम् ॥

लोगस्स उज्जोयगरे[1] धम्मतित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं[2] चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजियं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च विमल मणंतं च जिणं

---

१ टाण-शस्येत् ॥ टादेशेणेशसिचपरे अस्य एकारो भवति ॥ टाण—वच्छेण-शह-वच्छे-वृक्षान्। इसी प्रकार लोकस्य उद्योतकरान्॥ सो आगे भी इस प्रकार जानना चाहिये ॥

२ मे स्स ॥ प्रा० व्या० अ० ८। पा० ३। सू० १६९।

धातो परो भविष्यति काले म्यादेशस्य स्थाने स्स वा प्रयोक्तव्यः॥ कित्तइस्स इत्यादि ॥

धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणि-सुव्वयं नमिजिणं च वंदामि अरिट्ठनेमिं पासं तह वद्ध-माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभित्थुआ विहुय रयमला पहीण जरमरणा चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरोग्ग बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमदिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयास-यरा सागरवर गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

हिंदी पदार्थ—(लोगस्स) लोकके विषय (उज्जोयगरे) उद्योत करनेवाले ओर (धम्मतित्थयरे) धर्म रूपी तीर्थके स्थापन करनेवाले पुन (जिणे) रागद्वेषके जयकर्त्ता (अरिहंते) ऐसे जो श्री अरिहंत है (कित्त-इस्सं) तिनकी कीर्ति करता हू (चउवीसंपि) ओर ऋषभादि चतुर्विंशति तीर्थकरोंके नाम लेकर स्तुति करता हू। अपि शब्दसे अन्य जिनेन्द्रोंका भी ग्रहण करना। पुनः २४ तीर्थंकर कैसे है (केवली) केवल ज्ञानके धारक हैं ॥१॥ अथ चतुर्विंशति तीर्थंकरनामानि। (उसभ) ऋषभदेवजीको (अजिय) (च) पुनः अजितनाथजीको (वंदे) वंदना करता हू (संभवं) संभवनाथजी-को (अभिणंदणं) अभिनंदननाथजीको (च) और (सुमइ) सुमतिनाथजीको (च) पुन (पउमप्पहं) श्री पद्मप्रभुस्वामीजीको (सुपासं) श्री सुपार्श्व-नाथजीको (जिण) रागद्वेषके जीतनेवाले (च) ओर (चंदप्पह) चंद्रप्र-भुजीको (वंदे) वंदना करता हू ॥ २ ॥ (सुविहिं) सुविधिनाथजीको (च) पुन. इनका द्वितीय नाम (पुप्फदंतं) पुष्पदंतजीको (सीयल) शीतलनाथजीको (सिज्जंस) श्रेयांसनाथजीको (वासुपुज्ज) वासुपूज्य स्वामी-जीको (च) ओर (विमल) विमलनाथजीको (अणंतं) अनंतनाथजीको (च) ओर (जिण) रागद्वेषके जीतनेवाले (धम्मं) धर्मनाथजीको (च)

पुनः (संतिं) शान्तिनाथजीको (वंदामि) वदन करता हूं ॥ ३ ॥ (कुंथुं) कुंथुनाथजीको (अरं) अरनाथजीको (च) और (मल्लिं) मल्लिनाथजीको (वंदे) वदना करता हूं (मुणिसुव्वयं) मुनि सुव्रत स्वामीजीको (नमिजिणं) नमिनाथजीको रागद्वेषके जीननेवाले (च) और (वंदामि) वंदना करता हूं (अरिट्ठनेमि) अरिष्टनेमिजीको (पासं) पार्श्वनाथजीको (तह) तथा (वद्धमाण) वर्द्धमानस्वामीजीको अर्थात् श्री महावीरजीको वंदना करता हूं। (च) पाद पूर्णार्थे है ॥ ४ ॥ (एवं) इस प्रकारसे मैने (अभित्थुआ) अरिहंतोंकी स्तुति की है क्योंकि अरिहंत कैसे है (विहुय) जिन्होंने दूर करी है (रयमला) कर्मोंकी रज तथा मल फिर (पहीण) क्षय किया है (जरमरणा) जरा और मृत्यु ऐसे जो (चउवीसंपि) चतुर्विंशति तीर्थंकर है वा अन्य केवली भगवान् है वे सर्व (जिणवरा) जिनवर (तित्थयरा) वा सर्व तीर्थंकर देव (मे) मेरे ऊपर (पसीयंतु) प्रसन्न हों। यह सर्व व्यवहार नयके मनसे प्रार्थनारूप वचन है ॥५॥ श्री तीर्थंकर देव (कित्तिय) कीर्त्तित (वंदिय) वदित और (महिय) पूज्य है, अपितु महिइ् धातु पूजा वा वृद्धि अर्थमे व्यवहृत है सो इस स्थानोपरि भावपूजाका ही विधान है, (जे) जो (ए) यह प्रत्यक्ष (लोगस्स) लोगमें (उत्तमा) उत्तम (सिद्धा) सिद्ध हैं सो मुझको (आरोग्ग) रोगरहित निर्मल ऐसा जो सिद्ध भाव है वा (बोहिलाभं) बोधबीज सम्यक्त्वका लाभ और (उत्तमं) उत्तम (समाहि) समाधि (वरं) जो प्रधान है सो मुझको (दिंतु) दो ॥ ६ ॥ क्योंकि आप कैसे है? (चंदेसु) चन्द्रमासे (निम्मलयरा) अधिक निर्मल और (आइच्चेसु) सूर्यसे भी अत्यंत (पयासयरा) प्रकाश करनेवाले हो (सागरवर) प्रधान सागर जो कि स्वयंभू रमण समुद्र है तिसकी तरह (गभीर) गुणोंमें गम्भोर है सो हे सिद्धो (सिद्धा) कार्य सिद्ध हुए है जिनके ऐसे जो श्री सिद्ध प्रभु है सो हे सिद्धो (सिद्धिं) मुक्ति जो है सो (मम) मुझको (दिसतु) दो ॥ ७ ॥

भावार्थ—इस सूत्रमें जो सम्यक्त्वकी विशुद्धिके लिए पाठ है उनका गृहस्थी ध्यान करे जैसे कि २४ तीर्थंकरोंके नाम हैं, फिर उनके गुणोंका

यथाशक्ति अनुकरण भी करे क्योंकि सामायिकमें मुख्यतया समाधिकी ही आवश्यकता हे। जो प्रार्थनाके पाठ हैं वह भी इस प्रकारसे है जो शीघ्र ही आत्मबोधको दिखलाते है—जैसे कि (जिन) ध्यान करते २ वर्ण विपर्यय करनेसे (निज) ध्यान हो जाता है, इसी प्रकार सामायिकमें भी प्रार्थना आत्मसमाधिको ही पुष्ट करती हे अर्थात् प्रार्थना इस प्रकारसे समाधि देती है जैसे चिंतामणि रत्न इच्छककी इच्छा पूरी कर देता हे। सो इस सूत्रका ध्यान करके फिर नमो अरिहंताणं ऐसे पाठ पढके फिर वही पाठ एक वार ऊचे स्वरसे पढे ॥ फिर बैठकर दक्षिण जानु भूमिका पर रखकर वामा जानु ऊचा करके पुन: हाथ जोडकर निम्नलिखित सूत्र पढ़े ॥

अथ मूल सूत्रम् ॥

'नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीण लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाण धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं सरणगइपइठाणं अप्पडिहयवरनाणं दंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णुणं सव्वदरिसिणं सिव मयल मरुय मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं ॥ १ ॥

हिंदी पदार्थ—(नमोत्थु) नमोऽस्तु अर्थात् नमस्कार हो (ण) णं इति-वाक्योपन्यासे (अरिहंताणं) श्री अरिहंतोंको—इसी प्रकार सर्वत्र जानना, (भगवताणं) भगवंतोंको (आईगराण) धर्मकी आदि करनेवालोंको (तित्थयराणं) चतुर् श्री संघरूप तीर्थस्थापकोंको, फिर जिनको (सयसं-बुद्धाणं) स्वयमेव बोध हुआ है फिर (पुरिसुत्तमाणं) पुरुषोंमें उत्तम (पु-रिससीहाणं) पुरुषोंमें सिंह समान बलापेक्षा (पुरिसवर पुंडरीयाण) पुरुशोमें पुंडरीक कमल समान निर्लेप (पुरिस) पुरुषों में (वर) प्रधान (गंधहत्थीण) गंधहस्ती समान (लोगुत्तमाणं) लोगमें उत्तम (लोगनाहाणं) लोगके नाथ (लोगहियाणं) लोगके हितैषी (लोगपईवाणं) लोगमें प्रदीप समान (लोग-पज्जोयगराणं) लोगमें परम उद्योत करनेवाले (अभयदयाणं)§ अभय दान करनेवाले (चक्खुदयाणं) ज्ञानरूपी नेत्रोंके देनेवाले (मग्गदयाणं) मोक्षके बतलानेवाले (सरणदयाण) सर्व जीवोंको शरणभूत (जीवदयाणं) संयमरूपी जीवनके दाता (बोहिदयाण) बोध बीजको देनेवाले (धम्म-दयाणं) धर्मके देनेवाले (धम्मदेसियाणं) धर्मका उपदेश करनेवाले (धम्म-नायगाणं) धर्मके नायक अर्थात् धर्म नेता (धम्मसारहीणं) धर्मरूपी रथके सारथी (धम्मवर) धर्ममें प्रधान (चाउरत) चार गतिके अंत करनेवाले अर्थात् अपनी आत्माको चार गतिसे पृथक् करनेवाले (चक्कवट्टीणं) चक्रवर्ती समान (दीवोत्ताण) संसार रूपी समुद्रमें द्वीप समान (सरणगइपइठाणं) शरणागतोंकी वत्सलता करनेवाले (अप्पडिहय) अप्रतिहत ऐसे (वर) प्रधान (नाण) ज्ञान (दंसण) दर्शनके (धराण) धरनेवाले (वियट्ट) दूर हो गया है जिनका (छउमाणं) छद्मस्थभाव अर्थात् कर्म नष्ट हो गये है (जिणाणं) और फिर जिन्होंने रागद्वेषको जीता है (जावयाणं) औरोंको रागद्वेषके जीतनेका उपदेश करते है फिर (तिन्नाणं) संसाररूपी सागरसे आप तिरे हैं (तारयाणं) औरोंको तारते है (बुद्धाणं) आप बुद्ध है (बोहियाणं) औरोंको बोध देते है फिर (मुत्ताणं) आप कर्मोंसे मुक्त हुए औरोंको

§ यह सर्व पद षष्ठयन्त हैं ॥

(मोयगाण) कर्मोंसे मुक्त करते है फिर (सव्वण्णुण) सर्वज्ञ हैं (सव्व-दरिसिणं) सर्वदर्शी है फिर (सिवं) कल्याणरूप (अयलं) अचल (अरूयं) रोगरहित (अणंत) अनंत ज्ञानादि करी (अक्खय) अक्षय (अव्वाबाह) बाधा पीडादि रहित अर्थात् दुःखादि रहित (अपुणराविति) जिसकी अपुनर्वृत्ति है अर्थात् पुर्नजन्म नही है ऐसी जो सिद्ध गति हे (सिद्ध-गई) अर्थात् मोक्ष है (नामधेय) नाम भी यही है जिसका सो ऐसे (ठाण) स्थानकको (संपत्ताण) जो संप्राप्त हुए हैं अर्थातू जो मोक्षको प्राप्त हुए है ऐसे जो श्री अरिहंत प्रभु है तिनको (नमो) नमस्कार हो (जिणाणं) जिन्होंने कर्मरूपी शत्रुओंको जीता है फिर (जियभयाण) जीत लिये है जिन्होने सर्व भय ॥

भावार्थ—यह स्तुति मंगल दो वार पढणा। द्वितीय वारमें यह पाठ कहना (ठाणं सपाविउ कामस्स नमो जिणाण जियभयाणं) ओर इस स्तवमे जो आत्मा मोक्ष हो गये है वा होनेवाले है उनकी स्तुति है। फिर उनके गुणोंका गृहस्थी यथाशक्ति अनुकरण करे क्योंकि स्तुति करनेका सारांश यही होता है कि वे गुण स्वय भी ग्रहग किये जाये। जिस प्रकार रागद्वे-पादि अतरग शत्रुओंको जीतके अर्हन् हुए हैं इसी प्रकार सर्व भव्य प्राणि-योंको भी होना योग्य हैं॥

फिर तिक्खुत्तोके पाठसे गुरुदेवको वंदना नमस्कार करके सामायिक करनेकी आज्ञा लेकर निम्न लिखित सूत्र पठन करे॥

आवस्सही इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसी पडिक्कमणो ठामि देवसी ज्ञान दर्शन चरित्ताचरित्तं तप अतिचार चिंतवणा अर्थं करेमि काउसग्गं ॥

हिंदी पदार्थ—(आवस्सही) आवश्यमेवही (इच्छा) इच्छा हे मेरी (कारेग) करनेकी (संदिसह) आज्ञा दीजिये (भगवन्) हे भगवन् मैं (देवसी) दिन सम्बन्धि (पडिक्कमणो ठामि) प्रतिक्रमण प्रारंभ करता हू

अर्थात् आवश्यक करनेकी आज्ञा लेकर आवश्यक करता हूं जैसेकि (देवसी) दिन सम्बन्धि (ज्ञान) ज्ञान (दर्शन) दर्शन (चरित्ताचरित्तं) चरित्रा चरित्र (देशव्रत) (तप) द्वादशभेदि तप (अतिचार) अतिचारोंके (चिंतवणा अर्थ) स्मरणके लिए (करेमि) करता हूं (काउसग्ग) कायोत्सर्ग॥

भावार्थ—श्री अर्हन् देवकी आज्ञासे प्रथम आवश्यक करनेकी आज्ञा लेकर उक्त सूत्रको पठन करके फिर (नमस्कार मंत्र पढ़े) ॥

§णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

---

§ महाशय ! इस महामन्त्रको नमोक्कार मन्त्र भी कहते हैं अर्थात् महामन्त्रका द्वितीय नाम नमोक्कार मन्त्र भी है, परन्तु कोई २ नमोक्कारके स्थानोपरि नवकार मन्त्र ऐसे भी उच्चारण करते हैं, सो यह भी सत्य है क्योंकि प्राकृत व्याकरणमें इसका विवेचन इस प्रकार है, यथा—

रुद्नमोर्वः । प्रा० । व्या० । अ० । ८ । पा० । ४ । सू० । २२६ ॥ अनयोरन्त्यस्य वो भवति ॥ अर्थात् रुद् और नम् धातुके अन्त वर्णको वकार हो जाता है जैसे रुवइ नवइ इत्यादि ॥ इस सूत्रसे नवकार ऐसे सिद्ध हुआ ॥

पुनः नमस्कार शब्दसे नमोक्कार पद इस प्रकारसे सिद्ध होता है जैसे कि—नमस्कार परस्परे द्वितीयस्य ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पा० १ सू० ६२॥ अनयोर्द्वितीयस्य अत ओत्वं भवति ॥ इस सूत्रसे नमस् शब्दके द्वितीय, शब्दके अकारको अर्थात् नमस् शब्दके मकारके अकारको ओकार हो गया जैसे कि, नमोस्कार, फिर क–ग–ट–ड–त–द–प–श–ष–स–ᳵक ᳵप–मामूर्ध्वं लुक् ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू० ७७ ॥ एषां संयुक्तवर्णसम्बन्धिनामूर्ध्वंस्थितानां लुग् भवति ॥ इस सूत्रसे सकारका लोप हो गया तब नमोकार ऐसे रहा ॥ पुन. अनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम् ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू० ८९ ॥ पदस्यानादौ वर्तमानस्य शेषस्यादेशस्य च द्वित्वं भवति ॥ इस सूत्रसे ककार द्वित्व हो गया, तब परिपक्व प्रयोग नमोक्कार ऐसे सिद्ध हुआ॥ अपितु "ह्रस्वः संयोगे" प्रा० अ० ८ पा० १ सू० ८४ से "नमुक्कार" भी सिद्ध हो जाता है ॥

हिंदी पदार्थ—(नमो)* (नमः) नमस्कार (अरिहंताणं), अर्हद्भ्यः अर्ह् पूजाया धातुसे जो शतृ प्रत्ययान्त होकर अर्हत् शब्द बनता है तिसका नाम प्राकृत भाषामें अरिहत है, अर्थात् जो सबके पूज्य सर्वज्ञ सर्वदर्शी हैं तिन अरिहत भगवन्तोंके ताईं नमस्कार हो, अर्थात् उनको नमस्कार हो, (नमो) (नम) नमस्कार (सिद्धाण) (सिद्धेभ्यः) षिधूसराधौ धातुसे जो 'क्त' प्रत्ययान्त होकर सिद्ध शब्द बना है अर्थात् जो सिद्ध बुद्ध अजर अमर अशरीरी सर्वज्ञ सर्वदर्शी हैं तिनके ताईं नमस्कार हो, (नमो) (नमः) नमस्कार (आयरियाणं) (आचार्य्येभ्य) जो आङ् उपसर्ग पूर्वक चर् गति भक्षण धातुसे कृदन्तका घ्यण् प्रत्ययान्त होकर सिद्ध होता है अर्थात् आचार्य्योंके ताईं नमस्कार हो, (नमो) (नमः) नमस्कार हो (उवज्झायाणं) (उपाध्यायेभ्यः) उपाध्यायोंके ताईं जो कि उप अधि उपसर्ग पूर्वक इङ् अध्ययने धातुसे कृदन्तका घञ् प्रत्ययान्त होकर बनता है, (नमो) (नमः) नमस्कार हो, (लोए सव्वसाहूण)† लोकृ दर्शने, सृगतौ,

---

* तथा कोई २ पुरुष ऐसे भी भाषण करते हैं कि (णमोक्कार) शब्द ही शुद्ध है अर्थात् जिसके पूर्व णकार होवे वही शुद्ध है, अन्य सर्व अशुद्ध हैं, किन्तु प्राकृत व्याकरणमें इस प्रकारसे लिखा है यथा—वादौ ॥ प्रा० अ० ८ पा० १ सू० २२९ ॥ असयुक्तस्यादौ वर्तमानस्य नस्य णो वा भवति । णरो—नरो । णई—नई—इति ॥

† पंच पदकी चूलिका इस प्रकारसे है जैसेकि—एसो पच णमोक्कारो सव्व पाव प्पणासणो मगलाण च सव्वेसिं पढम हवइ मगल ॥

अथार्थान्वयः—(एसो) (एषः) यह (पच) (पञ्च) पञ्च (नमोक्कार) (नमस्कार) नमस्काररूप पद (सव्व) (सर्व) सारे (पाव) (पाप) पापोंके (प्पणासणो) (प्रणाशनः) प्रणाशनहार हैं अर्थात् पापोंके नष्ट करनेवाले हैं, (मगलाण) (मगलाना) मगलीक हैं (च) (च) और अपितु च अव्यय है (सव्वेसिं) (सर्वेषा) सर्व स्थानोंपरि पढे हुए (पढमं) (प्रथम) प्रथम अर्थात् दध्यादि पदार्थोंसे पूर्व (हवइ) (मगल) (मङ्गलम्) मङ्गलीक है ॥

भावार्थ—इस महामन्त्रके पाञ्च ही नमस्काररूप पद सर्व पापोंके नाश करनेवाले हैं तथा मगलीक और सर्व स्थानोपरि पठन किये हुए दध्यादि पदार्थोंसे भी पहिले मगलीक हैं क्योंकि अनत गुणयुक्तोक्त महामन्त्र है ॥

राध साध संसिद्धौ, इन धातुओंसे जो नमो लोए सव्वसाहू शब्द बनता है-(लोके सर्व साधुभ्यः) लोकमें जितने साधु है अर्थात् लोकमें सर्व साधुओंके ताईं नमस्कार हो-जो कि सुगुणों करके युक्त है ॥

भावार्थ—इस महामन्त्रमें यह वर्णन है कि अनन्त गुणयुक्त चतुर्घाति कर्म नष्ट कर्त्ता और जिनके द्वादश गुण प्रगट हुए हैं ऐसे गुणगणालंकृत श्री अरिहंतजी महाराजोंको नमस्कार हो; पुनः जिनके अशरीरी सिद्ध बुद्ध अजर अमर इत्यादि अनेक नाम सुप्रख्याति संयुक्त सुप्रसिद्ध है जिन्होंके सर्व कर्म क्षय हो गये है अर्थात् जो कर्मरूपी रजसे विमुक्त हो गये हैं और जिन्होंके अष्ट गुण प्रादुर्भूत हुए हैं इत्यादि अनेक सुगुणों सहित श्री सिद्ध महाराजोंको नमस्कार हो, अपितु जो षट्त्रिंशत् गुणोंसे युक्त मर्यादासे क्रिया करनेवाले जिनकी ज्ञानमें गति अधिक है तथा जो सम्यक् प्रकारसे गच्छ (साधु समुदाय) की सारणा (रक्षा करना) वारणा (शिथिलाचार होतेको सावधान करना) साधुमण्डलको हितशिक्षा देना तथा वस्त्रपात्रादि द्वारा भी मुनियोंको सहायता देनी वा परम्पराय शुद्ध शास्त्रार्थ पठन कराना अपितु यदि कोई दुर्बल अर्थात् जंघाबल क्षीण रोगादि युक्त साधु हों उनको यथायोग्य सहायता करना इत्यादि अनेक गुणोंसे युक्त हैं और उक्त वार्त्ताओंके पूर्ण करनेमें सदैव कटिबद्ध हैं ऐसे श्री आचार्यजी महाराजको नमस्कार हो, अपिच जो पंचविंशति गुणोंसे अलंकृत हो रहे हैं अर्थात् जो एकादश अंग तथा द्वादश उपांगको स्वयम् पढ़ते हैं औरोंको पढ़ाते हैं—जिन शास्त्रोंके नाम ये हैं.—

संख्या. अथांगसूत्राणि.	संख्या. अथोपांगसूत्राणि.
(१) आचारांग	(१) उववाइ.
(२) सूयगडांग.	(२) रायप्रश्नेणी.
(३) ठाणांग	(३) जीवाभिगम.
(४) समवायांग.	(४) पण्णवन्ना.

संख्या. अंगसूत्राणि.	संख्या. उपांगसूत्राणि.
(५) विवाहप्रज्ञप्ति.	(५) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति.
(६) ज्ञाताधर्मकथांग.	(६) चन्द्र प्रज्ञप्ति.
(७) उपासकदशाङ्ग.	(७) सूर्य्य प्रज्ञप्ति.
(८) अतगड.	(८) निरावलिका.
(९) अनुत्तरोववाइ.	(९) पुप्फिया.
(१०) प्रश्न व्याकरण	(१०) कप्पिया.
(११) विपाक.	(११) पुप्फचुलिका.
	(१२) वण्हिदशा

अर्थात्- जो पूर्वोक्त शास्त्रोंका अभ्यास स्वय करते है और औरोंको यथा अवकाश वा यथा अवसर पठनाभ्यास करवाते है, पुन' विद्याकी उन्नति करनेमें तत्पर रहते है और जिसके द्वारा धर्म तथा विद्याकी वृद्धि हो वही कार्य्य करके परिफुल्लित होते हैं, ऐसे परम पण्डित महान् विद्वान् दीर्घदर्शी परमोपकारी श्री उपाध्यायजी महाराजोंको नमस्कार हो, जो कि श्रत विद्याकी नावसे अनेक भव्य जीवोंको ससाररत्नाकरसे उत्तीर्ण करते हैं ॥ अन्यच्च—नमस्कार हो सर्व साधुओंको जो लोकमें सुगुणों करके परिपूर्ण है सदा ही परोपकारी है और ज्ञानके द्वारा स्व आत्मा वा अन्यात्माओंके कार्य सदैव काल सिद्ध करते है, अपितु सप्तविंशति गुणयुक्त है तिन मुनियोंको पुनः पुन· नमस्कार हो ॥ फिर सामायिक करनेका निम्न लिखित सूत्र पढे ।

॥ अथ मूल सूत्रम् ॥

करेमि भंत्ते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं* पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि

---

* सामायिक कर्ताको चाहिये इस पाठके अतर्गत ही यावन्मात्र मुहूर्त करने हों तावन्मात्र ही कह लेने, जैसेकि—जावनियम मुहूर्त १—वा २—पज्जुवासामि इत्यादि ॥

न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

हिंदी पदार्थ—(करेमि) मै करता हूं (भंते) हे भगवन् (सामाइयं) समतारूप भाव जो सामायिक है (सावज्जं) और सावद्यरूप जो (जोगं) मन वचन कायका योग है (पच्चक्खामि) जिसका प्रत्याख्यान करता हूं (जाव) यावत् (नियमं) नियम सामायिकका काल है तावत् काल पर्य्यन्त सामायिकका सेवन करता हूं, (दुविहं) दो करण जैसे करना और कराना सो सावद्य योगको (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (तिविहेण) इन तीनो योगों करके (न करेमि) न करूं (न कारवेमि) नही औरोसे कराऊं (तस्स) वह जो सावद्यरूप पाप है (भंते) हे भगवन् (पडिक्कमामि) पापसे पीछे हटता हूं (निंदामि) और पापसे अपनी आत्माको भिन्न करनेके लिये आत्मनिन्दा करता हूं (गरिहामि) विशेष करके आत्माको पापसे पृथक् करनेके लिये आत्मनिंदा करता हूं (अप्पाणं) और अपनी आत्माको (वोसिरामि) पापसे अलग करता हूं ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें यह वर्णन है कि सामायिक करनेवाला भगवान्की आज्ञानुसार सामायिकमें द्विविध त्रिविध करके सावद्य (हिंसक) योगोंका प्रत्याख्यान करता है—जैसे सावद्य कर्म करूं नहीं मन करके वचन करके काय करके, कराऊं नहीं मन करके वचन करके काय करके, और पापसे अपनी आत्माको पृथक् करके समतारूप भावों मे आत्माको स्थिर करता हूं ॥ फिर अपनी आलोचनाके वास्ते निम्नलिखित सूत्र पठन करे—क्योंकि ज्ञान, दर्शन चारित्राचारित्रकी विशुद्ध्यर्थ ही कायोत्सर्ग किया जाता है ॥

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसि अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विंतिओ अणायारो

अणिच्छियव्वो असावगो पावगो नाणे तह दंसणे च-
रित्ताचरित्ते सुय सामाइय तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसा-
याणं पंचण्हं अणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं
सिक्खावयाणं बारस्स विहस्स साव्वग धम्मस्स जं
खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥

हिंदी पदार्थ—(इच्छामि) मै इच्छा करता हू (ठामि) एक स्थानमें स्थिर रहकर (काउसग्ग) कायोत्सर्ग करनेकी (जो) जो (मे) मैं ने (देवसि) दिन सम्बन्धि (अइयारो) अतिचार (कओ) किया हे (काइओ) कायसे (वाइओ) वचनसे (माणसिओ) मनसे तथा (उस्सुत्तो) सूत्रसे प्रतिकूल कथन किया हो (उम्मग्गो) उन्मार्ग ग्रहण किया हो जो कि सर्वथा ही जिनमार्गसे प्रतिकूल है (अकप्पो) अकल्पनीय पदार्थ सेवन किया हो जैसेकि मास मदिरादि (अकरणिज्जो) अकरणीय कार्य किए हों (दुज्झाउ) दुष्ट ध्यान किया हो जेसे कि आर्तध्यान रौद्रध्यान (दुचिंतिउ) दुष्ट चिंत्वन किया हो (अणायारो) अनाचार सर्वथा ही नियमोंका भग कर देना इस प्रकारसे काम किया हो (अणिच्छियव्वो) जो इष्ट नहीं हे उसकी इच्छा की हो (असावगो पावगो) श्रावक वृत्तिसे विरुद्ध काम किया हो (नाणे) ज्ञानमें (तह) तथा (दसणे) दर्शनमें तथा (चरित्ताचरित्ते) चरित्राचरित्रमें (देशव्रतमे) (सुए) श्रुत सिद्धान्तमें (सामाइए) समतारूप भाव सामायिकमें फिर (तिण्हं गुत्तीणं) तीन प्रकारकी गुप्ति जैसेकि—मन वचन कायको वशमें न किया हो (चउण्ह कसायाणं) चार प्रकारकी कषाय की हो जैसेकि—क्रोध मान माया लोभ और (पचण्हं अणुव्वयाणं) पाच प्रकारके अनुव्रत जेसेकि—स्थूल हिंसा त्याग १ स्थूल मृषावाद त्याग २ स्थूल अदत्तादानका त्याग ३ स्थूल मेथुनका परित्याग जेसेकि स्वदार संतोष ४ स्थूल परिग्रहका परित्याग ५ इन व्रतोंमें अतिचार लगा हो अथवा (तिण्ह गुणव्वयाणं) तीन ही गुणव्रतोंमें दोष

लगा हो जैसेकि—दिग् व्रत, उपभोग परिभोग विरमण व्रत, अनर्था दंड परित्याग व्रत, (चउण्हं सिक्खावयाण) चार शिक्षाव्रतोंमें अतिचार लगा हो जैसेकि—सामायिक व्रत, देशावकाशिक व्रत, पौषधोपवास व्रत, अतिथि संविभाग व्रत (बारस्स विहस्स) द्वादश प्रकारके (साव्वग धम्मस्स) श्रावक धर्मको (जं खंडियं) जो मैंने खंडित किया है (जं विराहियं) जो मैं ने नियमादि सर्व प्रकारसे विराधित किए है (तस्स) वह अतिचारादि पाप (मिच्छा मि) निष्फल हो जो (दुक्कडं) दुःकृत पाप हैं तथा इनसे मैं पीछे हटता हूं ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें द्वादश व्रतोंके अतिचारोंकी आलोचना है, फिर मन वचन कायको वशमें करना चार कषायोंका परित्याग करना श्रावक वृत्तिसें विरुद्ध न होना अपितु अकरणीय कार्य न करने सम्यग् दर्शनको कलंकित न करना इस प्रकारसे वर्णन किया गया है ॥

(फिर तस्सोत्तरीका पाठ पठन करके कायोत्सर्ग करे जिसमें १४ ज्ञानके अतिचार ५ सम्यक्त्वके ६० द्वादश व्रतोंके १५ कर्मादानके ५ संलेखनाके इस प्रकारसे ९९ प्रकारके अतिचारोंका ध्यान करे, खडा होकर कायोत्सर्ग करनेकी ही रीति है, यदि कारण हो तो बैठके ही कर लेवे)

चतुर्दश प्रकारके ज्ञानातिचार निम्न प्रकारसे हैं—

आगमे तिविहे पणत्ते तंजहा सुत्तागमे अत्थागमे तदुभयागमे एहवा श्रुत ज्ञानके विषय जे कोई अतिचार लागा होय ते आलोउं जंवाइद्धं १ वच्चामेलिय २ हीणक्खरं ३ अच्चक्खरं ४ पयहीणं ५ विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीणं ८ सुट्ठुदिन्नं ९ दुट्ठुपडिच्छियं १० अकाले कउ सज्झाओ ११ काले न कउ सज्झाओ १२ असज्झाइयं १३ सज्झाइय न सज्झायं

कीधा होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥

अर्थ—यदि दर्शन (सम्यक्त्व) के विषय कोई अतिचार लगा हो तो मै उसकी भी आलोचना करता हूं जैसेकि—जिनवचनोंमें शंका की हो १ अथवा परमतकी आकांक्षा करी हो कि—अमुक मत वहुत ही सुंदर हे—जिसके उपासक सदैव काल ही सुखी रहते है इस प्रकारके भाव करनेसे सम्यक्त्वमें द्वितीय अतिचार लगता है २ और कर्मोंके फल विषय संशय किया हो ३ तथा पर पाषंडियोंकी स्तुति करी हो जिसके द्वारा वहुतसे प्राणियोंको मिथ्यात्वकी रुचि हो जाये इस प्रकारसे कर्म किया हो ४ और अन्य मतावलम्बि नास्तिकादि लोगोंसे संस्तव—परिचय किया हो ५ क्योंकि—दुष्ट जनोंकी संगति अवश्य ही विकृति भावको उत्पन्न कर देती है इस लिए दुष्ट जनोकी संगति कदाचित् भी न करनी चाहिये । सो यदि इस प्रकारसे सम्यक्त्वमें कोई भी अतिचार लग गया हो तो मै उस दोषसे पीछे हटता हूं और फिर ऐसा न करूंगा इस प्रकार भाव रखता हूं ॥

पहिला थूल प्राणातिपात वेरमण व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागा होय ते आलोउं रीसवसे गाढ़ा बंधण बांध्या होय १ गाढ़ा घाव घाल्या होय २ अवयवना विच्छेद कीधा होय ३ अति भार घाल्यो होय ४ भात्त पाणीका विच्छेद कीधा होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—जो प्रथम अनुव्रत हे उसमे यदि कोई अतिचार रूप दोप लग गया हो तो मैं उसकी आलोचना करता हूं जैसेकि—क्रोधके वश होकर जीवोंको कठिन बधनोंसे बाधा हो १ निर्दयके साथ उनको प्रहारोंसे घायल किया हो २ उनके अवयवोंको काट दिया हो ३ उनपर प्रमाणरहित

भार लादा हो अर्थात् अतीव भारका लादना भी एक अतिचार है ४ और अन्नपानीका व्यवच्छेद कर दिया हो तथा वेतन आदि न दिया हो ५ सो यदि इस प्रकारसे मेरे प्रथम अनुव्रतमें दोष लगा हो तो मैं उस दोषसे पीछे हटता हूं अर्थात् उन दोषोंको छोडता हूं ॥

बीजा थूल मृषावाद वेरमण व्रतके विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं सहसातकारि कही प्रते कूडा आल दीधा होय १ रहस्स छानी वार्त्ता प्रगट करी होय २ स्त्री पुरुषका मर्म प्रकाश्या होय ३ कहीं प्रंते पाय पाडवा भणी मृषा उपदेश दीधा होय ४ कूडा लेख लिख्या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—द्वितीय अनुव्रतकी भी आलोचना इस प्रकारसे करे कि—यदि मैने विचारशून्य होकर किसीके ऊपर दोपारोपण किया हो १ अथवा किसीकी गुप्त वार्ता प्रगट कर दी हो २ स्त्री वा पुरुषकी मर्मयुक्त वार्ताओंका प्रकाश किया हो ३ अपने वश करनेके लिए किसीको असत्य [दुष्ट] सम्मति दी हो ४ अथवा कूट लेख लिखें हो ५ क्योंकि यह कर्म द्वितीय अनुव्रतको कलंकित करनेवाले है। यदि इस प्रकारसे मैने कोई भी दिनमे दोष किए हों तौ मै उन दोषोंसे पीछे हटता हूं अर्थात् उनको छोडता हू ॥

त्रीजा थूल अदत्तादान वेरमण व्रतके विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं चोरको चुराइ वस्तु लीधी होय १ चोरने साहज दीधा होय २ राज्य विरुद्ध कीधा होय ३ कूडा तोल कूडा मापा

कीधा होय ४ वस्तुमें भेय संभेल कीधा होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—तृतीय स्थूल अदत्तादान व्रतके विषय यदि कोई अतिचार लग गया हो तो मै उसका विचार करता हूं जैसे कि—चोरीकी वस्तु ली हो १ चोरोंकी सहायता करी हो २ राज्य विरुद्ध कर्म किया हो ३ और वस्तुओंका तोल वा माप आदि विपरीत किया हो ४ सुंदर वस्तुमें निकृष्ट वस्तु विक्रय करनेके वास्ते मिला दी हो ५ सो यदि उक्त प्रकारसे कोई भी दोष लग गया हो तो मै उस दोषरूप अतिचारसे पीछे हटता हूं ॥

चोथा थूल सदार संतोस मैथुन वेरमण व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं इत्तर थोडा कालकी राखीसुं गमण कीधा होय १ अपरिगहियासुं गमण कीधा होय २ अणंग कीडा कीधी होय ३ पराया विवाह नाता जोड्या होय ४ [1]कामभोग तीव्र अभिलाषासे सेव्या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—चतुर्थ स्थूल सदार संतोष व्रतके अतिचारोंकी भी आलोचना करता हूं जैसेकि—लघु अवस्थायुक्त अपनी स्त्रीसे यदि संग किया हो तथा अल्प परिमाण होने पर अधिक संग किया हो १ पानीग्रहणके पूर्व स्व स्त्रीका संग किया हो २ कुचेष्टा की हो ३ परके नाते आदिको अपने साथ संयोजन कर लिया हो ४ और कामभोगकी तीव्र अभिलाषा करी हो ५ यदि इस प्रकारसे दिनमें कोई भी अतिचार लग गया हो तो मैं उन दोषोंको छोड़ता हूं ॥

---

१ कामभोगनी तीव्र अभिलाषा कीधी होय—इति च पाठः ॥

पांचमा थूल परिग्रह परिमाण व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं खेत्त वत्थुनो परिमाण अतिक्रम्या होय १ हिरण्य सुवर्णनो परिमाण अतिक्रम्या होय २ धन धान्यनो परिमाण अतिक्रम्या होय ३ दोपद चौपदनुं परिमाण अतिक्रम्या होय ४ कुविय धातुनो परिमाण अतिक्रम्या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—पाचवें स्थूल परिग्रह परिमाण व्रतकी आलोचना करता हू कि—क्षेत्र वस्तुके भी परिमाणको अतिक्रम किया हो अर्थात्—खेत और हट्ट आदिके परिमाणको अतिक्रम किया हो १ चादी और सुवर्णके परिमाणको अतिक्रम किया हो २ अथवा धन और धान्यके परिमाणको अतिक्रम कर दिया हो ३ द्विपद और चतुष्पदके भी परिमाणको छोड़ दिया हो ४ और घरकी सामग्रीके परिमाणको भी यदि अतिक्रम किया हो ५ तो मैं दिनके किए हुए दोषोंसे पीछे हटता हूं ॥

छठा दिश व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं उड्ढ दिशनो प्रमाण अतिक्रम्या होय १ अधो दिशनो प्रमाण अतिक्रम्या होय २ तिरच्छि दिशनो प्रमाण अतिक्रम्या होय ३ क्षेत्र वधार्या होय ४ पंथनो संदेह पड्या आगे चाल्या होय ५ जो मे देवसि अईयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—षष्टम दिग्व्रतके अतिचारोंकी आलोचना करता हू कि—उर्ध्व दिशाके परिमाणको अतिक्रम किया हो १ अधो दिशाके परिमाणको अतिक्रम किया हो २ अथवा तिर्यग् दिशाके परिमाणको उल्लंघन कर दिया हो

३ एक ओरसे द्वितीय ओर क्षेत्रकी वृद्धि की हो जैसेकि—दक्षिणकी ओर क्षेत्र अल्प करके पूर्वकी ओर क्षेत्रकी वृद्धि करना ४ तथा मार्गमें चलते हुए यदि संशय पड़ गया हो कि स्यात् मैं परिमाणयुक्त मार्ग आ गया हूंगा यदि संशय होनेपर फिर भी आगे ही गमन किया हो ५ सो इस प्रकारसे यदि कोई भी अतिचार मुझे लगा हो तो मै उन दोषोंसे पीछे हटता हूं ॥

सातमा उवभोग परिभोग परिमाण व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं पच्चक्खाण उपरांत सचित्तका आहार कस्या होय १ सचित्त पडिवद्धका आहार कस्या होय २ अपक्कना आहार कस्या होय ३ दुपक्कना आहार कस्या होय ४ तुच्छौषधीका आहार कस्या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

पनरा कर्मादानके विषय जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोऊं इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ दंतवणिज्जे ६ लक्खवणिज्जे ७ रसवणिज्जे ८ केसवणिज्जे ९ विसवणिज्जे १० जंतपीलणियाकम्मे ११ निल्लंछणियाकम्मे १२ दवग्गि दावणियाकम्मे १३ सरदह तलाव सोसणिया कम्मे १४ असइ जणपोसणिया कम्मे १५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—सप्तम उपभोग परिभोग परिमाण व्रतके विषय यदि कोई अतिचार लगा हो तो मै उसकी आलोचना करता हूं। यद्यपि सचित्त वस्तुओंका सर्वथा त्याग गृहस्थको नहीं होता तथापि यदि सर्वथा त्याग हो तो—निम्न लिखित दोषोंको दूर करे जैसेकि—सचित्त वस्तुका आहार करना १ सचित्त प्रतिबद्धका आहार करना २ अपक्व वस्तुका आहार करना ३ दुःक्कप वस्तुका आहार करना ४ तुच्छौषधिका आहार करना ५ यह पाच ही दोष है । सो इनको दूर करके फिर पंचदश कर्मादानको भी छोड़े अर्थात् पंचदश मार्ग विशेष कर्म आनेके है इस लिए उनको छोडे जिनके नाम निम्न लिखितानुसार है—कोयलोंका बनज १ वन कटवाना २ शकटादिका व्यापार ३ भाटक कर्म ४ स्फोटक कर्म ५ दातोंका बनज ६ लाखका बनज ७ रसोंका बनज ८ केशोंका बनज ९ विषका बनज १० यत्रपीडन कर्म ११ नपुंसक कर्म १२ [निर्लांछन कर्म] वनको अग्निका लगाना १३ जलाशयको शुष्क करना १४ हिंसक जीवोंका पोषण करना १५ । सो यदि कोई भी दोष लगा हो तो मै उन दोषों से पीछे हटता हूं ॥

आठमा अनर्थ दंड वेरमण व्रतके विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं कंदर्प्पनी कथा कीधी होय १ भंडचेष्टा कीधी होय २ मुखारि वचन बोल्या होय ३ अधिकरण जोडी मूक्या होय ४ उवभोग परिभोग अधिका वधार्या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—अष्टमा अनर्थ दंड विरमण व्रतके अतिचारोंकी आलोचना करता हू—कामजन्य कथा की हो १ भडचेष्टा की हो २ असम्बद्ध वचन भाषण किए हों ३ अपरिमाणयुक्त शस्त्रादिका संग्रह किया हो ४ जो वस्तु

एक वेर आसेवन करनेमें आवे अथवा पुनः पुनः ग्रहण करनेमें आवे उनके परिमाणको अधिक कर लिया हो ५ सो यदि इनमें कोई भी दोष लगा हो तो मै उक्त दोषोंको छोड़ता हूं ॥

नवमा सामायिक व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं मन वचन कायाका जोग माठा वरताया होय सामायिकमें समता न आणी होय अणपूगी पारी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—नवमें सामायिक व्रतमें यदि कोई दोष लगा हो तो मै उन दोषोंकी आलोचना करता हूं जैसेकि—सामायिकमें मन वचन और कायके योगको दुष्ट धारण किया हो सामायिकमे यदि शान्ति न की हो और विना समय पूर्ण हुए सामायिककी आलोचना करी हो तो मै इन दोषोंसे रहित होता हू ॥

दसवाँ देसावगासी व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं नीमी भूमिकी बाहिरकी वस्तु अणाइ हो १ मुकलाइ हो २ शब्द करी जणायो होय ३ रूप करी दिखलाई हो ४ पुद्गल नांखिया आपण पड जणावो होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—दशवे देशावकाशिक व्रतके दोषोंकी आलोचना करता हूं जैसेकि—परिमाण की हुई भूमिकाके बाहिरसे वस्तु मंगवाई हो १ अथवा भेजी हो २ शब्द करके अपने आपको जताया वा दर्शाया हो ३ अथवा रूप करके अपने भाव प्रगट किये हों ४ किसी वस्तुके गिरानेसे किसी व-

रतुको बतला दिया हो ५ यदि इस प्रकारसे कोई भी दोष लगा हो तो मै उन दोषों से अपने आपको पृथक् करता हूं ॥

इग्यारमा पडिपुण्ण पोसह व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्जा संथारा १ अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सिज्जा संथारा २ अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवण भूमिका ३ अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय उच्चारपासवण भूमिका ४ पोसह मांहि विकथा प्रमाद कीधा होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—एकादशवे प्रतिपूर्ण पोषध व्रतके अतिचारोंकी आलोचना करता हू कि—शय्या संस्तारकको अप्रतिलेखित वा दुःप्रतिलेखित किया हो १ अथवा शय्या सस्तारकको अप्रमार्जित वा दु प्रमार्जित किया हो २ इसी प्रकार विष्टा और मूत्रके स्थान भी सम्यक् प्रकारसे प्रतिलेखितादि न किए हो ३ ओर प्रमार्जित भी न किए हों ४ और पौषधमें विकथा वा प्रमाद किया हो ५। सो इस प्रकारके दोषोंसे मै पृथक् होता हू अर्थात् मै उक्त दोषोको छोडता हूं ॥

बारमा अतिथिसंविभाग व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं सूज्झती वस्तु सचित्त उपर मूकी होय १ सचित्त करी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्या होय ३ आपणी वस्तु पारकी कीधी होय ४ मच्छर भाव दान दीधा होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—चतुर्दश ज्ञानके अतिचार (१४), पांच सम्यक्त्वके, ६० द्वादश व्रतोंके, १५ कर्मादानोंके, ५ पाच सलेखनाके एवं ९९ अतिचारोंके विषय यदि कोई अतिक्रम १ व्यतिक्रम २ अतिचार ३ अनाचार ४ आप दोष सेवन किए हों औरोसे दोष आसेवन करवाये हों जो उक्त दोषआसेवन करते है उनकी अनुमोदना की हो अत जो मैने दिनके विषय इस प्रकारसे अतिचार आसेवन किए हो तो मैं उन दोषोंसे पीछे हटता हू अर्थात् वे मेरे दोष निष्फल हो॥

अठारा पापस्थानक ते आलोऊं प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पिसुन्न १४ परपरिवाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १७ मिच्छा दंसण सल्ल १८। अठारा पापस्थानक सेव्या होय १ सेवाया होय २ सेवतां प्रति अणुमोद्या होय ३ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—अब मै अष्टादश पापोंकी आलोचना करता हूं जैसेकि—हिंसा १ झूठ २ चोरी ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ क्लेष १२ असत्य दोषारोपण १३ चुगली करना १४ दूसरोंके अवगुण वर्णन करने १५ विषयादिमे रति और उनके न मिलने पर अरति करना वा दु.ख मानना १६ छलसे असत्य बोलना १७ मिथ्या दर्शन शल्य १८ ये अष्टादश पाप सेवन किए हों अथवा औरोंसे आसेवन

करवाए हों तथा जो आसेवन करते हैं उनकी अनुमोदना की हो सो इस प्रकारके दोषोसे मै पीछे हटना हूं ॥

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसि अइयार कओ काइओ वाइओ माणसिओ उसुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुविंतिओ अणायारो अणाछियव्वो असावग्गो पावग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ता चरित्ते सुय सामाइयं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खाव्वयाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं बारस्स विहस्स सावग धम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं जो मे देवसि अइयार कओ [1]तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—मै इच्छा करना हूं एक स्थानमें बेठकर कायोत्सर्ग करनेकी क्योंकि—जो मै ने दिनमें अतिचार किए है कायासे, वचनसे, मनसे, अथवा सूत्रविरुद्ध प्रतिपादन किया हो कुमार्गमें गमन किया हो अकल्पनीय पदार्थ सेवन किए हों अकरणीय कार्य किए हों सो इनकी निवृत्तिके लिये शुभ ध्यान करता हूं तथा दुर्ध्यानसे निवृत्ति करना हूं, दुश्चिंत्वनसे भी पीछे हटना हूं। इसी प्रकार अनाचार अनिच्छनीय (जिसकी इच्छा करनी योग्य नही है) पदार्थ अश्रावक भावकी प्रवृत्तिसे भी निवृत्ति करता हू। यदि ज्ञान दर्शन चारित्राचरित्र श्रुत सामायिकमें दोष लगा हो तो उससे भी निवृत्ति करना हूं। यदि तीनों गुणव्रतों चार शिक्षाव्रतों पंच अनुव्रतों एवं द्वादश प्रकारके श्रावक धर्मको खंडित किया हो अथवा विराधित किया हो जो मैंने दिनमें अतिचार किया है उससे मै पीछे हटना हूं तथा वह मेरा अतिचाररूप पाप निष्फल हो।

---

१ ध्यानमें यहा तक ही पठन करना चाहिये ॥

सव्वस्सवि देवसियं दुब्भासियं दुचिंत्तियं दुचि· ट्ठियं दुनिस्सियं अधिका ओच्छा पाठ पढ्या होय आगलनूं पाछल पाछलनूं आगल कोई खोटा अक्षर खोटी मात्रा बोला होय बोलाव्या होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—दिनमें यदि मैने दुश्चिंत्वन किया हो दुष्ट भाषण किया हो दुष्ट प्रकारसे बेठनादि क्रियॉ की हो पाठ अनुक्रमतापूर्वक पठन न किया हो तथा अशुद्ध पाठ पठन किया हो तो मै उन दोषोंसे पीछे हटता हूं अथवा वे मेरे अतिचाररूप दोष निष्फल हो ॥

फिर नमस्कार मंत्र पढ़के कायोत्सर्गको सपूर्ण करे ॥

॥ इति प्रथम सामायिक आवश्यक सम्पूर्णम् ॥

फिर "तिक्खुत्तो" के पाठसे गुरु देवको बंदना नमस्कार करके द्वितीय आवश्यक करे, जैसेकि–'लोगस्स उज्जोयगरे'' इत्यादि पाठ पढ़के द्वितीय आवश्यक पूरा करके फिर तृतीय वंदना रूप आवश्यककी आज्ञा लेकर निम्नप्रकारसे तृतीय आवश्यक करे ॥

(इच्छामि खमासमणो) का पाठ दो वार पढे किन्तु प्रथम वार जब निस्सहियाय ऐसा सूत्र आवे तब हाथ जोड़कर बेठ जावे, फिर षट्प्रकारसे आवर्त्तन निम्न लिखितानुसार करे जैसेकि–प्रथम (अहोकायं) यह सूत्र पढ़ता हुआ तीन आवर्त्तन होते है, दोनों हाथ दीर्घ करके दशों अगुली गुरुके चरणों ऊपर लगाता हुआ मुखसे "अ" अक्षर उच्चारण करे, फिर दोनों हाथ मस्तकको स्पर्शन करता हुआ "हो" अक्षर कहे यह प्रथम आवर्त्तन है। इसी प्रकार "का" और "यं" अक्षरोके उच्चारगसे द्वितीय आवर्त्तन होता हे। फिर पूर्वोक्त विधिसे "का" और "य" अक्षरके कहनेसे तृतीय आवर्त्तन होता है ॥

इसी प्रकार जत्ता, मे, जवणि ज्जं च मे, इन सूत्रोंके भी तीन २ ही आवर्तन होते हैं—जैसेकि-प्रथम मंद स्वरके साथ "ज" अक्षर उच्चारण करे, फिर मध्यम स्वरसे "त्ता" ऐसे कहे, फिर ऊंचे स्वरके साथ हाथ मस्तकको लगाता हुआ "भे" ऐसे वर्ण उच्चारण करे। इन तीनों अक्षरोंसे प्रथम आवर्त्तन होता है। फिर "ज" 'व" "णि" यह तीन ही अक्षर पूर्वोक्त स्वरोंके अनुकूल उच्चारण करनेसे द्वितीय आवर्त्तन होता है। फिर "जं" "च" "भे" इन तीन वर्णोंको पूर्वोक्त प्रकारसे उच्चारण करनेसे तृतीयावर्त्तन होता है। इस प्रकारसे षट् आवर्त्तन एक पाठसे होते है और दो वार उच्चारण करनेसे द्वादश आवर्त्तन हो जाते है, किन्तु द्वितीय वारके पाठमें "आवस्सियाए" ऐसे पाठ न पढ़े, अपितु सर्व सूत्र निम्न लिखितानुसार है ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीही अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंत्ताणं वहु सुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणि ज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं आवसियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए तितीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण दुक्कडाए वय दुक्कडाए काय दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोहाए सव्व कालियाए सव्व मिच्छो वयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(खमासमणो) हे क्षमाके श्रमण शान्तिके समुद्र

(जावणिज्जाए) जिस करके कालक्षेप होता है ऐसी शक्ति करके तथा जन्म समयके बालकवत् जिसके दोनों हाथोंकी दोनों मुष्टिया आंखों पर होती है उसकी नाई (निसीहियाए) जिस शरीरका मुख्य कत्तव्य प्राणातिपातके निषेधका है ऐसे शरीर करके आपको (वंदिउं) वदना करनेकी (इच्छामि) इच्छा करता हू (मिउग्गह) स्व देह प्रमाण प्रमाण की हुई भूमिकामें प्रवेश करनेकी (मे) मुझेको (अणुजाणह) आज्ञा दीजिए। इस प्रकारसे आज्ञा लेकर अवग्रहमें प्रवेश करे (निसीहि) गुरुदेवको वंदना विना जिसने अन्य क्रिया रूप व्यापारका निषेध किया है, फिर मुखसे ऐसे कहे कि (अहोकायं) हे क्षमा श्रमण आपके चरण कमलोंको (काय) हाथ करके (संफासं) स्पर्श करता हूं। इस प्रकार आज्ञा लेकर चरण कमलोंको स्पर्श करके ऐसे कहे कि (किलामो) यदि आपके शरीरको मैं ने कोई पीडा दी हो (भे) हे भगवन् आप (खमणिज्जो) क्षमा करनेके योग्य है इस लिए क्षमा कीजिए क्योंकि–(बहु सुभेण) बहुत ही शुभ क्रियाओ करके (भे) आपका (दिवसो) दिवस [दिन] (वइक्कंतो) अतिक्रान्त हुआ है और आप (अप्पकिलंताण) अल्प वेदनावाले है–शारीरिक मानसिक वेदनासे रहित है यदि शारीरिक वेदना आपको उत्पन्न होती है तो आप उसमें आर्त्त और रौद्र ध्यान नहीं करते है। हे करुणासमुद्र (जत्ता) तप नियम सयम स्वाध्याय रूप यात्रा (भे) आपमे सतत विद्यमान है, (च) और (जवणिज्जं भे) इन्द्रिय नोइन्द्रियके उपशम करनेसे आपका शरीर परम सुन्दर और शान्तिरूप हो गया है, (खमासमणो) हे क्षमा श्रमण (देवसियं) दिन सम्बन्धि (वइक्कम्म) व्यतिक्रम हुआ मेरा किया हुआ जो अपराध उसकी मैं (खामेमि) आपसे क्षमा मागता हू–आप दोषको क्षमा करनेके योग्य है इसलिये क्षमा कीजिए, और (आवसिआए) अवश्य करणीय प्रतिलेखनादि क्रियाओंके करनेसे यदि मुझको अतिचार लग गया हो तो मै उस अतिचार रूप दोषसे (पडिक्कमामि) पीछे हटता हूं

दोषोंकी क्षमा करनेकी प्रार्थना अवश्य ही करे क्योंकि क्षमा मांगनेसे अविनय भाव दूर हो जाता है। त्रयस्त्रिंशत् प्रकारकी आशातनायें करके वा मन वचन काय करके तथा चारों कषायों करकेकभी भी गुरुकी आशातना न करे। यदि किसी प्रकारसे भी गुरुकी आशातना हो गई तो उसका पश्चात्ताप करे, फिर स्वआत्माद्वारा उस कर्मकी निंदा करता हुआ पुनः कभी भी आशातना न करे क्योंकि अविनय भावसे ज्ञानादि गुणोकी सफलता नही होती है ॥

इति श्री वंदनारूप तृतीयावश्यक समाप्तम् ॥

फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वदना करके चतुर्थ आवश्यक करनेकी गुरु महाराजसे आज्ञा लेकर पूर्वोक्त ९९ अतिचार जो कायोत्सर्गमे पठन किए थे उनको पठन करे किन्तु सर्व पाठोंके अतमें "तस्स मिच्छा मि दुक्कड" ऐसे कहना चाहिये क्योंकि ध्यानमें यह कहा जाता है कि "जो मे देवसि अइयार कओ तस्स चिंतवणा" इत्यादि। फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वदना करके बैठकर दक्षिण जानु ऊर्ध्व करके वामा जानु भूमिका पर रखकर नमस्कार मत्र पढे। फिर "करेमि भंते"का सूत्र पठन करे। फिर निम्न प्रकारसे पाठ पढे—इस क्रियाको वा पाठको श्रावकसूत्र भी कहते है ॥

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहु मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगल चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंता सरणं पव्वज्जामि सिद्धा सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ॥

---

१ अरिहताजीको सरणो सिद्धाजीको सरणो साधुजीको सरणो केवलि परूप्या

हिंदी पदार्थ—(चत्तारि मंगलं) चार मंगल है—जैसेकि—(अरिहंता मगलं) त्रैलोक्य पूज्य श्री अर्हन्त मंगलीक है, द्वितीय—(सिद्धा मंगलं) सिद्ध प्रभु मगलीक है, तृतीय—(साहू मगलं) साधु मगलीक है, चतुर्थ—(केवलिपण्णत्तो धम्मो मगलं) श्री केवली भगवान्का प्रतिपादन किया हुआ श्रुत चारित्र रूप धर्म मंगलीक है, (चत्तारि लोगुत्तमा) चार ही पदार्थ लोकमें उत्तम है (अरिहंता लोगुत्तमा) अरिहत प्रभु लोकमें उत्तम है, (सिद्धा लोगुत्तमा) सिद्ध भगवान् लोकमें उत्तम हैं, (साहु लोगुत्तमा) अर्हनाज्ञानुकूल क्रिया करनेवाले साधु लोकमें उत्तम है, (केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा) श्री केवलि भगवान्का प्रतिपादन किया हुआ धर्म लोकमें उत्तम है। पुनः (चत्तारि सरणं पव्वज्जामि) मै चार शरण अंगीकार करता हू (अरिहंता सरण पव्वज्जामि) श्री अर्हन् भगवान्का शरण ग्रहण करता हू (सिद्धा सरणं पव्वज्जामि) श्री सिद्ध महाराजाओंका शरण ग्रहण करता हूं (साहू सरणं पव्वज्जामि) श्री साधु मुनिराजोंका शरण ग्रहण हू (केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि) श्री केवलि भगवान्के प्रतिपादित धर्मका शरण ग्रहण करता हूं॥

भावार्थ—लोकमें चार ही मंगल है, चार ही उत्तम है, चार ही शरण है जैसेकि अर्हन् १ सिद्ध २ साधु ३ केवलि भाषित धर्म ४ ॥

फिर "इच्छामि ठामि" इस सूत्रको पढके इच्छाकारेण यह सूत्र पाठ पढ़े, फिर तिक्खुत्तोके पाठके साथ वंदना नमस्कार करके व्रत अतिचारके पठन करनेकी आज्ञा लेकर प्रथम ज्ञानातिचारोंकी आलोचना करे, जैसेकि—

"आगमे तिविहे पण्णत्ते"का पाठ ॥

आगमे तिविहे पण्णत्ते तंज्जहा सुत्तागमे अ-

• दया धर्मको सरणो ॥ चार सरणा दुःख हरणा और न बीजो कोय, जो भवि प्राणी आदरो तो अक्षय अचल गति होय॥

कालमें स्वाध्याय न किया हो (असज्झाइय सज्झायं) अस्वाध्यायके समयमें स्वाध्याय किया हो (सज्झाइय न सज्झायं) स्वाध्यायके समयमें स्वाध्याय न किया हो (जो) जो (मे) मेरा (देवसि) दिन सम्बन्धि (अइयारो) अतिचार (कओ) किया हुआ है (तस्स) उसका (मिच्छा मि) फल मिथ्या हो वा निष्फल हो (दुक्कड) पापका ॥

भावार्थ—आगम तीन प्रकारसे प्रतिपादन किया गया है जैसेकि सूत्रागम १ अर्थागम २ तदुभयागम ३, सो जंवाइद्धं इत्यादि १४ अतिचार ज्ञानके है सो उनको श्रावक दूर करे। उक्त पाठसे श्रावकको सूत्र पठन करने स्वतः ही सिद्ध होते हैं ॥

‡दर्शनका पाठ ॥

दर्शन सम्यक्त्व परमत्थ संथवो वा सुदिट्ठ परमत्थ सेवणावावि वावण्णं कुदंसण वज्जणाय एवी

‡ सम्यक्त्वके ग्रहण करनेके निम्न लिखित सूत्र पढना चाहिए.—

अहन्न भंते तुम्हाणं समीवे मिच्छत्ताउ पडिक्कमामि, सम्मत्त उवसं पवजामि नजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउण मिच्छत कारणाइं पञ्चक्खामि, सम्मत्त कारणाइं उवसं पवजामि नो मे कप्पइ अज्जप्पभिई अन्नउत्थिए वा अन्नउत्थिय देवयाणि वा अन्नउत्थिय परिग्गहियाणि, चेइयाणि वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्विं अणालित्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असणं वा, पाण वा, खाइम वा, साइमं वा, दाउ वा, अणुप्पयाउ वा खित्तउण इत्थ वा अन्नय वा, कालउणं जावजीवाए भावउण जावगहेण न गहिज्जामि जावछलेण न छलिज्जामि, जाव संनिवाएण नाभिभविज्जामि जाव अन्नेण वा केणवरोवाय काइणाए सपरिणामो न परिवडइ तामेव असम्म दसणं नन्नत्थरायाभिओगेणं, गणाभिओगेण, बलाभिओगेणं, देवयाभिओगेण, गुरु निग्गहेणं वित्तीकन्तारेणं वोसिरामि ॥ अरहंतो महदेवो जावज्जीवाय सुसाहु सो गुरुणो जिण पन्नत्तं तत्त ईयसम्मत मए गहियं ॥

सम्मत्त सद्दहणा एहवा सम्यक्त्वना समणोवासया-णं सम्मत्तस्स पंच अइयारा पयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं संका कंक्खा वि-तिगिच्छा परपासंडी परसंसा परपासंडी संथवो एवं पांच अतिचार मध्ये जे कोई अतिचार लागो होय तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(दर्शन सम्यक्त्व) दर्शन सम्यक्त्वका स्वरूप व-र्णन करते है कि (परमत्थ) परमार्थ जो नव तत्त्व जीवादि है उनका (संथवो) संस्तव करना परिचय करना तथा (सुदिठ्ठ परमत्थसेवणावि) परमार्थको जिन्होंने भली प्रकारसे देखा है उनकी सेवा करनी (वावण्णं) जिन्होने सम्यक्त्वको धारण करके त्याग दिया है वा वमण कर दिया है तथा जो (कुदंसण) कुत्सित दर्शन है जिन्होंमें सम्यक्त्वका ही अभाव है ऐसे पुरुषोंकी सगतिको (वज्जणाय) वर्जना (एवी) इस प्रकारसे (सम्मत्त) सम्यक्त्वकी (सद्दहणा) श्रद्धा होती है (एहवा सम्यक्त्वना समणोवा-सयाण) इस प्रकारसे जो सम्यक्त्वके धारक श्रमणोपासक है उनको (सम्मत्तस्स) सम्यक्त्व सम्बन्धि (पंच) पाच (अइयारा) अतिचार (पया-ला) स्थूल है जोकि (जाणियव्वा) जानने योग्य तो अवश्य है, किन्तु (न समायरियव्वा) समाचरण योग्य नहीं है (तज्जहा) तद्यथा (ते आ-लोउं) उनकी आलोचना करता हूं—जैसेकि (संका) जिनवचनोंमे शंका करना (कक्खा) परमतकी आकाक्षा करना (वितिगिच्छा) फल विषय संशय करना जैसेकि सुव्रतोंका फल है किम्वा नहीं है (परपासडी पर-संसा) परपाखडियोकी प्रशंसा करना क्योकि मिथ्यात्वियोंकी प्रशसा कर-नेसे बहुतसे आत्मा मिथ्यात्वमे ही प्रवेश कर जाते है (परपासंडी सथवो)

परपाषंडियोंसे संस्तव परिचय करना क्योंकि-संगदोष महान् हानिकारक होता है (एवं पांच अतिचार मध्ये जे कोई अतिचार लागो होय) इस प्रकार दर्शनके पांच अतिचारोंमेंसे यदि कोई अतिचार लगा हो तो (तस्स) उसका (मिच्छा मि) मिथ्या हो [निष्फल हो] (दुक्कडं) पाप ॥

भावार्थ—सम्यक्त्वधारी श्रावक सम्यक्त्वके पांच दोष जोकि महान् स्थूल है उनको दूर करे जैसेकि-जिनवचनोंमें शंका करना १ परमतकी विभूति देखकर परमतकी आकांक्षा करना २ फल विषय संशय करना ३ परपाषंडियोंकी प्रशंसा करना ४ और पाषंडियोंका ही संस्तव परिचय करना ५ इन दोषोको दूर करके शुद्ध सम्यक्त्वको धारण करे ॥

फिर द्वादश व्रतकी आलोचना निम्न प्रकारसे करे ॥

पहिला अणुव्रत थुलाउ पाणाइवायाउ वेरमणं त्रस जीव वेंइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय जाणी पोछी संकल्पो तेमांहि सगा सम्बंधि शरीर माहिला पीड़ाकारी सअपराधि ते उपरांत निरपराधि आकुट्टी हणवानी बुद्धिसे हणवाका पच्चक्खाण जावजीवाय दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवा पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतना पंच अइयारा पयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं वंधे १ वहे २ छविच्छेए ३ अइभारे ४ भात पाणी वोच्छेए ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

हिंदी पदार्थ—(पहिला) प्रथम (अणुव्रत) साधुकी अपेक्षा जो छोटा व्रत है (थुलाउ) स्थूल (पाणाइवायाउ) प्राणातिपातसे (वेरमण) निवृत्तिरूप (त्तस) त्रस (जीव) जीव जैसेकि (बेइंदिय) द्वींद्रिय जीव जैसेकि सीप शख जोकादि (तेइंदिय) त्रीइंद्रिय जीव जैसेकि जू पिपीलिकादि (चउरिंदिय) चतुरिंद्रिय जीव जैसे मक्षिकादि (पंचेंदिय) पचेंद्रिय जीव जैसेकि नारकी मनुष्य तिर्यग् देव (जाणी) जान करके (पीच्छी) परीक्षा करके (संकल्पी) मनमें संकल्प करके (ते मांहि) उक्त जीवोंमेंसे (सगा सम्बन्धि शरीर माहिला पीड़ाकारी सअपराधि ते उपरान्त निरपराधि आकुट्टी हणवानी बुद्धिसे हणवाका पच्चक्खाण) अपने स्वजन सम्बन्धि तथा शरीरमें पीडा करनेवाला और स्व अपराध करनेवाला वा अन्यायसे वर्तनेवाला जो स्व अपराधि है उनके विना जो निरपराधि जीव हैं उनको जानकर मारनेकी बुद्धिसे मारनेका प्रत्याख्यान (जाव जीवाय) यावत् जीव पर्यन्त (दुविह) द्विविध वा (तिविहेणं) त्रिविधि करके जैसेकि (न करेमि) नहीं करू (न कारवेमि) नहीं हिंसादि औरोसे कराऊ (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवा) इस प्रकारसे (पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतना) प्रथम स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतके (पच अइयारा) पाच अतिचार (पयाला) प्रधान [मोटे] (जाणियव्वा) जानने योग्य है (न समायरियव्वा) किन्तु ग्रहण करने योग्य नहीं हैं (तंज्जहा) तद्यथा (ते आलोउ) तिनकी मै आलोचना करता हू (बंधे) क्रोधादि करके कठिन बंधनेंसे बांधना (वहे) वध करना (छविच्छेए) छविका छेदन करना (अइभारे) मर्यादा रहित भारका लादना (भात पाणी वोच्छेए) अन्न पाणीका निरोध करना (जो) जो (मे) मैने (देवासि) दिन सम्बन्धि (अइयारो) अतिचार (कओ) किया है (तस्स) उसका पाप (मिच्छा मि) मिथ्या हो (दुक्कडं) जो दुष्कृत है ॥

भावार्थ—प्रथम अनुव्रतमें यह कथन है, कि गृहस्थी स्थूल हिंसा-

का परित्याग करे क्योंकि सर्वथा हिंसाका त्याग तो गृहस्थोंसे हो नहीं सकता, इस लिये स्थूल शब्द ग्रहण किया गया है। फिर त्यागमें भी जो निरपराधि जीव है उनको न मारे, अपितु स्वअपराधियोंका त्याग नहीं है। उक्त व्रतमें न्यायधर्म वा न्यायमार्ग भली प्रकारसे दिखलाया गया है। जो निरपराधियोंकी रक्षा स्वअपराधियोंको दड इस कथनसे राजे महाराजे भी जैन धर्मको सुखपूर्वक पालन कर सकते हैं। फिर पाच ही अतिचार रूप दोषोंको भी दूर करे कि क्रोधके वशीभूत होकर जीवोंको बांधना १। वध करना अपितु जो बालकोंको ताड़नादि किया जाता है वह केवल शिक्षाके वास्ते होता है किन्तु उस आत्माको पीड़ित करनेके लिए नही जैसे अध्यापक छात्रोंको शिक्षाके लिये ही ताडता है किन्तु उनके प्राणनाश करनेके लिए नही इस लिये क्रोधसे वध करना भी प्रथम अनुव्रतमें अतिचार रूप दोष है २। तृतीय अतिचार छविका छेदन करना ही है जैसेकि नेत्रोंके विषयके वास्ते पशुओके अंगोपांग काट देने ३। और चतुर्थ अतिचार अतिभारारोपण है, पशुओंकी शक्तिको न देखते हुए अति भारका लादना यह भी प्रथम अनुव्रतमे दोष है ४। पचम दोष अन्नपानीका निरोध रूप है, क्योंकि वे अनाथ आत्मा जो पूर्व पापोंके फलसे पशु योनिको प्राप्त हुए है उनकी भली प्रकारसे रक्षा न करना यह भी प्रथम अनुव्रतमें अतिचार रूप दोष है ५॥ इस लिये अनुव्रत द्विकरण तीन योगसे आयु पर्यन्त ग्रहण करे, करूं नहीं मनकरके वचन करके काय करके कराऊ नहीं मन करके वचन करके काय करके इस प्रकार गृहस्थी प्रथम अनुव्रत धारण करके फिर द्वितीय अनुव्रत धारण कर जोकि निम्न लिखित है—

बीजुं अणुव्रत थूलाउ मोसावायाउ वेरमणं कन्नालिए गोवालिए भोमालिए थापणमोसा मोटको कूड़ी साख इत्यादि मोटकं झूठ बोलवाना पच्च-

क्खाण जावजीवाय दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एइवा बीजा थूल मृषा-वाद विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं सहस्सा भक्खाणे रहस्सा भक्खाणे सदारमंत भेए मोसोवएसे कूड़ लेह करणे तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥

हिंदी पदार्थ—(बीजु अणुव्रत) द्वितीय अनुव्रत (थुलाउ) स्थूल [मोटा] (मोसावायाउ) मृषावादसे (वेरमणं) निवृत्ति करता हूं जैसेकि—(कन्नालिए) कन्या तथा वर सम्बन्धि असत्य जैसे किसीने विवाह सम्बन्धि वार्त्ता की तब वर कन्या सम्बन्धि असत्य भाषण करना तथा इसी प्रकार (गोवालिए) गो आदि पशुओं सम्बन्धि असत्य (भोमालिए) भूमिका सम्बन्धि असत्य (थापण मोसो) तथा स्थापन मृषा अर्थात् किसीने अमुकके पास विनाशाक्षिओंके कोई वस्तु स्थापन करा दी तो उसके लिए असत्य भाषण करना उसीका नाम स्थापन मृषा है (मोटकी कूडी साख) स्थूल कूट शाक्षि देना जैसेकि राज्यद्वारमें किसी कारणके पृच्छा करनेपर असत्य भाषण करना (इत्यादिक मोटकूं झूठ बोलवाना पच्चक्खाण) इत्यादि स्थूल मृषावाद बोलनेका प्रत्याख्यान [नियम] (जावजीवाय) यावत् जीव पर्य्यन्त (दुविहं) द्विकरण (तिविहेणं) त्रियोगसे जैसेकि (न करेमि) उक्त कारणोसे असत्य भाषण नहीं करूं (न कारवेमि) नहीं औरोंसे कराऊ (मणसा) मनसे (वयसा) वचनसे (कायसा) कायसे, एहवा बीजा थूल मृषावाद विरमण व्रतके पंच अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य है किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणके योग्य नहीं है (तज्जहा) तद्यथा जैसेकि—(सहस्सा भक्खाणे) विचारशून्य होकर अन्य आत्माओंके दोषारोपण किया हो वा अकस्मात् विनाविचारे अन्य जीवोंको दोषोके

भागी सिद्ध किया हो (रहस्सा भक्खाणे) किसीकी रहस्य वार्त्ता प्रगट करी हो (सदारमंत भेए) स्वदाराका मंत्र भेद किआ हो जैसेकि–स्त्रीकी मर्म-युक्त वार्ताका कथन करना (मोसोवएसे) अन्य आत्माओंको मृषा भाषण करनेका उपदेश दिया हो (कूड़ लेहकरणे) कूट [असत्य] लेख लिखा हों (तस्स) उस (मिच्छा मि दुक्कडं) अतिचार रूप पापसे मैं पीछे हटता हूं ॥

भावार्थ—द्वितीय अनुव्रतमें स्थूल मृषावाद बोलनेका परित्याग किया जाता है जिसमें कन्यालीक गवालीक भूमालीक स्थापन मृषा कूट साक्षि इत्यादि प्रकारके असत्य भाषणका द्विकरण त्रियोगसे प्रत्याख्यान करे। फिर उक्त अनुव्रतकी रक्षाके वास्ते पांच अतिचारोंका भी परित्याग करे जैसेकि–विचारशून्य होकर किसी पर दोषारोपण करना १, किसीके मर्मयुक्त भेदको प्रगट करना २, स्वदारा मंत्रभेद करना ३, अन्य आत्माओंको मृषा भाषण करनेका उपदेश देना ४, कूट लेख लिखने ५, यह पांच ही अतिचाररूप दोष द्वितीय अनुव्रतकी रक्षाके वास्ते दूर करे, इनके प्रत्यक्ष फलसे लोग अनभिज्ञ नहीं हैं इसी लिये ही इनका विशेष अर्थ नहीं लिखा है ॥

अथ तृतीय अनुव्रत विषय ॥

तीजा अणुव्रत थूलाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं खातर खणी १ गांठड़ी छोड़ी २ तालापड़ि कुंची ३ वाट पाड़ी ४ पड़ी वस्तु धणीयाती जाणी ५ इत्यादिक मोटका अदत्तादाण सगा सम्बन्धि व्यापार सम्बन्धि तथा पड़ी निरधनी वस्तु ते उपरान्त मोटका अदत्तादाण लेवाना पच्चक्खाण जावज्जीवाय दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा

कायसा एहवा तीजा थूल अदत्तादाण विरमण व्रत-ना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं-ज्जहा ते आलोउं तेणाहडे १ तक्करप्पउग्गे २ विरुद्ध रज्जाईक्कम्मे ३ कूड़ तोले कूड़ माणे ४ तप्पडिरूवग ववहारे ५ जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ३ ॥

हिंदी पदार्थ—(तीजा) तृतीय (अणुव्रत) अनुव्रत (थुलाउ) स्थूल (अदत्तादाणाउ वेरमण) अदत्तादानसे निवृत्ति करता हूं (खातर खणी) किसीके घरमे संधि करी हो [भित्ति आदिका तोडना] (गाठड़ी छोड़ी होय) गांठ कतरी हो (तालापडि कुची) अन्यके तालाओंको अन्य कुंजिया लगाई हों (वाट पाड़ी) मार्ग [पथ]में लूटना (पडा वस्तु धणीयाती जाणी) किसीकी महार्घ वस्तु जानकर कि इसका अमुक धनी है वा देखकर उठा ली हो (इत्यादि मोटका अदत्तादाण) इत्यादि स्थूल अदत्तादानका प्रत्याख्यान करता हूं किन्तु (सगा सम्बन्धि) स्वजन सम्बन्धि वस्तु उठा-कर लेनेका त्याग नहीं है, यदि उनको किसी प्रकारका भ्रम न हो, तथा (व्यापार सम्बन्धि) व्यापार सम्बन्धि जैसेकि—आदर्शके नमूनेके वास्ते कोई वस्तु उठाई जाती है (तथा निरधनी वस्तु) तथा जिस वस्तुका खोज करने पर भी स्वामी सिद्ध न हो (ते उपरान्त मोटका अदत्तादाण) इनके विना स्थूल अदत्तदानके (लेवाना पच्चक्खाण) लेनेका प्रत्याख्यान (जावजीवाय) आयु पर्य्यन्त (दुविह) द्विकरण और (तिविहेणं) त्रि-योगसे जैसेकि (न करेमि) न करू (न कारवेमि) और नाहीं चोरी कर-नेका अन्यको उपदेश देकर उनसे चोरी कराऊ (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवा तीजा थूल अ-दत्तादाण विरमण व्रतना) ऐसे तृतीय स्थूल अदत्तादान निवृत्तिरूप व्रत-

के (पंच अइयारा) पांच अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य हैं किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं है (तंज्जहा) तद्यथा (ते आलोउं) उनकी आलोचना करता हूं—जैसेकि (तेनाहडे) चोरीकी वस्तु ली हो (तक्करप्पउग्गे) चोरोंकी सहायता की हो (विरुद्ध रज्जाइक्कम्मे) राज्य विरुद्ध काम किया हो क्योंकि—जो राज्य नियम [कानून] है उसके विरुद्ध वर्तीव करना तृतीय व्रतमें अतिचार रूप दोष है, इसलिए राज्य नियमसे यदि विरुद्ध काम किया हो (कूड़ तोले) न्यूनाधिक तोला हो (कूड़ माणे) वस्त्रादिका माप न्यूनाधिक किया हो (तप्पडिरूवगववहारे) अधिक मूल्यकी वस्तुमें अल्प मूल्यकी वस्तु एकत्व करके विक्रय करना जैसेकि—घृतमें चरबी, दुग्धमें जल, इत्यादि (जो) जो (मे) मैंने (देवसि) दिनमे (अइयारो) अतिचार (कउ) किया है (तस्स) उस (मिच्छा मि दुक्कडं) अतिचारोंसे मै पीछे हटता हूं ॥

भावार्थ—तृतीय अनुव्रतमें स्थूल चौर्य कर्मका परित्याग होता है जैसेकि—संधिका छेदन करना १ गांठ कतरना २ परके ताले अन्य कुंजियोंसे खोलने ३ किसीकी वस्तु उठा लेनी ४ इत्यादि इस प्रकारके चौर्य कर्मोका परित्याग करे। फिर उक्त व्रतकी रक्षाके लिए पांच अतिचार रूप दोषोको भी छोड़ देवे, जैसेकि—चोरोंका माल लेना १ चोरोंकी सहायता करनी २ राज्य विरुद्ध कार्य करने ३ न्यूनाधिक तोलना और मापना ४ बहुमूल्य वस्तुमे अल्प मूल्यवाली वस्तुको एकत्व करके बहु मूल्यके भावमे विक्रय करना ५ इन पांच अतिचारोंको परित्याग करके तृतीय अनुव्रतको ढिकरण और तीन योगोंसे शुद्ध पालन करे क्योंकि—ये नियम उभय लोकमें सुखदायक है जैसेकि—इस लोकमे शान्ति, राज्यसेवा, धर्मरक्षा, परलोकमें आराधक भाव प्राप्त होना अनुक्रमतासे मुक्तिकी प्राप्ति होना एवं अनेक सुखोंकी प्राप्ति होनी है ॥

अथ चतुर्थ अनुव्रत विषय ॥

*चौथुं अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमणं सदारा संतोसिए अवसेसं मेहुण सेववाना पच्चक्खाण ए पुरुषने अने स्त्रीने सभर्तार संतोसिए अवसेसं मेहुणनुं पच्चक्खाण अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाए करी मेहुण सेववानुं पच्चक्खाण होय तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि मेहुणनुं पच्चक्खाण जावज्जीवाय देवता देवी सम्बन्धि दुविहेणं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि एगविहं एगविहेणं न करेमि कायसा एहवा चौथा स्थूल मेहुण विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा

---

* चतुर्थ व्रतधारी श्रावकोंको इस प्रकारसे पाठ पठन करना चाहिये–जैसेकि–(चौथा अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमण सदारा संतोसिए अवसेस मेहुण पच्चक्खाण) इस प्रकारसे तो श्रावक पढे, और श्राविकायें निम्न प्रकारसे पढे–(चौथु अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमण सभर्त्तार संतोसिए अवसेस मेहुणनु पच्चक्खाण) यदि स्त्री पुरुषको सर्वथा ही कायकरके मैथुन आसेवनका प्रत्याख्यान हो तिनको निम्न प्रकारसे पाठ पढना चाहिये। चौथु अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमण देवता देवी सम्बन्धि दुविह तिविहेण इत्यादि मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि एगविह एगविहेण न करेमि कायसा इत्यादि तथा श्री उपासक दशाङ्ग सूत्रमें महाशत्तकजीने नन्नत्थ रेवतीपमुखा तेरस्स दाराण अवसेस मेहुणाउ वेरमणं इत्यादि उक्त सूत्रसे सिद्ध होता है जितनी स्त्रियोंका आगार रखा हो उतने प्रमाणसे उपरान्त मैथुन सेवन प्रत्याख्यान करे, प्रतिक्रमण करनेवालोंको योग्य है कि वे अपने २ यथेष्ट इस पाठको पढे ॥

ते आलोउं इत्तरिय परिग्गहियागमणे अपरिग्गहियागमणे अणंगक्रीडा परविवाह करणे काम भोगेसु तिव्वाभिलासा जो मे देवसि अइयार कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—*(चौथुं अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमणं) चतुर्थ अनुव्रत स्थूल मैथुनसे निवृत्ति करना है जैसेकि–(सदारा संतोसिए) स्वस्त्रीपर ही संतोष धारण करना (अवसेसं) अवशेष (मेहुणनुं पच्चक्खाण) मैथुन आसेवनका प्रत्याख्यान (ए पुरुषने) यह नियम तो पुरुषोंका है (अने स्त्रीने) परतु स्त्रियोंको निम्न प्रकारसे कहना चाहिये (सभर्तार संतोसिए (स्वभर्तार ऊपर ही संतोष करना) अवसेसं मेहुणनुं पच्चक्खाण (स्वभर्त्ताके विना अन्यसे सर्वथा मैथुन सेवनेका प्रत्याख्यान) अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाए करी मैथुन सेववानुं पच्चक्खाण होय (यदि स्त्री और पुरुषको प्रथमसे ही काय करके मैथुन सेवनेका प्रत्याख्यान होवे तो (तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि) उनको देव, मनुष्य, ति-

---

* चतुर्थ व्रत धारण करनेका पाठः—

अहन्नं भन्ते तुम्हाणं समीवे उरालिय वेउव्विय थूलगं मेहुणं पच्चक्खामि इमं बंभचेरवयं उवसं पवज्जामि तथदिव्वं दुविहं तिविहेण तेरिच्छं एगविहं तिविहेणं मणुयं एगविहं तिविहेणं आहागहिय भंगाहिय भंगएणं तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि तज्जहा दव्वउ, खित्तउ, कालउ, भावउ, तथदव्वउणं इमं बंभवयं उवसं पवज्जामि खित्तउणं इत्थना अन्नत्थवा कालउण जावज्जावाए भावउणं जाव गहाइणा न गिण्हेजामि जावच्छलेणं न छलिज्जामि, जाव सन्निवाएणं नाभिभविज्जामि जाव अन्नेणवा केणथरोयायं केण न परिभविज्जामि ताव इमं बंभचेरवयं अरिहंत सक्खियं देव सक्खियं अप्पसक्खियं अणुसरामि ॥

र्यंच सम्बंधि (मेहुणतुं पच्चक्खाण) मैथुन सेवनेका प्रत्याख्यान (जावजी-वाय) सर्व आयु पर्यन्त (देवता देवी सम्बन्धि) देव देवी सम्बन्धि (दु-विह तिविहेणं) द्विकरण और तीन योगसे जैसेकि—(न करेमि) मैथुन कर्म स्वय सेवन न करू (न कारवेमि) नाहीं औरोंसे आसेवन कराऊं अ-पितु तीन योगोंसे जैसेकि—(मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि) किन्तु मनुष्य और तिर्यग् सम्बन्धि (एगविहं) एक करण और (एगविहेणं) एक ही योग करके जैसेकि—(न करेमि) न करूं (कायसा) काय करके (एहवा चौथा थूल मेहुण विरमण व्रतना) ऐसे पूर्वोक्त कथन किए हुए चतुर्थ मैथुन वि-रातिरूप व्रतके (पच्च) पाच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य है किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं हैं क्योंकि इनके आसेवनसे सदार संतोषी व्रत खडित हो जाता है (तज्जहा ते आलोउ) जैसेकि—(इत्तरिय परिग्गहियागमणे) यह सर्व अतिचार सदार संतोषीको स्वकाया करके ही होते है इसलिए इनका पदार्थ—श्रीमान् परम पडित आचार्यवर्य श्री सोहनलालजी महाराजजी निम्न प्रकारसे करते है, जिसका कारणव-शात् बाल्यावस्थावाली कन्याके साथ विवाह हो गया है यदि वे अप्राप्य यौवनकालमें स्त्रीभोग करे तो प्रथम अतिचाररूप दोष होता है. द्वितीय अ-तिचार (अपरिग्गहियागमणे) जिस कन्याके साथ उपविवाह [मागना] तो हो गया है किन्तु आर्ष विवाह नही हुआ है यदि उसके साथ सग करे तो द्वितीय अतिचार है (अनंगकीडा) अनग नाम कामदेवका है कीड़ा नाम क्रीड़ा अर्थात् रमण करनेका है सो कामको आशा पर अन्य प्रकारसे उपहास्यादि क्रियाये करनी अनग यदि नञ् समास करें तो नअग अनंग अर्थात् अंगसे भिन्न स्थानोपरि कुचेष्टा करना उसका ही नाम अनग क्रीडा है इसी अर्थमे सर्व प्रकारकी कुचेष्टाये समाविशित हो जाती है, सो यदि अनंग क्रीडा करे तो तृतीय अतिचार है, चतुर्थ अतिचार (पर विवाह करणे) यदि परके उपविवाह हुएको तोड़कर अपना विवाह कर

लेवे तो चतुर्थ अतिचार है। यदि पर विवाहका प्रथमवत् ही अर्थ किया जाए तो वह अर्थ सूत्रानुसार संघटित नहीं होता है क्योंकि जिस बातका श्रावकने नियम ही नहीं किया है तो भला उसका अतिचार कहांसे होगा? किन्तु जो स्वदारसंतोष व्रत है उसमें उक्त लिखा हुआ अर्थ युक्तिपूर्वक सिद्ध है, इस लिये किसीके उपविवाहको छीन कर उसे स्वयं विवाह कर लेना सोई चतुर्थ अतिचार है। फिर (कामभोगेसु तिव्वाभिलासा) काम भोगोंमें तीव्र अभिलाषा की हो तथा कामभोग आसेवनके लिये औषधियोंका सेवन करना स्नान, व्यायाम, कामकी आशा पर तथा मादक द्रव्य ग्रहण करने यह पंचम अतिचार है। विकार केवल मोहनीय कर्मकी प्रबलतासे उदय होता है उसे वैराग्यादि द्वारा उपशम करना सुपुरुषोंका लक्षण है, न कि-उदय करना, इस लिए यदि उक्त प्रकारके अतिचार आसेवन किए हों तो (तस्स) उनका (मिच्छा मि दुक्कडं) अतिचार रूप पाप मिथ्या हो॥

भावार्थ—श्रावकका चतुर्थ अनुव्रत स्वदारा संतोष है जिसका अर्थ यही है कि अपनी स्त्री पर संतोष करना तथा परस्त्री वेश्या आदिका परित्याग करना, क्योंकि कामकी उपशान्ति केवल संतोष पर ही निर्भर है अन्य पदार्थों पर नहीं. सो परदारा वृत्ति अर्थात् स्वदारा संतोषी पुरुष देव देवीके साथ मैथुनका त्याग द्विकरण तीन योगसे करे और मनुष्य वा तिर्यग् सम्बन्धि एक करण एक ही योगसे करे और जिसके सर्वथा ही मैथुन सेवनका परित्याग होवे जिस भांगे करे उसी भांगेकी आलोचना करे, किन्तु इस व्रतके जो पांच अतिचार है उनका स्वरूप पदार्थमें लिख दिया है, किन्तु जो प्रथम अर्थ विधवा प्रमुखका वा वेश्यादिका करते है वह अर्थ युक्तिपूर्वक सिद्ध नहीं होता है, क्योंकि स्वदार संतोषी व्रतके ग्रहण करने पर ही उक्त वेश्यादिका परित्याग होता है, इस लिए जो अर्थ श्री आचार्य श्री पूज्यपाद सोहनलालजी महाराजने प्रतिपादन किया है वही अर्थ युक्तिसाधित है॥

अथ पंचम अनुव्रत विषय ॥

पांचमुं अणुव्रत थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं खित्त वत्थुनुं यथा परिमाण हिरण्ण सोवण्णनुं यथा परिमाण धन धाण्णनुं यथा परिमाण दुप्पद चउप्पदनुं यथा परिमाण कुविय धातुनुं यथा परिमाण ए यथा परिमाण कीधुं छे ते उपरांत पोतानुं करी परिग्रह राखवानां पच्चक्खाण जावजीवाय एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा पांचमा थूल परिग्रह परिमाण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोउं खित्त वत्थु प्पमाणाइक्कमे हिरण्ण सोवण्ण प्पमाणाइक्कमे धन धाण्ण प्पमाणाइक्कमे दुप्पद चउप्पद प्पमाणाइक्कमे कुविय धातु प्पमाणाइक्कमे जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(पांचमुं अणुव्रत थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं) पांचवां अनुव्रत स्थूल [मोटा] परिग्रहसे धन धान्यादि निवृत्तिरूप उसका विवरण करते है जैसेकि—(खित्त वत्थुनुं यथा परिमाण) क्षेत्र [खेत] वा आरामादिकी भूमिका अथवा हट्ट गृहशालादिका यावत् [जितना] परिमाण किया हुआ है (हिरण्ण) चादी (सोवण्णनुं) सुवर्णका (यथा परिमाण) यावत् परिमाण किया हुआ है (धन) धन और (धाण्णनु) गोधूमादि धान्यका (यथा परिमाण) यावत् परिमाण किया हुआ है (दुप्पद) द्विपद मनुष्यादि (चउप्पदनुं) चतुष्पद गवादिका (यथा परिमाण) यावत् परिमाण किया हुआ है (कुविय धातुनुं) घरकी यावत् सामग्रीयें है

अथ षष्टम व्रत विषय ॥

छट्ठुं दिशिव्रत उर्ध्व दिशानुं यथा परिमाण अधो दिशानुं यथा परिमाण तिरिय दिशानुं यथा परिमाण ए यथा परिमाण कीधुं छे ते उपरांत सइच्छायें कायायें जइने पंच आस्रव सेववाना पच्चक्खाण जावजीवाय दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवा छट्ठा दिशि व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोउं उड्ढ दिसि प्पमाणाइक्कमे अहो दिसि प्पमाणाइक्कमे तिरिय दिसि प्पमाणाइक्कमे खित्त वुड्ढि सयंतरद्धाए जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(छट्ठुं दिशि व्रत) छट्ठा दिग्व्रत जो दिशाओंका परिमाण किया जाता है जैसे कि-(उर्ध्व दिशानुं यथा परिमाण अधो दिशानुं यथा परिमाण) उर्ध्व-ऊंची दिशाका यावत् [जितना] परिमाण किया हुआ है, नीची दिशाका यावत् परिमाण किया हुआ है (तिरिय दिशानुं यथा परिमाण) तिर्यग् दिशाओंका जैसे कि—पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशाओंका यथा परिमाण (ए यथा परिमाण कीधुं छे) यह यावत् परिमाण किया हुआ है (ते उपरान्त) परिमाण भूमिकाके विना (सइच्छायें) स्व इच्छा करके या (कायायें) शरीर करके (जइने) जा करके (पंच) पांच (आस्रव) आस्रव [कर्म आनेके मार्ग] (सेववाना) आसेवन करनेका (पच्चक्खाण) प्रत्याख्यान (जावजीवाय) यावत् जीव पर्य्यन्त (दुविहं)

ट्टि करण और (तिविहेणं) तीन योगसे करता हूं जैसे कि—(न करेमि) आसेवन न करूं और (न कारवेमि) आसेवन न कराउं (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवा) ऐसे (छट्ठा दिशि व्रतना) षष्टम दिग्व्रतके (पंच अइयारा) पांच अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य हैं किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं हैं (तंजहा) तद्यथा (ते आलोउं) उनकी आलोचना करता हूं, जैसे कि—(उड्ढ दिसि प्पमाणाइक्कमे) ऊंची दिशाका परिमाण उल्लंघन किया हो (अहो दिसि प्पमाणाइक्कमे) नीची दिशाका परिमाण अतिक्रम किया हो (तिरिय दिसि प्पमाणाइक्कमे) तिर्यग् दिशाका परिमाण अतिक्रम किया हो (खित्त वुड्ढि) क्षेत्रकी वृद्धि की हो जैसे कि—कल्पना करो कि—किसी व्यक्तिने चारों ओर ५०० पांचसो कोशका परिमाण किया हुआ है, फिर उसने विचारा कि पूर्व दिशामें तो विशेष कार्य रहता है अपितु दक्षिण दिशामें कुछ काम नहीं पड़ता. इस लिये परिमाणसे अधिक पूर्वमें कर लूं और दक्षिण दिशामें स्वल्प कर दूं इत्यादि कार्य किया हो (सयंतरद्धाए) संदेह होने पर फिर भी आगे ही गमण किया हो अर्थात् जैसे सौ योजन तक जानेका परिमाण किया हुआ है, और मार्गमें जाते २ अनुमानसे ज्ञान किया कि, स्यात् मैं यथा प्रमित तो आ गया हूंगा ऐसा संदेह होने पर भी आगे जाना यह नियममें दोष है। (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मेरा दिन सम्बन्धि अतिचार रूप पाप है (तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) वे निष्फल हो और उस अतिचार रूप पापसे मैं पीछे हटता हूं ॥

भावार्थ—षष्टम दिग्व्रतमें षट् दिशाओंका परिमाण किया जाता है जैसे कि—पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ऊर्ध्व, अधो। परिमाणसे बाहिर स्थानोंमें पांच आस्रव (हिंसा, असत्य, अदत्त, अब्रह्मचर्य, परिग्रह) इनके आसेवन करनेका द्विकरण और तीन योगसे प्रत्याख्यान करे, फिर पांच ही अतिचारोंको वर्जे, इस प्रकार षष्टम व्रतकी आलोचना करे। फिर सप्तम व्रतकी आलोचना करे—

अथ सप्तम व्रत विषय ॥

सातमुं व्रत उवभोग परिभोगविहं पच्चक्खायमाणे उल्लणियाविहं दंतणविहं फलविहं अभ्भंगणविहं उवट्टणविहं मज्जणविहं वत्थविहं विलेवणविहं पुप्फविहं आभरणविहं धूपविहं पेजविहं भक्खणविहं उदनविहं सूपविहं विगयविहं सागविहं माहुरविहं जिमणविहं पाणीविहं मुखवासविहं वाहनिविहं पाहनिविहं सयणविहं सचित्तविहं दव्वविहं इत्यादिकनुं यथा परिमाण कीधुं छे ते उपरान्त उवभोग परिभोग भोगनिमित्ते भोगववाना पच्चक्खाण जावजीवाय एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा सातमां उवभोग परिभोग दुविहे पन्नते तंज्जहा भोयणाउय कम्मउय भोयणाउ समणोवासयाणं पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं सचित्ताहारे सचित्त पडिबद्धाहारे अप्पोलि ओसहि भक्खणयाय, दुप्पोलि ओसहि भक्खणयाय तुच्छोसहि भक्खणयाय जो मे देवसि अइयार कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ तत्थणं जे ते कम्मउणं समणोवासयाणं पन्नरस्स कम्मदाणाइं जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते

आलोउं इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दंतवणिज्जे लक्खवणिज्जे रसवणिज्जे केसवणिज्जे विसवणिज्जे जंतपिल्लणिया कम्मे निल्लंच्छणिया कम्मे दवग्गि दावणिया कम्मे सरदहतलाय परिसोसणिया कम्मे असईजण पोसणिया कम्मे जो मे देवसि अइयार कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(सातमुं व्रत) सप्तम व्रत (उवभोग) उपभोग—जो वस्तु एक ही वार आसेवन करनेमें आवे उसको उपभोग कहते है जैसे कि—अन्नादि तथा (परिभोगविहं) परिभोग उसका नाम है जो पदार्थ पुनः २ आसेवन करनेमें आवे जैसे कि—वस्त्र और आभरण प्रमुखका (पच्चक्खायमाणे) प्रत्याख्यान करता हुआ* निम्नलिखित वस्तुओंका प्रमाण करे

---

* द्रव्य परिमाणमें ग्रहण करने योग्य पदार्थोंका ग्रहण करना सिद्ध किया गया है, अतः साथ ही मनुष्य आहारका भी विवेचन हो गया है क्यों कि—श्री स्थानांग सूत्रके चतुर्थ अध्यायके चतुर्थ उद्देशमें लिखा है कि—मणुस्साणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते तंजहा असणे पाणे खाइमे साइमे (इति सूत्रम्) इसका अर्थ यह है कि—मनुष्योंका चार प्रकारसे आहार प्रतिपादन किया गया है—जैसे कि—अन्न १ पानी २ खादिम मिठाइ आदि ३ स्वादिम जैसे ताम्बूलादि ४ । इस सूत्रसे सिद्ध होता है कि—मनुष्य मात्रका उक्त चारों प्रकारका ही आहार है किन्तु मासभक्षण तो केवल पशु आहार ही बतलाया गया है । मासभक्षणका फल केवल नरक ही कथन किया है जैसे कि—चउहिं ठाणेहिं जीवाणे रतित्ताए कम्मं पगरेति तंजहा महारम्भयाते महापरिग्गहताते पचेंदिय वहेणं कुणिममाहारेणं ॥

अर्थ—चार कारणोंसे जीव नरकायुको बांध लेते हैं जैसे कि—महा हिंसासे १ महा परिग्रहसे २ पंचेंद्रिय वधसे ३ और मांस भक्षणसे ४ । और आव-

जैसेकि-(उल्लणियाविहं) स्नानके पीछे जिस वस्त्रसे शरीर पूंछा जाता है उस वस्त्रकी विधिका परिमाण (दंतणविह) दांतनोंका परिमाण, विधि शब्दका अर्थ नाना प्रकारका जानना चाहिये जैसेकि-दांतनोंके लिये कति-

---

ककी गति केवल स्वर्गकी होती है इस लिये मांसाहार मनुष्य मात्रके लिये अभक्ष्य है, अतः साथ ही मांसके सहचारिणी मदिरापान भी अभक्ष्य है क्यों कि-सूत्रोंमें इसके अनेक दोष वर्णन किये गए हैं तथा पान तो करना दूर रहा किन्तु इसके विक्रियका भी रस वनजमें निषेध किया गया है और नरकोंमें मांसमक्षण और सुरापान करनेवालोंकी गति इस प्रकारसे वर्णन की गई है-जैसे कि—

तुहं पियाइं मंसाइं, खडाइं सोल्लगाणिय।
खाविओमिस मंसाइं, अग्गिवन्नाइणेगसो ॥ ७० ॥
तुहंपिया सुरासीहू, मेरओय महूणिय।
पाइओमिजलंतीओ, वसाओ रुहिराणिय ॥ ७१ ॥

उत्तराध्ययन सूत्र अ० १९ ॥

भावार्थ—मृगापुत्रजी अपने मातापिताजीको कहते हैं कि-हे माता और पिताजी! मुझको नरकोंमें परमाधर्मियोंने इस प्रकारसे कहा कि-भो नारक! तुमको मांसभक्षण अतिप्रिय था, तू मांसके खंड और सोले (पका कर) करके खाता था, अब हम तुमको तुम्हारा मांस अग्निके समान उष्ण करके भक्षण कराते हैं। उन्होंने फिर उसी प्रकार मेरे साथ वर्ताव किया जैसे कि-वे कहते थे, किन्तु एक वार नहीं अपितु अनेकश वार उन्होंने मेरे साथ वर्ताव किया ॥७०॥ और फिर कहा कि-तुमको सुरा, सिंधु, मेरक, मधुनि इत्यादि भेदोंकी मदिरा भी प्रिय थी इस लिये अब तुमको उसके स्थान पर चरबी और रुधिर उष्ण करके पीलाया जाता है अपितु उन्होंने जैसे कहा था वैसे ही किया ॥७१॥ इन पाठोंसे सिद्ध हुआ कि-भक्ष्याभक्ष्य और पेयापेय आदिका विचार करके मदिरा तथा मांसका परित्याग करना चाहिये क्योंकि-मांस और मदिरा यह दोनों पदार्थ श्रावकके लिये अभक्ष्य हैं अपितु जो भक्ष्य पदार्थ है उनका प्रमाण ऊपर कहा गया है ॥

पय वृक्षोंका परिमाण करना इसी प्रकार आगे भी जान लेना (फलविहं) फल विधिका परिमाण (अम्भंगणविहं) आभंगण विविका परिमाण, जैसे तैलादिका (उवट्टणविहं) उवट्टनेका परिमाण (मज्जणविहं) मज्जन [स्नान] विधिका परिमाण वा पानीका परिमाण (वत्थविहं) वस्त्र विधिका परिमाण (विलेवणविहं) चंदनादि विलेपन विधिका परिमाण (पुप्फविहं) पुप्प विधिका परमाण (आभरणविहं) आभूपणोंका परिमाण (धूप विहं) धूप विधिका परिमाण (पेज विहं) पीनेवाली वस्तुओंका परिमाण (भक्खणविहं) खाद्यमादि वस्तुओंका परिमाण (उदन विहं) शाल्यादिका परिमाण (सूपविहं) मूंगी प्रमुख दालिका परिमाण (विगयविहं) विगय [घृत, तैल, दूध, दधि, गुड, नवनीत (माखन) मधु आदि] का परिमाण (सागविहं) शाकादि विधिका परिमाण (माहुरविहं) माधुर विधिका परिमाण जैसे कि—आम्रादि फल (जिमणविह) अमुक पदार्थका आहार करूंगा तथा नित्त पदार्थोंका परिमाण (पाणीविहं) जल विधिका परिमाण जैसे कि अमुक कूपादिका जल सेवन करूंगा (मुखवासविहं) लवंग सुपारि प्रमुखका परिमाण (वाहनिविहं) रथ, रेलगाडी, अश्व, हस्ती, यका, इत्यादि वाहनोंका परिमाण (पाहनिविहं) पादोंकी रक्षा अर्थे जूती इत्यादि विधिका परिमाण (सयणविहं) शय्या पर्यंकादिका परिमाण (सचित्तविहं) सचित्त वस्तुओंका परिमाण जैसेकि—पांच स्थावरोंका सेवनार्थे परिमाण करना (दव्वविहं) द्रव्य विधिका परिमाण जैसे कि—आज दिन कतिपय द्रव्य अंगीकार करूंगा, कल्पना करो किसी व्यक्तिने ५ द्रव्योंके विना और सर्व पदार्थोंका नियम कर दिया है तो फिर पाच द्रव्य यह इस प्रकारसे ग्रहण करता है, कि—एक द्रव्य अन्न, द्वितीय द्रव्य जल, तृतीय द्रव्य सूप, चतुर्थ द्रव्य शाक, पंचम द्रव्य घृत, (इत्यादिकनुं यथा परिमाण कीधुं छे) इत्यादि पदार्थोंका जैसा परिमाण किया हुआ है (ते उपरान्त) उनके विना (उवभोग) जो एक वार आसेवन करनेमें आवे तथा (परिभोग) जो वस्तु पुनः २ आसेवन करनेमें आवे (भोग निमित्ते) भोगनेके वास्ते

(भोगवत्ताना पच्चक्खाण) खानेका प्रत्याख्यान (जावजीवाय) यावज्जीव पर्य्यन्त (एगविहं) एक करण (तिविहेगं) तीनों योगोंसे जैसे कि—(न करेमि) न करुं (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवा सातमा उवभोग परिभोग) ऐसे सप्तम उपभोग परिभोग (दुविहे) द्वि प्रकारसे (पण्णत्ते) प्रतिपादन किया गया है (तंज्जहा) तद्यथा—जैसे कि—(भोयणाउय) एक भोजन सम्बन्धि (भोयणाउय समणोवासयाण) भोजनव्रत सम्बन्धि श्रमणोपासकोंको (पंच) पांच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य तो हैं किन्तु (न समायरियव्वा) ग्रहण करने योग्य नहीं हैं (तज्जहा) तद्यथा (ते आलोऊ) उनकी आलोचना करता हूं (सचित्ताहारे) सचित्त वस्तुओका परित्याग होनेपर सचित्त वस्तुओंका आहार किया हो (सचित्त पडिवद्धाहारे) सचित्त प्रतिबद्ध पदार्थोंका आहार किया हो जैसे, गूंद तत्काल वृक्षोंसे उतार कर भक्षण करना तथा वनस्पतिके पत्रोपरि कंदोई [हलवाई] की हट्टोपरि वस्तुओका खाना (अप्पोलि ओसहि भक्खणया) अपक्वोपधिका आहार किया हो तथा तत्कालकी अचित्त हुई वस्तुका आहार किया हो (दुप्पोलि ओसहि भक्खणया) दुःपक्वोषधिका आहार किया हो जैसेकि होला प्रमुख, (तुच्छोसहि भक्खणया) जो पदार्थ खानेकी अपेक्षा गेरनेमें विशेष आवे उनका आहार किया हो जैसे संघाटक, इक्षु—खंड इत्यादि तथा तुच्छौषधि आहार उसका नाम भी है जिसके अतीव भक्षणसे भी तृप्ति न होवे जैसें खसखासादि (जो मे) जो मैं ने (देवसि) दिन सम्बन्धि (अइयारो) अतिचार (कउ) किए हुए हैं (तस्स) उसका (मिच्छा मि दुक्कडं) जो अतिचाररूप पाप हैं वह निष्फल हो॥ (तथणं जे ते) उनमेंसे जो (कम्मउणं) कर्मों सम्बन्धि (समणोवासयाणं) श्रमणोपासकोंको दोष लगते है वे निम्न प्रकारसे हैं (पन्नरस कम्मादाणाइं) पञ्चदश कर्मादान जो कर्म आनेके पंचदश मार्ग है वही अतिचार हैं किन्तु श्रावकोंको (जाणियव्वा) जानने योग्य तो हैं परंतु

(न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं हैं जैसेकि-(तंजहा) तद्यथा (ते आलोउ) उनकी आलोचना करता हूं-(इंगालकम्मे) अंगार कर्म [कोयला प्रमुखका व्यापार] अग्नि सम्बन्धि व्यापार किया हो (वणकम्मे) वन छेदन करना अर्थात् वन कटवाना (साडीकम्मे) शकटादि बनवाकर विक्रिय किए हों (भाडिकम्मे) शकटादि वा ऊंट, अश्व, वृषभ, खर, इत्यादि पशु भाड़े पर दिए हों (फोडीकम्मे) पृथिवीका स्फोटन कर्म वा पाषाणादिका स्फोटन कर्म किया हो (दंतवणिज्जे) दाँतोंका व्यापार किया हो जैसेकि-हस्तीके दाँत, कस्तूरी, मृगचर्म प्रमुख (लक्खवणिज्जे) लाखका वणज किया हो (रसवणिज्जे) रसोंका वणज किया हो जैसे-दुग्ध, तैलादि वा मदिरादि, (केसवणिज्जे) द्विपद-चतुष्पद जीवोंका व्यापार किया हो (विसवणिज्जे) विषका व्यापार किया हो (जंतपिलणिया कम्मे) यंत्रपीड़न कर्म किया हो जैसे कि-घराट, कोल्हू ऊखल, मूसलादि कर्म (निल्लंच्छणिया कम्मे) निर्लांछण कर्म जैसे वृषभादिको नपुसक करना (दवग्गि दावणिया कम्मे) वनको अग्नि लगाई हो तथा दावाग्निका उपदेश किया हो (सर) तड़ाग (दह) द्रह, कुड, (तलाय) तड़ाग चतुष्कोण प्रमुखके जलको (परिसोसणिया कम्मे) परिशोषण किया हो अर्थात् सुकाया हो (असइ जण पोसणिया कम्मे) असती जनोंकी पोषणा की हो जैसे-आहेटक कर्मोंके वास्ते श्वानादि वा श्येनादि [बाज़] वा मार्जारादि पोषण किए हों (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मेरा दिवस सम्बन्धि अतिचार किया हुआ है (तस्स मिच्छा मि दुक्कड) उस अतिचार रूप पापका फल निष्फल हो ॥

भावार्थ—सप्तम व्रत उपभोग परिभोग है, जिसका अर्थ है कि जो पदार्थ एक वार ग्रहण करनेमें आवें तथा बारम्बार ग्रहण करनेमें आवे उनको विना परिमाण न आसेवन करे, जैसेकि-स्नानादि और पंचदश कार्य जिनसे अधिक कर्मोंका बन्ध होता है, उनका सर्वथा ही परित्याग करे। कदाचित्

कर्मोदयसे *रसवाणिजादि कर्म करने पड़ जायें तो अयत्नसे काम कदापि न करे, क्योंकि अयत्नसे अनेक जीवोंकी घात होना संभव है, अतः विना यत्न कोई भी क्रिया न करे। जिन लोगोंको स्नानादि विषय शंका रहा करती है उनको योग्य है सप्तम व्रतको पठन करनेका अभ्यास करें, फिर इस व्रतके पाचों ही अतिचारोंको वर्जके उक्त व्रतको शुद्धतापूर्वक पालन करें ॥

अथ अष्टम व्रत विषय ॥

आठमुं अनर्थदंड विरमण व्रत ते चउविहे अणत्थादंडे पण्णत्ते तंजहा अवज्झाणायरिय पमाया-यरिय हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे एहवा अनर्थदंड सेववाना पच्चक्खाण जावजीवाय दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवा आठमा अनर्थदंड विरमण व्रतना पंच अइयारा जा-णियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोऊं कंदप्पे कुक्कुइए मोहरिए संजुत्ताहिगरणे उवभोग परिभोग अइरत्ते जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(आठमुं) अष्टम (अनर्थ दंड) अनर्थदंड—विना ही कारण जीवोकी हिंसा करना वा अन्य आत्माओको दंडित करना (विर-मण व्रत) इससे निवृत्ति भूत जो आठवां व्रत है, (ते) वह (चउविहे) चतुर्विधसे (अणत्थादंडे) अनर्थ दंड (पण्णत्ते) प्रतिपादन किया है (तंजहा)

---

* किन्तु मदिरादि पदार्थोंका व्यापार तो कभी भी न करे अपितु इनका सर्वथा ही त्याग करे ॥

तद्यथा (अवज्झाणायरिय) अपध्यान करना जैसेकि—अन्य आत्माओंके हानि-कारक विचार करने (पमायायरिय) प्रमादाचरण करना अर्थात् धार्मिक कार्योंको परित्याग करके अन्य कार्योंमें परिश्रम करते रहना तथा घृतादि-के बरतन अयत्नसे रखना (हिंसप्पयाणे) हिंसाकारी वस्तुओंका दान करना जैसे शस्त्रदान इत्यादि (पावकम्मोवएसे) अन्य आत्माओंको विना ही प्रयोजन पापकर्मोंका उपदेश करना जिसके द्वारा वह पापकर्ममें लग जावें (एहवा) ऐसे (अनर्थदंड) अनर्थदंडके (सेवनाना) आसेवन करनेका (पच्चक्खाण) प्रत्याख्यान (जावजीवाय) यावत् जीव पर्य्यन्त (दुविहं) द्विकरण और (तिविहेणं) तीन योगोंसे (न करेमि) स्वयं अनर्थदंडको सेवन न करूं (न कारवेमि) नाहीं अन्य जीवोंसे अनर्थदंड सेवन कराऊं (मणसा) मनसे (वयसा) वचनसे (कायसा) कायसे (एहवा) ऐसे (आठवां) अष्टम (अनर्थदंड विरमण व्रतना) अनर्थदंड विरमण व्रतके (पंच) पांच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य तो है किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं है, (तंजहा) तद्यथा (ते) उनकी (आलोउ) आलोचना करता हू (कंदप्पे) कामको जागृत करनेवाली कथायें की हों, (कुकुइए) कुचेष्टा की हो जैसेकि—भांडकी तरह विकृति भाव किया हो (मोहरिए) विचाररहित होकर वार्तालाप किया हो, तथा मुखारिवत् वर्तात्र किया हो (संजुताहिगरणे) अधिकर-णका संयोग किया हो अर्थात् विना परिमाण शस्त्रादिका संग्रह किया हो (उवभोग परिभोग अइरत्ते) उपभोग वस्तुओंमें वा परिभोग वस्तुओंमें अति मूर्च्छित हो गया हों, तथा परिमाणसे अधिक संग्रह किया हो तव पाठ (उवभोग परिभोग अइरत्ते) ऐसे पढ़ा जाता है (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मैंने दिनमें अतिचार किए हुए हैं (तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) उन अतिचाररूप पापोंका फल निष्फल हो ॥

भावार्थ—आठवें अनर्थदंड विरमण व्रतमें विना प्रयोजन काम करनेका परित्याग है जिसके करनेसे कर्म्मोंका महा बंध न हो और कार्यसिद्धि कुछ भी न हो, जैसे अपध्यान करना, अथवा घृतादिके भाजनोंकी पूरी रक्षा न करनेसे पिपीलिकादि जीवोंकी हिंसा हो जाती है और इस व्रतके भी पांच ही अतिचार है जैसेकि—कंदर्पकी वार्ता करनी १ कुचेष्टा करना २ विचारसे शून्य होकर भाषण करना ३ अधिकरण (शस्त्रों)का संग्रह करना ४ उपभोग परिभोग पदार्थ प्रमाणसे अधिक सेवन करने तथा प्रमाण युक्तमें ही अति मूर्च्छित होना ५ इन पाचों ही अतिचारोंका परित्याग करके अष्टम व्रतको शुद्ध पालन करे, अनर्थदंड कदाचित् भी सेवन न करे ॥

अथ नवम व्रत विषय ॥

नवमुं सामायिक व्रत॰ सावज्जजोगनुं वेरमणं जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवा सद्दहणा परूपणा करिये तिवारे फरसनायें करी शुद्ध एहवा नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोउं मणदुप्पणिहाणे वयदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे सामाइयस्स (सइविहुणे) अकरणियाए सामाइयस्स अणवुट्ठियस्स करणियाए जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(नवमुं) नवमा (सामायिक व्रत) समतारूप भाव

(सावज्जजोगनुं) पापयुक्त योगोंसे (वेरमणं) निवृत्ति करना (जाव) यावत् काल पर्यन्त (नियमं) सामायिकका नियम है तावत्काल पर्यन्त (पज्जुवासामि) पर्युपासना करना हूं अर्थात् सामायिकके कालको सेवन करता हूं (दुविहं) द्विकरण (तिविहेणं) तीन योगोंसे जैसेकि–(न करेमि) सावद्य योगोंको सेवन न करूं (न कारवेमि) नाही आसेवन कराऊं (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवी) इस प्रकारके (सद्दहणा) सामायिककी श्रद्धा [रुचि] (परूपणा) विवेचना (करियें तिवारे फरसनायें करो शुद्ध) जब करी जाये अर्थात् सामायिक स्पर्श की जाये तब ही शुद्ध होती है (एहवा) ऐसे (नवमा) नवमे (सामायिक व्रतना) सामायिक व्रतके (पंच) पांच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य तो हैं किन्तु (नसमायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं हैं (तंजहा) तद्यथा (ते) उनकी (आलोउं) आलोचना करता हूं (मणदुप्पणिहाणे) मन दुष्ट वर्ताया हो (वयदुप्पणिहाणे) वचन दुष्ट उच्चारण किया हो (कायदुप्पणिहाणे) कायका योग दुष्ट धारण क्रिया हो (सामाइयस्स अकरणियाए) शक्ति होने पर भी सामायिक न करी हो, तथा, सामायिक करके सामायिकके कालको विस्मृत कर दिया हो फिर (सामाइयस्स) सामायिकको (अणवुट्ठियस्स करणियाए) विना काल पार लिए हो (जो मे) जो मैंने (देवसि) दिवस सम्बन्धि (अइयारो कउ) अतिचार किए हुए है (तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) उन अतिचार रूप पापोंका फल निष्फल हो ॥

भावार्थ—नवमे सामायिक व्रतको द्विकरण तीन योगोंसे धारण करके पाचों ही अतिचारोंको छोड़े। सम, आय, इक, इनकी संधि करनेसे सामायिक शब्द सिद्ध होता है, जिसका अर्थ ही यह है, कि जिसके करनेसे शान्तिका लाभ होवे उसीका ही नाम सामायिक व्रत है अपितु सावद्य योगोंका परित्याग कर फिर उस कालको शुभ क्रियामें ही व्यतीत करे ॥

अथ दशम व्रत विषय ॥

§दशमुं देसावगासिक व्रत दिन प्रते प्रभात थकी प्रारंभीने पूर्वादिक छ दिशे जेटली भूमिका मोकली राखी छे ते उपरांत सइच्छायें कायायें जइने पांच आस्रव सेववाना पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तथा जेटली भूमिका मोकली राखी छे ते मांहिज जे द्रव्यादिकनी मर्यादा कीधी छे ते भोगववी ते उपरांत उवभोग परिभोग भोग निमित्ते भोगववाना पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा दशवां देशावकाशिक व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोउं आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे,

---

§ वर्तमान कालमें संवर करनेकी प्रथा निम्नलिखितानुसार है—

द्रव्य थकी पांच आस्रव सेवनेका पच्चक्खाण, क्षेत्र थकी लोक प्रमाण तथा यावन्मात्र प्रमाण करना हो । काल थकी यावत्काल पर्यन्त बैठा रहू तथा मुहूर्त्तादि प्रमाण पर्यन्त । भाव थकी उपयोग सहित । गुण थकी निर्जराके हेत । दुविहं तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भत्ते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

फिर पांच नमोक्कार मन्त्रको पढ़कर इसे पार लेते हैं ॥

सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, वहिया पुग्गल पक्खेवे जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(दशमुं) दशवां (देसावगासिक व्रत) देशावकाशिक व्रत जिसका अर्थ है कि जो प्रथम व्रतोंमें बहुतसे पदार्थ अतीव विस्तारपूर्वक रक्खे हुए है उनको दिन प्रतिदिन संक्षिप्त करते रहना उसीका नाम देशावकाशिक व्रत है जैसेकि—(दिन प्रते प्रभात थकी प्रारंभीने पूर्वादिक छ दिशे जेटली भूमिका मोकली राखी छे) दिन प्रति प्रातःकालसे आरंभ करके पूर्वादि षट् दिशाओंमें यावत् परिमाण गमन करना रक्खा हुआ है (ते उपरान्त) उसके विना (सइच्छायें) स्व इच्छा करके वा (कायायें) काय करके (जइनें) जाकर (पांच आस्रव सेववाना पच्चक्खाण) पांच आस्रव [हिंसा, असत्य, चौर्य्य कर्म, मैथुन, परिग्रह, इनके] आसेवन करनेका प्रत्याख्यान (जाव) यावत् (अहोरत्तं) दिन और रात्रि पर्य्यन्त (दुविह) द्विकरण और (तिविहेणं) तीन योगोंसे जैसेकि—(न करेमि) स्वयं आसेवन न करूं (न कारवेमि) अन्य आत्माओंसे आसेवन न कराऊं (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काया करके (तथा जेटली भूमिका मोकली राखी छे) तथा यावत् भूमिका परिमाण युक्त है (ते मांहीज जे द्रव्यादिकनी मर्यादा कीधी छे) उसमें जो द्रव्यादिका परिमाण किया हुआ है (ते भोगववी) वही ग्रहण करने (ते उपरान्त) उनके विना (उवभोग) जो एक वार आसेवन करनेमें आवे वा (परिभोग) वारम्वार ग्रहण करनेमें आवे (भोग निमित्ते) भोगनेके वास्ते (भोगववाना) भोगनेका—आसेवन करनेका (पच्चक्खाण) प्रत्याख्यान (जाव) यावत् (अहोरत्तं) दिन रात्रि पर्य्यन्त (एगविहं) एक करण और (तिविहेणं) तीन योगोंसे जैसे कि—(न करेमि) न करूं (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवा) ऐसे (दशमा देशावकाशिक व्रतना) दशवें देशावकाशिक व्रतके (पंच) पांच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने

तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवो सद्दहणा परूपणा करीयें ते वारें फरसनायें करो शुद्ध एहवा इग्यारमा पडिपुण्णं पोषध व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सेज्जा संथारए अप्पमज्झिए दुप्पमज्झिए सेज्जा संथारए अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि अप्पमज्झिए दुप्पमज्झिए उच्चार पासवण भूमि पोसहस्स सम्मं अणणुपालणियाय जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(इग्यारसुं) एकादशवां (पडिपुण्णं) प्रतिपूर्ण अष्ट याम पर्य्यन्त (पोषध) पौषध (व्रत) व्रत उसमें (असणं) अन्नादि (पाणं) जलादि (खाइमं) खाद्यम पक्कानादि (साइमं) स्वाद्यम लवंगादि (चार आहारनुं पच्चक्खाण) उक्त चतुर् आहारोंका प्रत्याख्यान (अबंभ सेवननुं पच्चक्खाण) अब्रह्मचर्य आसेवनका प्रत्याख्यान अर्थात् ब्रह्मचर्य धारण करना (अमुक) जो आभूषण सुखपूर्वक उतारे नहीं जाते जैसेकि—कर्णोंके आभूषण सो उनके विना पोषध व्रतमें (मणि) हीरा वा चंद्रकातादि मणि (सुवर्ण) स्वर्णके आभूषण रक्खनेका प्रत्याख्यान तथा (माला) पुष्पमाला (वन्नग) सुगंधयुक्त चूर्णादि और (विलेवणनुं पच्चक्खाण) विलेपन चदन कर्पूर जलादिसे संघर्षण करके मस्तकादिमें लगानेका प्रत्याख्यान, फिर (सत्थ) शस्त्र (मूसलादिक) मूसलादि वा काष्टादि प्रमुख (सावज्ज जोगनुं पच्चक्खाण) सावद्य [पाप] रूप योगोंका प्रत्याख्यान (जाव) यावत् (अहोरत्त) दिन और रात्रि पर्य्यन्त

(पज्जुवासामि) पर्युपासना करता हूं (दुविहं) द्विकरण और (तिविहेणं) तीन योगोसे जैसेकि—(न करेमि) न करूं (न कारवेमि) अन्य आत्माओंसे न कराऊ (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवी) इस प्रकार (सद्दहणा) पौषध व्रत करनेकी श्रद्धा करना और (परूपणा करियें) प्रतिपादन करना (ते वारे फरसनायें करी शुद्ध) जिस समय पौषध व्रत ग्रहण करना तब शुद्धिपूर्वक (एहवा) ऐसे (इग्यारमा) एकादशवा (पडिपुण्ण) प्रतिपूर्ण अष्ट याम पर्यन्त (पौषध व्रतना) पोषध व्रतके (पच) पाच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य तो हैं किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं हैं (तंज्जहा) तद्यथा (ते आलोउ) उनकी आलोचना करता हू (अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सेज्जा संथारए) अप्रतिलेखित वा दुःप्रतिलेखित शय्या संस्तारक अर्थात् जिस स्थानमें पोषध व्रत धारण किया है वहीं शय्या और तृणादिका आसन किया है सस्तारक उनोको प्रथम तो देखा ही नहीं यदि देखा है तो सम्यग् प्रकारसे नहीं इसी प्रकार आगे भी जानना जैसे के—(अप्पमज्जिए दुप्पमज्जिए सेज्जा संथारए) शय्या संस्तारकको अप्रमार्जित किया हो वा दु प्रमार्जित किया हो, प्रथम तो शय्या संस्तारक प्रमार्जित किया ही नहीं यदि किया है तो दुष्ट प्रकारसे इसी प्रकार (अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि) प्रथम तो प्रतिलेखनता नहीं की जैसेकि—उच्चार (पूरीष) विष्टाकी वा (पासवण) [प्रस्रवण] मूत्रकी (वण्ण) मलादिककी भूमि फिर (अप्पमज्जिए दुप्पमज्जिए उच्चार पासवण भूमि) विष्टा और मूत्रकी भूमि प्रमार्जन नहीं की वा दुष्ट प्रकारसे प्रमार्जन की है (पोसहस्स) पोषधको (सम्म) सम्यग् प्रकारसे (अणणुपालणयाय) पालन न किया हो जैसेकि—पोषधोपवासमे भोजनकी चिंता वा अन्य प्रकारसे चिंता करनी (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मैंने दिवस सम्बन्धि अतिचार किया हुआ है (तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) उन अतिचारोका पापरूप फल निष्फल हो ॥

भावार्थ—एकादश पौषधोपवास व्रतमें चतुर् आहारका प्रत्याख्यान करके फिर ब्रह्मचर्यको धारण करे। फिर शरीरके शृंगारका भी परित्याग करे, और शस्त्रादिको भी पास न रक्खे, अष्ट प्रहर पर्य्यन्त द्विकरण तीन योगोंसे सावद्य कर्मका त्याग करके धर्म ध्यानमें समय व्यतीत करे, और पांचों ही अतिचारोंको दूर करके उक्त व्रतको सम्यग् पालन करे॥

अथ द्वादश व्रत विषय॥

बारमुं अतिसिथंविभाग व्रत समणे निग्गंथे फासुयं एसणिज्जेणं असणं, पाणं, खाइमं, साइमेणं, वत्थ, पडिग्गह, कंबल, पायपुच्छणेणं, पाडिहारिय, पोढ, फलग, सेज्जा संथारएणं ओसह भेसज्जेणं पडिलाभेमाणे विहरामि एहवी सद्दहणा परूपणा फरसनायें करी शुद्ध एहवा बारमा अतिथिसंविभाग व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं सचित्त निक्खेवणिया सचित्त पिहणिया कालाइकम्मे परोवएसे मच्छरियाए जो मे देवसि अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

हिंदी पदार्थ—(बारमुं) द्वादशवा (अतिथि) अतिथि अर्थात् न तिथि अतिथि जिसके आनेकी तिथि नियत न हो, उसका ही नाम अतिथि है अर्थात् साधु है (संविभाग व्रत) उसके साथ अपने आहारमेंसे संविभाग करना सोई अतिथि संविभाग व्रत है (समणे निग्गंथे) श्रमण निर्ग्रंथको (फासुय) प्राशूक अचित्त (एसणिज्जेणं) एषणीय उद्गमादि दोषोसे रहित (असणं) अन्न (पाणं) पानी (खाइमं) खाद्यम् पक्वान्नादि (साइमेणं) स्वाद्यम् सुपारी आदि तथा (वत्थं) वस्त्र (पडिग्गहं) पात्र (कंबलं)

कंबल [लोई प्रमुख] (पाय पुच्छणेणं) पादपोंछन अर्थात् पादोंकी रजादिके दूर करनेवाला वस्त्रखंड (पाडिहारिय) जो वस्तु देने योग्य होती है अर्थात् जिसको विहरके साधु फिर दे सक्ता हो, जैसेकि-(पीढ़) चौकी (फलग) फलग [तखूतपोसादि] (सेज्जा) शय्या (सथारए) तृणादिका सस्तारक (ओसह) औषध (भेसज्जेणं) बहुतसी औषाधियोंके संयोगसे जो वस्तु निष्पन्न हुई हे, उसको भैषज कहते हैं. (पडिलाभेमाणे) देता हुआ (विहरामि) विचरता हूं वा विचरूंगा (एहवी सद्दहणा) इस प्रकारसे श्रद्धान वा (परूपणा) उपदेश करना (फरसनायें करी शुद्ध) वा स्पर्श करनेसे जो शुद्ध होता है (एहवा) ऐंसे (बारमा) द्वादशवां (अतिथिसंविभाग) अतिथिसंविभाग (व्रतना) व्रतके (पंच) पाच (अइयारा) अतिचार हे, जो (जाणियव्वा) जानने योग्य तो हैं किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं है (तंज्जहा) तद्यथा (ते आलोऊ) उनकी आलोचना करता हू (सचित्त निक्खेवणिया) न देनेकी बुद्धिसे अचित्त निर्दोष वस्तुको सचित्त वस्तु पर रख दिया हो, जैसे दुग्धको सचित्त जलोपरि रख देना (सचित्त पिहणिया) इसी प्रकार अचित्त निर्दोष वस्तुपर सचित्त वस्तु रख दी हो, जैसे दुग्धोपरि सचित्त जल रख देना (कालाइकम्मे) जिन पदार्थोंका समय अतिक्रम हो गया है मुनियोंको उनके देनेकी विज्ञप्ति की हो, तथा अकालमे जिस समय मुनि भिक्षाको नहीं जा सकते उस कालमें आहारके लिए प्रार्थना करनी (परोवएसे) न देनेकी बुद्धिसे अपनी वस्तु अन्यकी कह दी हो, तथा अपने हाथोंसे दान न देकर अन्यको उपदेश करना कि-स्वामीजीको तू ही अन्न पानी दे दे क्योंकि दान देनेसे ही तात्पर्य है मेरे तेरेसे क्या (मच्छरियाए) मत्सरता [ईर्ष्या] से दान दिया हो, जैसेकि-अमुक पुरुष दानसे प्रसिद्ध हो रहा है, मैं भी वैसा हो जाऊं सो (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मैंने दिनमे अतिचार किए हैं (तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) उनसे पीछे हटता हू, दुष्कृत मेरे अकरणीय है ॥

भावार्थ—द्वादशवें व्रतमें यह अधिकार है, कि-श्रावक साधुको निर्दोष अन्नपानी देवे और जो उन्होंके लेनेयोग्य पदार्थ है, वे भी निर्दोष ही दिलवावें। फिर पांचों ही अतिचारोंको वर्जके उक्त व्रतको शुद्धतापूर्वक धारण करे ॥

फिर संलेखनाका पाठ पठन करे।

अथ संलेखना विषय ॥

अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा आराहणा पोषधशाळा पूंजी पूंजीने उच्चार पासवण भूमिका पडिलेही पडिलेहीनें गमणागमणे पडिक्कमि पडिक्कमिने दर्भादिक संथारो संथरि संथरिने दर्भादिक संथारो दुरूहि दुरूहिने पूर्व तथा उत्तर दिशि पल्यंकादिक आसने बेसी बेसीने करयल संपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजली त्तिकट्टु एवं वयासी नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जावसंपत्ताणं एम अनंता सिद्धजीने नमस्कार करीने जयवंता वर्तमान तीर्थंकरने नमस्कार करीने पोताना धम्माचार्यने नमस्कार करीने साधु प्रमुख चारे तीर्थ खमावीने सर्व जीव राशि खमावीने पूर्वे जे व्रत आदर्यां छे तेना जे अतिचार दोष लाग्या होए ते सर्वने अलोइ पडिक्कमी निंदा निशल्य थईने सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं पच्चक्खामि

सव्वं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं पच्चक्खा-
मि सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि सव्वं कोहं माणं जाव
मिच्छा दंसण सल्लं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि जा-
वजीवाय तिविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि करं-
तंपि नाणुजाणामि मणसा वयसा कायसा एम
अठारे पापस्थानक पच्चक्खीने सव्वं असणं पाणं
खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जाव
जीवाय एम चारे आहार पच्चक्खीने जंपियं इमं
सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणुन्नं मणामं धिज्जं विसासियं
समयं अणुमयं बहुमयं भंड करंड समाणं रयण क-
रंडगभूयं माणं सियं माणं उण्हं माणं खुहा माणं
पिवासा माणं वाला माणं चोरा माणं दंसगा माणं
मसगा माणं वाहियं पित्तियं कप्फियं संभियं सन्नि-
वाहियं विविहा रोगायंका परिसहा उवसग्गा फासा
फुसंत्ति एवं पीयणं चरिमेहिं उस्सास निस्सासेहिं
वोसिरामि त्तिकट्टु एम शरीर वोसिरावीने कालं अ-
णवकंक्खमाणे विहरामि एहवी सद्दहणा परूपणा
करिए तिवारे फरसनायें करी शुद्ध एहवा अपच्छि-
म मारणंतिय संलेहणा झूसणा आराहणाना पंच
अइयारा पयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जः
हा ते आलोउं इह लोगा संसप्पओगे, परलोगा सं-

सप्पओगे, जीविया संसप्पओगे, मरणा संसप्पओगे कामभोगा संसप्पओगे जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(अपच्छिम मारणंतिय) मृत्युके समीप आ जानेपर (संलेहणा) संलेखना करनी चाहिये जोकि (झूसणा) आत्माको कर्मोंसे भिन्न करनेवाली है, (आराहणा) आराधना करके फिर (पोषधशाला) पौषधशाला (पूंजी पूंजीने) प्रमार्जन करके (उच्चार पासवण भूमिका) उच्चार [विष्टा] (पासवण) मूत्रकी भूमि (पडिलेही पडिलेहीने) प्रतिलेखन करके (गमणागमणे) फिर आने जानेसे जो विराधना होती है उससे (पडिक्कमिने) पीछे हटके (दर्भादिक संथारो सथरी संथरीने) दर्भादिका आसन बिछाकर (दर्भादिक सथारो दुरुही दुरुहिने) फिर दर्भादिक संथारोपरि आरूढ होकर (पूर्व तथा उत्तर दिशि) पूर्व तथा उत्तर दिशाओंमे (पल्यंकादिक) पर्य्यंकादिक (आसने बेसीने) आसन पर बैठकर फिर (करयल) दोनों हाथ (सपरिग्गहिय) जोड कर (सिरसावत्तं) शिरसे आवर्त्तन करता हुआ (मत्थए अंजली त्तिकट्टु) मस्तक पर दोनों हाथ जोड़कर फिर ऐसे करके (एव वयासी) ऐसे कहे (नमोत्थुणं) नमस्कार हो (अरिहंताणं) श्री अरिहंतोंको (भगवंताणं) भगवंतोंको (जावसंपत्ताणं) यावत् जो मुक्तिको प्राप्त हुए है (एम अनंता सिद्धजीने) इसी प्रकार अनंत सिद्धोंको (नमस्कार करीने) नमस्कार करके (पछी पोताना) फिर अपने (धर्माचार्यने) धर्माचार्यजीको (नमस्कार करीने) नमस्कार करके [साधु साध्वी श्रावक श्राविका रूप] चार तीर्थे खमावीने (साधु प्रमुख) चारों ही तीर्थोंको क्षमावणा करके (पूर्वे जे व्रत आदरयां छे) पहेले जो व्रत ग्रहण किए हुये हैं (तेना जे अतिचार दोष लाग्या होए) उनमें जो अतिचार रूप दोष लगा हो (ते

सर्व संभारी संभारीने गुर्वादिक पासे) वह सर्व स्मृति करके गुरु आदिके समीप (आलोइ) आलोचन करके (पडिक्कमी) प्रतिक्रमण करके (निंदी) आत्मशाक्षिसे निंदा करके (गरहि) गुरुकी साक्षिसे गर्हना करके (निशल्य थईने) फिर शल्यसे रहित होकर (सव्वं पाणाइवायं) सर्व प्रकारसे प्राणातिपातका (पच्चक्खामि) मै प्रत्याख्यान करता हू (सव्वं मुसावायं) सर्व प्रकारसे मृषावादका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू (सव्व अदिन्नादाण पच्चक्खामि) सर्व प्रकारसे अदत्तादान [चोरी] का प्रत्याख्यान करता हू (सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि) सर्व प्रकारसे मैथुन कर्मका प्रत्याख्यान करता हू (सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि) और सर्व प्रकार परिग्रहका भी प्रत्याख्यान करता हू (सव्वं कोह) सर्व प्रकारसे क्रोध (माण) मान (माया) छल (लोभ) लोभको (जावमिच्छा दंसण सल्लं) यावत् मिथ्या दर्शन शल्य पर्य्यन्त अष्टादश पापोंको छोड़ता हू, तथा (सव्वं अकरणिज्जं) सर्व प्रकारसे अकरणीय कृतोंका (पच्चक्खामि) मै प्रत्याख्यान करता हूं (जावज्जीवाय) यावज्जीव पर्य्यन्त (तिविह) तीन करण और (तिविहेण) तीन योगोंसे जैसेकि-(न करेमि) न करू (न कारवेमि) नाही औरोसे कराऊं (करतंपि नाणुजाणामि) जो अकृत्य कार्य करते है उन्होंकी अनुमोदना भी नहीं करू (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काया करके (एम अठारे पाप स्थानक पच्चक्खीने) इस प्रकार अष्टादश पापस्थानकोंका प्रत्याख्यान करके फिर (सव्व) सर्व प्रकारसे (असण) अन्न (पाणं) जल (खाइमं) मेवादि (साइमं) मुखवास प्रमुख (चउव्विहंपि आहार पच्चक्खामि) इन चारोंही आहारोंका प्रत्याख्यान करता हू (जावज्जीवाय) यावज्जीव पर्य्यन्त। फिर (जंपिय इमं सरीरं) जो प्रिय हे यह प्रत्यक्ष मेरा शरीर (इट्ठ) इष्ट कारी है (कंत्त) कांतियुक्त हे (पीय) प्रीतियुक्त हें (मणुन्न) मनोज्ञ है (मणामं) अत्यन्त मनोज्ञ है (थिज्जं) धैर्य रूप है (विसासियं) विश्वा-

(परलेगा संसप्पओगे) परलोकमें देव वा इन्द्रादि पदवीकी आशा करना अथवा (जीविया ससप्पओगे) जीवितव्यकी आशा रखना कि सलेखनामें मेरी महान् यशकीर्ति होती है इस लिये कोई दिन और भी जीता रहू तो अच्छा हो (मरणा संसप्पओगे) तथा रोगादिकी प्रबलताके कारणसे मृत्युकी इच्छा करना वा (कामभोगा संसप्पओगे) काम भोगकी आशा करना कि मृत्युके पीछे मुझे विशिष्ट कामभोग प्राप्त होगे (जो मे देवसि अइयार कओ) जो मैंने दिवस सम्बन्धि अतिचार किया हुआ है (तस्स मिच्छा मि दुक्कड) उन अतिचार रूप दोषोंसे मै पीछे हटता हू क्योंकि वे दुष्कृत मेरे अकरणीय हैं ॥

भावार्थ—उक्त पाठका यह आशय है कि जब मृत्यु समीप आ जावे तव पौषधशालामें दर्भादिका आसन बिछाकर पूर्व तथा उत्तर दिशाकी ओर मुख करके (नमोत्थुण) के पाठसे सिद्धों वा वर्तमानकालके अरिहंतों को नमस्कार करके फिर सर्व प्राणीमात्रको क्षमावणा करके फिर जो व्रत ग्रहण किए हुए है उनकी आलोचना निंदना करके तीन करण और तीन योगोंसे अष्टादश पापोंका परित्याग करके चतुर्विध आहारका परित्याग करे। फिर जो प्रिय मनोहर यह शरीर है इसकी ममताको त्याग अपितु पाचो ही अतिचारोंको परिहार करके शुद्ध अनशन करे किन्तु श्रद्धान प्रतिपादनताकी शुद्धिके लिये नित्य ही पाठ करना चाहिये किन्तु अन्तिम समयके निकट आनेपर स्पर्शना द्वारा शुद्ध करे।

एम समकितपूर्वक बार व्रत संलेखणा सहित एहने विषय जे कोई अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अणाचार जाणतां अजाणतां मन वचन कायायें करी सेव्यो होय सेवराव्यो होय सेवता प्रत्यें अणुमोद्यो होय ते अनंता सिद्ध केवलीनी साखें मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(एम समकितपूर्वक) इस प्रकार सम्यक्त्वपूर्वक (बार व्रत संलेखणा सहित) द्वादश व्रत और संलेखनायुक्त (एहने विषय) इनके विषय (जे कोई) यदि कोई (अतिक्रम) मनके द्वारा नियम किये हुए पदार्थोंकी इच्छा करनां उसका नाम अतिक्रम है (व्यतिक्रम) जो वचनसे कहा जाए कि मै नियमको भग करूंगा उसका नाम व्यतिक्रम है (अतिचार) जो कायद्वारा वस्तु भोगनेके लिये हाथमें ली जाये, (अणाचार) और भोग ली हो उसका नाम अनाचार है (जाणता) जान करके (अजाणतां) न जानने हुए (मन वचन कायायें करी) मन वचन काय करके (सेव्यो होय) दोषसेवन किए हों (सेवराव्यो होय) अन्य आत्माओंको आसेवन करनेका उपदेश दिया हो (सेवता प्रत्ये अणुमोद्यो होय) जो अतिचारोंको सेवन करते है उन्होंकी अनुमोदना की हो (ते अनंता सिद्ध केवलीनी साखें) उनको अनंत सिद्ध केवलियोंकी साक्षिसे (मिच्छा मि दुक्कडं) उस दुष्कृतसे पीछे हटता हूं ॥

भावार्थ—सम्यक्त्वपूर्वक द्वादश व्रत संलेखनापूर्वक इनके विषय यदि कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जानते हुए, वा न जानते हुए मन वचन काया करके यदि आप सेवन किए हों वा अन्य जीवोंको उपदेश किया हो जो आसेवन करते है उन्होंकी अनुमोदना करी हो तो उस अतिचार रूप दोषसे केवली भगवान् वा सिद्ध भगवानोंकी साक्षिसे मै पीछे हटता हूं ॥

अठारे पापस्थानक—प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४ परपरिवाद १५ रति अरति १६ मायामोसो १७ मिथ्यात्व दर्शनशल्य १८

एवं १८ पापस्थानक मांहेलुं जे कोई पापस्थानक म्हारे जीवें मनें वचनें कायायें करी सेव्युं होय सेवराव्युं होय सेवंता प्रत्ये भलुं जाण्युं होय ते अनंता सिद्ध केवलीनी साखें मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(अठारे पापस्थानक) अष्टादश पापस्थानकोंके भेद निम्न प्रकारसे हैं (प्राणातिपात) जीवहिंसा (मृषावाद) असत्य भाषण करना (अदत्तादान) चौर्य कर्म (मैथुन) अब्रह्मचर्य (परिग्रह) धनादिकी आकांक्षा (क्रोध) रोप करना (मान) अहकार (माया) छल (लोभ) तृष्णाकी वृद्धि (राग) काम रागादि (द्वेष) प्रतिकूलता (कलह) क्लेपभाव (अभ्याख्यान) असत्य दोपारोपण करना (पैशुन्य) चुगली करना (परपरिवाद) अन्य आत्माओंका निंदा करनी (रति अरति) विषय विकारोंकी प्राप्तिमें हर्ष और अप्राप्तिमें शोक करना (मायामोसो) कपटसे मृषावाद बोलना (मिथ्या दर्शन शल्य) मिथ्या दर्शनका शल्य रखना (एव अठारे पापस्थानक) इस प्रकारसे अष्टादश जो पापस्थानकोंके भेद है सो यह (माहेलु जे कोई पापस्थानक महारे जीवे मनें वचने कायाये करी) मेसे कोई भी पापस्थानक मैंने तीन योगोंसे (सेव्या होय) सेवन किये हुए हो (सेवराव्या होय) अन्य जीवोंसे आसेवन करवाये हों, (सेवता प्रत्ये भलु जाण्युं होय) जो आसेवन करते है उन्होंकी अनुमोदना करी हो (ते अनंता सिद्ध केवलीनी साखें) उन दोपोंसे अनत सिद्ध केवलियोंकी साक्षिसे (मिच्छा मि दुक्कड) मै पीछे हटता हू ॥

भावार्थ—अष्टादश पापोंको तीन करण और तीनों योगोंसे परिहार करे जो पूर्वोक्त लिखे गए है। फिर (इच्छामि ठामि) का पाठ पढ़े जो पूर्व लिखा गया है। फिर खडा होकर निम्न प्रकारसे पढ़े ॥

तस्स धम्मस्स केवलि पण्णत्तस्स अब्भुट्ठि

ओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए तिविहेणं पडिक्कंतो वंदामि जिण चउव्वीसं ॥

हिंदी पदार्थ—(तस्स) उस (केवलि) श्री केवली (पण्णत्तस्स) भाषित (धम्मस्स) धर्मके विषय (अभ्भुट्ठिओमि) अभ्युत्थित [खड़ा] होता हूं (आराहणाए) आराधन करनेके वास्ते (विरओमि) निवृत्ति करता हूं (विराहणाए) विराधनासे (तिविहेणं) त्रिविध मन वचन काय करके (पडिक्कंतो) पीछे हटता हूं और (वंदामि जिण चउव्वीसं) मै चौवीस तीर्थंकरोंको वन्दना करता हू ॥

भावार्थ—श्री केवलीभाषित धर्ममें उपस्थित होकर संयममें लगे हुए अतिचारोंसे निवृत्ति करे, और चतुर्विंशति तीर्थंकर देवोंको वंदना करे। फिर (इच्छामि खमासमणो) के पाठसे दो वार गुरुदेवको वन्दना नमस्कार करे और यथाशक्ति पाच पदोको वंदना नमस्कार करे ॥ फिर निम्न लिखित पाठ पढे।

अनंत चौवीसीते नमो, सिद्ध अनंता कोड़। केवल ज्ञानी थे वरसभी, वंदु वे कर जोड़ ॥१॥ दो कोड़ो केवलधरा, विहरमान जिन वीस। सहस्र युगल कोड़ी नमुं, साधु वंदु निसदीस ॥ २ ॥

हिंदी पदार्थ—(अनंत चौवीसीते नमो) अनत चतुर्विंशति तीर्थकरोंको नमस्कार करता हू, (सिद्ध अनंता कोड़) और अनंत कोटि प्रमाण सिद्धोंको भी नमस्कार करता हूं (केवल ज्ञानी थे वरसभी) केवलज्ञानके धारक मुनि वा स्थविर पदवाले जो मुनि है उन सर्वोंको (वंदु वे कर जोड) दोनों हाथ जोड़कर वंदना नमस्कार करता हूं॥ (दो कोड़ी केवलधरा) जघन्य वर्तमानकालमें महाविदेह आदि क्षेत्रोंमें दो कोटि प्रमाण केवल ज्ञानके धारी मुनि और (विहरमान जिन वीस) वर्तमान जघन्य वीस

अरिहंत है अर्थात् जो अतरग विभूति वा बाह्य विभूतिसे विभूषित हैं उनको भी वदना नमस्कार करता हू, किन्तु (सहस युगल कोडी नमु) दो सहस्र प्रमाण जो जघन्य पदवाले (साधु वंदु निसदीस) साधु हैं उनको भी अहोरात्र वदना नमस्कार करता हू ॥

भावार्थ—अरिहंत सिद्ध भगवंतोको वदना नमस्कार करे, फिर सर्व केवली सर्व स्थविर पदधारी मुनियोंको भी वंदना नमस्कार करे, तदनतर जो स्तोकसे स्तोक दो क्रोड़ केवली तथा वीस अरिहंत और दो सहस्र मुनि होते है, उनको भी वंदना नमस्कार करे॥ पुनः जो ८४ लक्ष प्रमाण जीवोंकी योनिया है, उन सर्वोसे निम्नलिखितानुसार क्षमावणा करे—

सप्त लक्ष पृथ्वी काया, सप्त लक्ष अप काया, सप्त लक्ष तेजु काया, सप्त लक्ष वायु काया, दश लक्ष प्रत्येक वनस्पती काया, चतुर्दश लक्ष साधारण वनस्पती काया, दो लक्ष बेंद्रिय, दो लक्ष त्रिइंद्रिय, दो लक्ष चउरिंद्रिय, चतुर्लक्ष देव, चतुर्लक्ष नारकी, चतुर्लक्ष तिर्यंच पंचेंद्रिय, चतुर्दश लक्ष मनुष्य, एवं चौरासी लक्ष जीवा योनिमेंसे यदि मैंने कोई जीव हनन किया हो तथा अन्यको मारनेका उपदेश दिया हो, वा हनन कर्ताओंकी अनुमोदना की हो, वे सर्व मन वचन काया करके *१८२४१२० प्रकारे तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

---

* जीवतत्त्वके ५६३ भेदोंको अभिहयादि दशोंके साथ गुणाकार करनेसे ५६३० भेद होते हैं। फिर इनको राग और द्वेषके साथ द्विगुणाकार करनेसे ११२६० भेद बनते है। फिर इन्हींको मन वचन और कायाके साथ

फिर ऐसे पढ़े—

खामे मि सव्वे जीवा। सव्वे जीवा खमंतु मे॥
मित्ती मे सव्व भूएसु। वेरं मज्झं न केणई॥ १॥
एवमहं आलोइयं। निंदियं गरहियं। दुगंच्छियं सम्मं
तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिण चउव्वीसं॥ २॥

हिंदी पदार्थ—(खामे मि सव्वे जीवा) मै खमावना करता हूं सर्व जीवोंसे और (सव्वे जीवा खमंतु मे) हे सर्व जीवो मेरेपर तुम भी क्षमा करो, क्योंकि (मित्ती मे सव्व भूएसु) मैत्री भाव है मेरा सर्व जीवोंमें (वेरं मज्झं न केणई) वैरभाव मेरा किसी जीवके साथ भी नहीं है॥ (एवमहं) इस प्रकार मैंने (आलोइयं) आलोचना की (निंदियं) आत्मसाक्षिसे निंदा की (गरहियं) गुरु की साक्षिसे विशेष निंदा की (दुगच्छिय) दुगंच्छा की (सम्मं) सम्यक् प्रकारसे (तिविहेणं) तीन योगोंसे (पडिक्कंतो) मै पापसे पीछे हटता हू और (वदामि) वंदना करता हूं (जिण चउव्वीस), चतुर्विंशति तीर्थंकरोंको॥

भावार्थ—सर्व जीवोके साथ क्षमावना करके पापसे सर्वथा ही पीछे हटकर चौवीस तीर्थंकरोको वन्दना नमस्कार करे॥

इस प्रकार सामायिक, चउविसंथा, वंदना, पडिक्कमणा, यह चार आवश्यक पूर्ण हुए। फिर "तिक्खुत्तो" के पाठसे पाचवें आवश्यककी आज्ञा लेकर निम्न प्रकारसे कायोत्सर्ग करे—

गुणाकार करनेसे ३३७८० भेद होते हैं, अपितु इनको ही तीन करणोंके साथ सयोजन करनेसे १०१३४० भेद बन जाते हैं, अपितु इनको भी फिर तीन कालके साथ गुणाकार करनेसे ३०४०२० भेद हो जाते हैं। फिर इनको अर्हन्, सिद्ध, साधु, देव, गुरु, और आत्मा इस प्रकार छै गुणाकार करनेसे १८२४१२० भेद बनते हैं अर्थात् इस प्रकारसे मैं मिच्छा मि दुक्कडं देता हू और फिर पाप कर्म न करनेकी इच्छा करता हू॥

आवस्सहो इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसि ज्ञान दर्शन चरित्ताचरित्त तप अतिचार प्रायच्छित विशोधनार्थ करेमि काउस्सग्गं ॥

हिंदी पदार्थ—(आवस्सही इच्छाकारेण सदिसह भगवन्) हे भगवन्! मेरी इच्छा है, अवश्य करणीय कार्यकी करनेके लिए, आप आज्ञा दीजिए (देवसि) दिन सम्बन्धि (ज्ञान) ज्ञान (दर्शन) सम्यक्त्व (चरित्ताचारित्त) देशवृतिमें (तप) तपमे (अतिचार) अतिचारोंके (प्रायच्छित) प्रायश्चित्तकी (विशोधनार्थे) विशुद्धिके वास्ते (करेमि) करता हू (काउस्सग्गं) कायोत्सर्गको ॥

भावार्थ—फिर अवश्य ही करने योग्य पंचम आवश्यकको भगवान्की आज्ञा लेकर ज्ञान दर्शन चरित्राचारित्रकी विशुद्धिके अर्थे कायोत्सर्ग (ध्यान) करे। फिर 'नवकारका' पाठ 'करोमि भंते सामाइय' का पाठ 'इच्छामि ठामि' का पाठ 'तस्सोत्तरी करणेणं' का पाठ, इनको पूर्ण पढ़कर ध्यान करे। देवसीमें चार और राईसीमें दो लोगस्सका ध्यान करे। पक्षिप्रतिक्रमणमें द्वादश लोगस्सका ध्यान और चतुर्मासी प्रतिक्रमणमें २० लोगस्सका ध्यान तथा सम्वत्सरी प्रतिक्रमणमें ४० लोगस्सका ध्यान करे। यह सप्रदायिक मानना है, अपितु सूत्रमें तपकी चिंत्वना ही कथन की गई है, क्योंकि अतिचारोकी विशुद्धिं तपसे ही होती है। फिर नमोकार पढ़के ध्यान पारे और एक लोगस्सका पाठ पढके दो वार 'इच्छामि खमासमणो' का पाठ पढे। इस प्रकार पाचमा आवश्यक पूर्ण होता है ॥

फिर षष्टम पच्चक्खाण आवश्यक करे। यदि गुरुजी हों तो उन्होंसे प्रत्याख्यान करा लेवे, नहीं तो यथाशक्ति तप आप ही ग्रहण कर लेवे ॥

॥ अथ षष्टम प्रत्याख्यान आवश्यक पाठ ॥

मुहूर्तके प्रत्याख्यानका मूल सूत्र ।

उग्गयसूरे नमुक्कार सहियं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे एक मुहूर्त प्रमाण (नमुक्कार सहियं) नमस्कार सहित अर्थात् नमोक्कारके विना पढ़े पारना नहीं करना इस प्रकारसे (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं (चउव्विहंपि आहारं) चतुर्विधके आहारका, जैसेकि—(असणं) अन्नकी जाति (पाणं) पानीकी जाति (खाइमं) फलादिकी जाति (साइमं) चूर्णादिकी जाति, किन्तु निम्नलिखित आगार है जैसेकि—(अन्नत्थणा भोगेणं) यदि विना उपयोग वस्तु खाई जाए अर्थात् भक्षण करते समय प्रत्याख्यानकी स्मृति न रहे तो तथा (सहसागारेणं) अकस्मात् कोई वस्तु मुखमें जा पड़े जैसे दधिको मथन करते हुए तक्र [छाछ] की बिंदु मुखमें जा पडती है, सो इन दोनो आगारोंसे चार प्रकारके आहारको (वोसिरामि) छोड़ता हूं क्योंकि इन आगारोंसे प्रत्याख्यान भंग नहीं होता ॥

भावार्थ—उक्त पाठ मुहूर्त मात्रके प्रत्याख्यान करनेका है। यदि स्वयमेव प्रत्याख्यान करना हो तव "पच्चक्खामि" और "वोसिरामि" ऐसे शब्द कहने चाहियें, यदि गुरु करवावे तव वे "पच्चक्खाइ" और "वोसिरइ" ऐसे कहे। इस प्रत्याख्यानमे दो आगार होते हैं जैसे कि (अन्नत्थणा भोगणं) विना उपयोग (सहसागारेण) और अकस्मात्, इन आगारोंसे प्रत्याख्यान भंग नही होता है। इसी प्रकार सर्व प्रत्याख्यानोंमे जानना चाहिये, और चतुर्विधके आहारका सर्वथा ही इस नियममें प्रत्याख्यान है ॥

भोगेणं) (सहसागारेणं) (पच्छन्न कालेणं) (दिसामोहेणं) (सव्व समाहि वत्ति आगारेण) ये पांच आगार होते हैं ॥

अथ तृतीय पुरिमड्ढ (दो याम)का प्रत्याख्यान ॥

उग्गयसूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्न कालेणं दिसामोहेणं§ सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि) सूर्यके उदय होने पर दो प्रहरका प्रत्याख्यान करता हूं (चउव्विहंपि आहार) चतुर्विधके आहारका जैसेकि (असणं पाणं खाइम साइम) अन्नपानीकी जाति खादिमकी जाति सादिमकी जाति (अन्नत्थणा भोगेणं) विना उपयोग भक्षण की जावे (सहसागारेणं) अकस्मात् ग्रहण की जावे (पच्छन्न कालेणं) सूर्यके प्रच्छन्न होनेपर (दिसामोहेण) दिग्मूढ होनेपर–दिशा भूलनेपर (सव्व समाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधि होनेपर (वोसिरामि) उक्त आगारों संयुक्त मैं चतुर्विधके आहारको छोड़ता हू ॥

भावार्थ—पुरिमड्ढके प्रत्याख्यानमें चतुर्विधिके आहारके अन्यतर अन्नत्थणा भोगेणं, सहस्सागारेणं, पच्छन्न कालेण, दिसामोहेणं, सव्व समाहि वत्ति यागारेण, यह आगार होते हैं ॥

अथ विगइ निविगइके प्रत्याख्यानका पाठ ॥

विगइओ निविगइओ पच्चक्खामि अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं* सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥

---

§ साहुवयणेणं । महत्तरागारेणं ॥

* लेवालेवेणवा । गिहत्थ संसट्ठेण । उक्खित्त विवेगेणं । पडुच्च मक्खिएण । परिठावणियागारेण । महत्तरागारेण ।

हिंदी पदार्थ—(विगइओ निविगइओ) विगय जो आत्माको विकृतिभाव करनेवाले हैं जैसेकि—दुग्ध, दधि, घृत, नवनीत, गुड़, तैल इत्यादिके प्रत्याख्यानको निविगइ कहते हैं सो निविगइका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं तथा वर्तमान कालमें उक्त प्रत्याख्यानका निर्वाह छाछद्वारा किया जाता है। छाछमें रोटी डालकर आसेवन करनेकी प्रथा वर्त्तमान कालमें है। सो उक्त प्रत्याख्यानमें आगारोंकी सख्या लिखते है—यथा (सव्व समाहि वत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधिके होनेपर (वोसिरामि) इस प्रकारसे विगयको छोडता हू ॥

भावार्थ—विगयके प्रत्याख्यानमें पूर्वोक्त तीन आगार होते है ॥

अथ विगयका एकासनयुक्त प्रत्याख्यानका पाठ ॥

उग्गयसूरे निविगइ एकासणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं§ सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे निविगइ पच्चक्खामि) सूर्य उदयसे निविगइका प्रत्याख्यान करता हू, फिर (एकासण) एक आसनपर अन्नादि भक्षण करनेका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं। पुनः (तिविहपि) त्रिविधके (आहारं) आहारका भी प्रत्याख्यान करता हू जैसेकि—(असण) अन्नकी जाति (खाइमं) खादिमकी जाति (साइमं) सादिमकी जाति (अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग (सहसागारेण) अकस्मात् (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधि होनेपर (वोसिरामि) तीन आहारका प्रत्याख्यान करता हू ॥

भावार्थ—एकासनयुक्त तीन आहारका निविगइमें प्रत्याख्यान करे,

---

§ लेवालेवेणवा, गिहत्थ ससट्ठेण, उक्खित्त विवेगेण, पडुच्च मक्खिएण, परिठावणियागारेण, महत्तरागारेण ॥

किन्तु पानी प्राशुक ही आसेवन करे । आगार सर्व प्राग्वत् ही हैं, इसमें विशेष विगयोंका ही प्रत्याख्यान है किन्तु वर्त्तमान कालमें तक्रके साथ इस नियमको पाला जाता है । स्कंधविगय, धारविगयके प्रत्याख्यानका विवेक होना चाहिये ॥

अथ एकासन द्विआसन करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे एगासणं बियासणं पच्चक्खामि दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं[1] आउट्टण पसारेणं गुरु अब्भुठाणेणं [2]सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (एगासणं) एकासन वा (बियासणं) दो आसन, एक वार भोजन करनेको एकासन और द्विवार भोजन करनेको दो आसन कहते है, उनके उपरान्त (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं । (दुविहं) यदि पानी और स्वादिम ग्रहण करने होवें तो अशन और खादिमका प्रत्याख्यान करे, यदि एकासनके पीछे केवल प्राशुक पानी ही ग्रहण करना होवे तो (तिविहंपि) तीन प्रकारके आहारका प्रत्याख्यान करे जैसेकि—(असण) अन्नकी जाति (खाइम) खादिमकी जाति (साइमं) स्वादिमकी जाति, किन्तु निम्नलिखित आगारानुकूल जैसेकि—(अन्नत्थणा भोगेणं) विना उपयोग (सहस्सागारेण) अकस्मात् (आउट्टण पसारेणं) शरीरके संकोचन [सुकेड़ने] और पसारनेपर क्योंकि यदि एकासनमें अंगोपांग संकोचन और पसारन किये जाए तो प्रत्याख्यान भंग न होगा (गुरु अब्भुट्ठाणेण) गुरुके आनेपर यदि विनयके वास्ते उठना पड़े (सव्व समाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधिके रहने पर (वोसिरामि) उक्त आगारोंयुक्त तीन आहारको छोडता हूं ॥

---

१ सागारियागारेण । २ परिठावणियागारेणं, महत्तरागारेण ॥

भावार्थ—एकासन वा द्विआसनमें द्विविध वा त्रिविधके आहारका प्रत्याख्यान करे किन्तु ऊपर कहे आगारोंके सयुक्त प्रत्याख्यान करे ।

अथ एकलठाण करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे एगलठाणं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं[1] गुरु अब्भुट्ठाणेणं[2] सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (एगलठाण) एक स्थानके विना अन्य स्थानपर गमन करके आहार करनेका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं, तथा प्रत्याख्यान करता हू (चउव्विहंपि) चतुर्विधिके आहारका जेसेकि–(असण) अन्नकी जातिका (पाण) पानीकी जातिका (खाइमं) खादिमकी जातिका (साइमं) स्वादिमकी जातिका, किन्तु (अन्नत्थणा भोगेणं) इतना विशेष हे कि–विना उपयोग आहारादि आसेवन किया जाये (सहसागारेण) अकस्मात् (गुरु अब्भुठाणेण) गुरुकी विनयके लिए खडा होनेपर (सव्व समाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधिके रहनेपर (वोसिरामि) चारों आहारोंको छोडता हूं ॥

भावार्थ—एकलस्थानका प्रत्याख्यान एकासनके तुल्य ही है, किन्तु विशेष इतना ही है कि–एकासनमें अंगोपागके संकोचन पसारनका त्याग नही हे, एकलस्थानमें अगोपागके सकोचने ओर पसारनेका परित्याग होता है ।

अथ आंबिल करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे आंबिल पच्चक्खामि तिविहंपि आ-

१ सागारियागारेण । २ परिठावणियागारेण, महत्तरागारेणं ॥

हारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सह-सागारेणं* सव्व समाहिवत्ति आगारेणं पाणस्स ले-वेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवेण वा ससित्थे-ण वा असित्थेण वा वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (आंबिलं) आंबिल ग्रहण करता हूं और (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू (तिविहंपि) त्रिविधिके (आहारं) आहारका जैसेकि—(असणं) अन्नकी जातिका (खाइमं) खादिमकी जातिका (साइमं) स्वादिमकी जातिका (अन्नत्थणा भोगेणं) अपितु विना उपयोग ग्रहण की जाए (सहसागारेणं) अक-स्मात् वस्तु ग्रहण की जाए (सव्व समाहिवत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधिके होनेपर (पाणस्स) पानीकी अपेक्षा इतने प्रकारके जलके भिन्न अन्य पानीका नियम जैसेकि—(लेवेण) लेपयुक्त पानी जैसे खर्जूरादिका (वा) अथवा (अलेवण) अलेप जल जैसे धोवनका पानी (वा) अथवा (अच्छेण) शुद्ध निर्मल उष्ण पानी (वा) अथवा (वहुलेवेण) वहु लेप युक्त जैसे तण्डुलोंका [चावलों]का धोवन (वा) अथवा (सत्तित्थेण) सीत्थयुक्त [कणसहित] जैसे चूनका धोवन (असित्थेण वा) सीथ रहित जल जैसे प्राशुक जल इनके विना अन्य प्रकारके जलोंको (वोसिरामि) छोड़ता हू ॥

भावार्थ—आंबिल उसको कहते है जो विगयादिसे रहित केवल प्राशुक जलके साथ ही रोटिया ग्रहण की जावे उसका ही नाम आंबिल है, किन्तु आगार पूर्ववत् ही है। केवल पानी षट्प्रकारसे वर्णन किया गया है जैसेकि—लेपयुक्त १ अलेपयुक्त २ शुद्ध उष्ण पानी ३ वहु लेपयुक्त ४ सीथयुक्त ५ असीथयुक्त ६, इनके विना अन्य जलका परित्याग करे ॥

* लेवालेवेणं, गिहत्थ संसट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, परिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं ॥

अथ चउविहाहार उपवासका पाठ ॥

उग्गयसूरे अब्भत्तठं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं[1] सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥ ८ ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (अब्भतठ) अभक्तार्थे अर्थात् अन्नपानीको ग्रहण न करनेके वास्ते (चउव्विहंपि आहारं) चार प्रकारके आहारका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं जैसेकि—(असण) अन्नकी जाति (पाणं) पानीकी जाति (खाइमं) खादिमकी जाति किन्तु (अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग आहार ग्रहण किया जाये (सहसा-गारेण) अकस्मात् ग्रहण किया जाए (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधि होनेपर (वोसिरामि) चार प्रकारके आहारको त्यागता हू ॥

भावार्थ—चतुर्विधके आहारके प्रत्याख्यानमें पूर्वोक्त आगार रक्खे जाते है इसको चउव्विहार व्रत भी कहते है ॥

अथ तिविहाहार उपवास करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे अब्भत्तठं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं[1] सव्व समाहिवत्ति आगारेणं पाणाहार पोरिसिं पच्चक्खामि अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं

---

१ पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण.

हिंदी पदार्थ—(सचित्त) पृथ्वी आदि सचित्त वस्तुका प्रमाण (दव्व) द्रव्यांका प्रमाग जैसे अंगुली विना जो मुखमे डाला जाय वह सर्व द्रव्य है यथा दुग्ध १ खाड २ इत्यादि (विगई) विगय प्रमाण जैसे दुग्ध १ घृत २ तेल ३ नवनीत ४ गुड ५ दधि ६ मधु ७ इत्यादि, (पण्ही) जुत्यादिका प्रमाग (तबोल) ताम्बुलादिका प्रमाण (वत्थं) वस्त्रोंका प्रमाण (कुसुमेसु) पुष्पोंका प्रमाण (वाहग) सवारी आदिका प्रमाण यथा घोडादि (सयण) शय्यादिका प्रमाण (विलेवण) विलेपनका प्रमाण जैसे नेत्राञ्जनादि (बभं) ब्रह्मचर्यका धारण करना अब्रह्मचर्य्यका त्याग करना (दिसी) दिशाओंका प्रमाग (न्हाण) स्नानका प्रमाण यथा एक वार द्विवार इत्यादि (भत्तेसु) सर्व वस्तुके वजनका प्रमाण अर्थात् विना प्रमाण न ग्रहण करे ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें यह वर्णन है कि गृहस्थी नित्यम् प्रति यथाशक्ति तृष्णाका निरोध करता हुआ विना प्रमाग कोई भी वस्तु ग्रहण न करे ॥

प्रतिक्रमणका मुख्य आशय ॥

प्रियवरो! आवश्यकका आशय यह है कि सर्व प्राणियोंसे मैत्रीभाव धारण करना और निज आत्माको सम्यक् ज्ञान सम्यक् दर्शन सम्यक् चरित्रमें आरूढ़ करना। पुनः निज स्वरूपको अनुप्रेक्षण करके तृष्णाको निरोध करना, आत्माको सदैव काल सदाचारमें लगाना और अपने पूर्वकृत पापोका पश्चात्ताप करते रहना किन्तु नूतन पापोंसे अपनी आत्माको बचाना। फिर ऐसे प्रार्थना करना कि हे सर्वज्ञ देव मै आपके सत्योपदेशके प्रभावसे सर्व जीवोंका हितैषी बनता हूं निज आत्माको अपने स्वरूप मैं लाता हूं। हे अजर! आपके कथन किए हुए सत्य पदार्थोंको यथावत् ज्ञात करके भव्य जीवोंको सन्मार्गमें स्थापन करूं। इत्यादि अनुप्रेक्षा करके सर्व प्राणियों पर परोपकार करना यही आवश्यकका मुख्य आशय है ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥